अहमक-उल-हिन्द
उर्फ
भारतीय मूर्ख-शिरोमणि 1975

●

सर्वोदय का पन्थ, विनोबा से सन्त,

मठो के महन्त,

आदर अनन्त,

सादा परिधान शुद्ध-घृत पान,

मेवों का खान, सरकारी अनुदान,

गरीब की गुहार, मिनिस्टर की मनुहार,

अखबारी प्रचार, भूल का सुधार,

माया थी अपार,

सभी को छोड़ बोले—मिटाना है भ्रष्टाचार !

उद्घाटन, भाषण और चाटन....

के इस देश मे, अवसर नही मिलने पर सभी हैं, ईमानदार,

पकड़ मे आ जाये तो, कह दो—है भ्रष्टाचार !

कहा है भ्रष्टाचार ?

केवल समाज का, सामान्य सा शिष्टाचार !

मूर्ख है वे सभी, समझे न जो अभी,

भ्रष्टता का नया भाप.. .!

अहमक-उल-हिन्द उर्फ,

मूर्खों के शिरोमणि,

मूर्खलोक के नायक—'जयप्रकाश' !

गुदगुदी 1975

पंचम महामूर्ख सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

प्रेमचन्द्र गोस्वामी
द्वारा सम्पादित

सयोजक
शरद मोदी

सम्पादक की बक-बक

होली के रंग और रंगो के हुडदंग के बीच यदि हम अपनी आँखो के सामने नाच रहे बहुरंग सायो के पार देखने की कोशिश करेंगे तो हमे महामूर्खो की एक बदरंग भीड़ नजर आएगी। फागुनी मौसम के अवसर पर यहा-वहा सब जगह महामूर्खो का जमघट लगा हुआ है। कही भग का दौर चल रहा है तो कही उमंग का, कही चंग बज रहे हैं तो कही तरंग के साथ गीत सज रहे हैं। आइये! हँसी-खुशी के इस खूबसूरत मौके पर थोड़ी बहुत कलम की चुहल भी हो जाए, ताकि महामूर्खो की टोलियो को दिमागी मनोरंजन का भी थोडा मौका मिल सके। पंचम महामूर्ख सम्मेलन के अवसर पर हमने आप सबके लिए कुछ चुनीदा हास्य-व्यंग्य रचनाओं का थाल 'गुदगुदी' के रूप मे एक बार फिर सजा दिया है और लेखक-बंधु नाराज न हो इसलिए सारे शहर मे बिगुल बजा दिया है—'मूर्खता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है! मूर्खता पायन्दाबाद!'
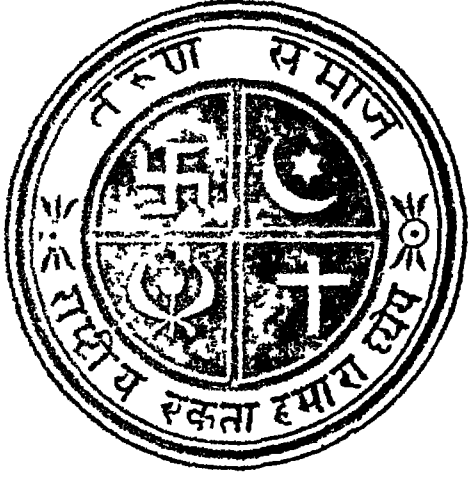
पंचम
हास्य—व्यंग्य
एवं
महामूर्ख सम्मेलन
1975

संरक्षक	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक
कर्पूरचन्द्र कुलिश	विश्वम्भर मोदी	रामनाथ सिंघल	महावीर सांघी	शरत मोदी

परामर्श समिति

सर्व श्री मन्नालाल सुराणा, उमरावमल चोरडिया, भगवानलाल मोदी, जगन्नाथ जाजू, मुन्नालाल गोयल, किशन रूंगटा, लाभचन्द्र लोढा, सतीशचन्द्र अग्रवाल, मगल विहारी, रघुनाथदास सोमानी, कुशलचन्द सुराणा. हरिदत्त गुप्ता, डॉ. के सी कोटिया, ताराचन्द साहू, एम टी वग, जे एन शर्मा, भुन्नीलाल जसोरिया, मोतीचन्द डागा, वी. वी. मित्तल, अजीमबचन 'कोकूमिया', कोमलचन्द पाटनी, रामदास सौंखिया, श्रीमती ज्योतिप्रान सोनी

संयोजन समिति

सर्व श्री वल्लभ चिनलागिया, नरेन्द्र रस्तोगी, ज्ञानचन्द पाटनी, भँवरसिंह बारेठ, सीताराम पाण्डेय, वक्रिमचन्द्र, चान्दमल जैन, अमरजीतसिंह, चिरजीत बग्गा, सम्पतलाल समाणी, उमरावमल, प्रभुदयाल माथुर, रमेश बाजरगान, के जी. गुप्ता, सत्यकृष्ण शर्मा, वेदप्रकाश मित्तल, नवीन डागी, कैलाशचन्द्र पाटनी, उपकारसिंह, राजेन्द्रनाथ मित्तल, पी. डी दुनाद, राजेन्द्र जसोरिया, अम्बरीष कुमार, सुरेश मोदी, एन. एम. ताली, उमरदान परमात्मादयाल माथुर, रमेशचन्द्र मीणा, एल सी. गुप्ता, डॉ. [illegible], डॉ. विमल शर्मा, राजेन्द्र गोधा

स्मारिका सम्पादन
प्रेमचन्द्र गोस्वामी

स्मारिका मुद्रण व्यवस्था : भगवानदास जसोरिया द्वारा मॉडर्न प्रिण्टर्स, जयपुर में।

संयोजक की चक-चक

महामूर्ख सम्मेलन मे आये हुए सभी मूर्खों को मेरा . .. नही .. नही यह शब्द मैं नही लिखूंगा, वैसे होता यह है कि मैं तो इस कार्यक्रम के लिए पूरे वर्ष भर मूर्ख बना रहता हू, लेकिन आप सभी लोग समय आने पर आगे बढ कर आ जाते है। स्थिति यह है कि जयपुर की इस सास्कृतिक और सामाजिक गतिविधियो को आगे बढाने तथा बहुरगी रूप देने मे हम लोग (तरुण समाज के सभी कार्यकर्ता) कुछ भी कसर नही उठा रखते है । लेकिन इसके बावजूद भी कुछ ऐसे लोगो की कमी नही है जो साधन-सम्पन्न होने के बावजूद भी सिर्फ ऐसे ही कार्यक्रमो मे मदद देते हैं जिन्हे उन्हे प्रकारान्तर से कोई फायदा हो । भाई, ऐसे जन-रजन के कार्यक्रम मे हम कहा किसी को 'ऑब्लाइज' कर सकते हैं ? लेकिन हमारी मान्यता है कि ऐसे लोग मात्र यही धारणा लेकर चलते हैं तो आने वाले समय मे उनका क्या हश्र हो सकता है, वे स्वय ही सोच ले ।

ऐसा जन-रजन का नि शुल्क कार्यक्रम क्या कभी राजस्थान मे हुआ है और नही हुआ तो ऐसा कार्यक्रम क्या स्वयसेवी और कर्मयोगी कार्यकर्त्ताओ के बिना सम्भव हो सकता है—सीधा सा उत्तर है 'नही' । लेकिन हमे गौरव है कि जयपुर की जनता और कुछ सरल हृदयी लोग जो यह मान कर चलते है कि ऐसे कार्यक्रमो को चलना ही चाहिये और स्वत आगे बढ कर अपना सहयोग देते है उससे हमारा मनो-बल ऊँचा उठता है और नि सदेह वे बधाई के पात्र हैं ।

मैं इस अवसर पर राज्य के कर्मठ मुख्यमत्री माननीय हरिदेव जोशी का विशेष आभार प्रदर्शित करूंगा जो राज्य की सामाजिक और सास्कृतिक चेतना मे विशेष रुचि लेते है और इसी दृष्टिकोण मे उन्होने इस जन-रजन के कार्यक्रम मे अपनी व्यक्तिगत रुचि ली है तथा इसे आगे बढाने मे नि सकोच सहायता दी है ।

इसी सदर्भ मे, परामर्श समिति के आदरणीय सदस्य सर्वश्री सम्पतराज सुराणा, उमरावमल चोरडिया, लाभचद सोढा, ताराचद माल, मन्नालाल [illegible] मगल बिहारी, हरिदत्त गुप्ता, डॉ के सी कोटिया एव सतीशचन्द्र [illegible] का अनुग्रहीत हू जिन्होने स्वय आगे बढ कर इस जन-सम्मेलन को आगे बढाने मे सक्रिय सहयोग दिया । ये लोग नि सन्देह प्रशसा के पात्र है जो सदा सम इस नगर की सास्कृतिक व सामाजिक गतिविधियो मे सहयोग देते है ।

मैं संयोजन समिति का अनुग्रहीत हूँ जिसने इस सम्मेलन के भार को कम करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया—विशेषकर भाई विश्वम्भर मोदी, रामनाथ सिंघल, महावीर सांघी, वल्लभ चितलांगिया और नवीन डागी जिन्होंने अपने व्यवसाय तथा अन्य कार्यों को छोड़कर इसे सफल बनाया। इसके अतिरिक्त मैं रामशरण अन्त्यानुप्रासी का आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्यक्रम मे रुचि लेते हुए मुझे निरन्तर सहयोग दिया।

अन्त मे, मैं सलाहकार समिति व सयोजन समिति के सभी माननीय सदस्यों का अभिवादन करता हूँ जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान करने मे कोई कसर नही छोडी, लेकिन इन सबके साथ ही इस सम्मेलन के स्तम्भ और प्रेरक आदरणीय भाईसाहब कर्पूरचन्द्र 'कुलिश' का मैं विशेष अनुग्रहीत हूँ जिन्होंने मेरा मनोबल हमेशा ऊंचा उठाये रखा। इस सम्मेलन ने आज जो भी रूप लिया, वह सब इन्ही की प्रेरणा तथा आशीर्वाद का परिणाम है। तरुण समाज भाईसाहब कुलिश जी को अपने बीच मे पाकर गौरवान्वित अनुभव करता है।

धन्यवाद।

शरत मोदी
सयोजक

स्वागताध्यक्ष की छक-छक

माननीय महामूर्खाध्यक्ष महोदय, आदरणीय मूर्खानन्दजी एव उपस्थित मूर्ख सागर के अमूल्य मोतियों और सीपियो !

मै अपनी ओर से तथा तरुण समाज की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ। यह हमारा सौभाग्य है कि बडे-बडे बज्रमूर्ख आज अपनी स्वाभाविक स्थिति का परिचय देने यहां आये हुए है। बच्चो से लेकर बूढे तक "वसुधैव कुटुम्बकम्" प्रेरणा के वशीभूत मूर्खता प्रदर्शित करने यहा एकत्रित हुए है।

मूर्खता अपने-आप मे एक गुण है जो प्रत्येक व्यक्ति मे विद्यमान है। मानव जाति को अपने इस गुण पर गर्व है क्योकि प्रत्येक व्यक्ति जाने-अनजाने मूर्खता प्रदर्शित करता रहता है।

मानव-जीवन तो कुण्ठा, सत्रास से भरा है, फिर क्यो उसने ज्ञान की पिपासा, आविष्कारो की जिज्ञासा, ज्ञानवृद्धि के चक्कर मे सदा ठोकर खाई है। प्रकृति का रहस्योद्घाटन करते-करते हम परेशान हो गये है।

मूर्खता का प्रदर्शन, राजनीति, साहित्य आदि सभी क्षेत्रो मे व्यापक रूप से हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भीषण रक्त-रजित लडाइया मूर्खता की ही श्रेणी मे आती है। राजनीति मे दल-बदलाव, कुर्सी-मोह भी मूर्खता के सहोदर भाई है। साहित्य और कविता के क्षेत्र मे मूर्खता के उदाहरण अनगिनत है। कवि कालिदास मूर्खता की सीढी पर चरण रख कर ही ऊँचाइयो पर पहुंचे थे।

तो आइये, ऐसे समय मे हम सब बुद्धि-चातुर्य से तलाक ले और अपनी एकता का परिचय देकर एक साथ बोले—

"दुनिया के मूर्खो—एक हो"

"मूर्खता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"

"महामूर्ख सम्मेलन—जिन्दाबाद"

विश्वम्भ

स्वागत

स्वागत-मंत्री की झक-झक

तरुण समाज द्वारा आयोजित इस पचम हास्य-व्यग्य एव महामूर्ख सम्मेलन के अवसर पर हम आप सभी महानुभावो का स्वागत करते है। तरुण समाज निरन्तर इस प्रयास मे रहता है कि जयपुर मे सांस्कृतिक व सामाजिक चेतना लाते हुए स्वस्थ परम्पराए कायम हो और हमे इस बात का गर्व है कि हम अपने कार्यो मे सक्षम रहे है। सम्पूर्ण राजस्थान मे शायद इतना बड़ा सम्मेलन कही नही होता है। इस सम्मेलन के अतिरिक्त हम हर वर्ष 'शरदोत्सव' कार्यक्रम भी आयोजित करते है और उसने भी वार्षिक कार्यक्रम का रूप ले लिया है।

इसके अतिरिक्त गत वर्ष हमने विश्व स्वास्थ्य दिवस के दिन 'स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता' प्रारम्भ की जिसमे अच्छी संख्या मे लोगों ने अपने शिशुओं को लाकर भाग लिया तथा इस आयोजन की मुक्तकंठ से सराहना की।

हमारा यह निरन्तर प्रयास रहा है कि हम स्वस्थ परम्पराएँ कायम करते रहे। इसके लिए शहर के गणमान्य नागरिक हमे जो सहयोग दे रहे है, उनके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

अन्त मे, मैं तरुण समाज की ओर से आपका पुन अभिनन्दन करते हुए आशा करता हूँ कि आप इस कार्यक्रम मे अपनी रुचि बनाये रखेंगे और इसे सफलता की ओर अग्रसर करते रहेंगे।

धन्यवाद।

रामनाथ सिंघल
स्वागत मन्त्री

पंचम महामूर्ख सम्मेलन 1975 के अवसर पर पारित कुछ प्रस्ताव

मूर्खता के अपने जन्मसिद्ध अधिकारो की रक्षा करते हुए महामूर्ख सम्मेलन अपने पञ्चम-पर्व पर बिना किसी की अनुमति और सर्व-अहसमति के असाधारण माहौल मे निम्न प्रस्ताव पारित करता है --

* व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और समान अधिकारो के परिप्रेक्ष्य मे हमारी यह दृढ मान्यता है कि भारत वसुन्धरा को समाविष्ट कर एक विश्व सरकार की स्थापना परम आवश्यक ही नही, अपितु अनिवार्य समझी जाने लगी है जिसमे केवल मूर्खो का ही प्रतिनिधित्व हो और विश्वपति के पद पर अहमक-उल-हिन्द उर्फ भारतीय मूर्ख-शिरोमणि वर्ष 1975 के लिए पदासीन किये जाये ।

* देश की केन्द्रीय सरकार ने अहमक-उल-अमीन मूर्ख श्री मोहन धारिया को मन्त्रिमडल से हटा कर हमारे अधिकारो पर भारी कुठाराघात किया है, अत हम एक आवाज से माग करते है कि हमारे प्रतिनिधि धारिया को पूरा मत्री बनाकर मन्त्रिमण्डल मे रखा जाये ।

* राजस्थान विधानसभा मे पिछले 1095 दिनो से हमारा प्रतिनिधित्व केवल अध्यक्ष पद पर आसीन कर हमे सन्तोष रखने का जो आश्वासन दिया जा रहा है, वह अब हमारे धीरज के बाध को तोड चुका है, अत कम से कम केबीनेट स्तर का एक मत्री राजस्थान मन्त्रिमण्डल मे रखा जाये--यह हमारी पुरजोर माग है ।

* राजस्थान सरकार के इस निर्णय का हम घोर विरोध करते है कि हमारे सहयोगी-सदस्य मतिमन्द भूषण मोहन छगाणी को राज्य मन्त्रिमण्डल मे हमारा पूर्ण प्रतिनिधि माना जा रहा है, वे केवल फैलो-ट्रेवलर है । अत हमारा प्रतिनिधि तो हम मूर्खो से अनुमति प्राप्त कर रखा जाये ।

इस प्रस्ताव के द्वारा हम अपनी उन मागो को पुन दोह[illegible]
जिनकी ओर अभी तक ध्यान नही दिया गया है--

* प्रतिवर्ष बजट प्रस्तावो में समाज के अत्यन्त महत्वपूर्ण मूर्ख वग को सदा उपेक्षित कर दिया जाता है। अगले बजट में अक्लमदी पर भारी कर लगाया जावे ताकि मूर्ख वर्ग उभर कर सामने आ सके।

* यह सम्मेलन इस बात की सिफारिश करता है कि देश के प्रमुख महामूर्खों को सरकारी स्तर पर गणतंत्र दिवस एव स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर मूर्ख रत्न, मूर्ख शिरोमणि, मूर्ख श्री आदि की उपाधियों से सम्मानित किया जाना चाहिए, ताकि मूर्खता को देश भर में प्रोत्साहन मिल सके।

* लोकसभा, राज्यसभा और विधानमण्डलों मे मूर्खों के सही प्रतिनिधित्व के लिए उनकी 990 सीट सुरक्षित किये जाने की घोषणा की जाए।

* मूर्खता के प्रचार-प्रसार के लिए उसका कलात्मक एव सांस्कृतिक पक्ष उजागर किया जाए। इसके लिए नेताओ, नक्कालो एव सास्कृतिक अधिकारियो के हाथ मजबूत किये जाएँ।

* देशभर के पागलखानों को जितना शीघ्र हो सके, विश्वविद्यालयों में बदल दिया जाए ताकि मूर्खताओं के केन्द्रो में वृद्धि हो सके।

* समाजवाद की वास्तविक स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि सभी प्रकार की मूर्खताओ का राष्ट्रीयकरण किया जाए। यह सम्मेलन इसकी पुरजोर शब्दों में सिफारिश करता है।

* और अन्त मे, हम यह सकल्प करते है कि विश्वभर में मूर्खवाद का युद्धस्तर पर प्रचार किया जाएगा और यथासम्भव मूर्खों को एक-जुट करने की चेष्टा की जाएगी।

●

महामूर्ख सम्मेलन कार्यकारिणी

सरक्षक

कर्पूरचन्द्र कुलिश

स्वागताध्यक्ष
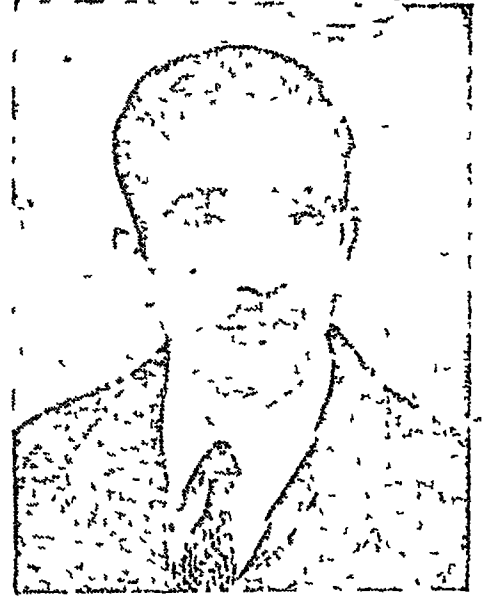
विश्वम्भर मोदी

सयोजक

शरत मोदी

स्वागत मत्री

रामनाथ सिंघल

कोषाध्यक्ष

महावीर साघी
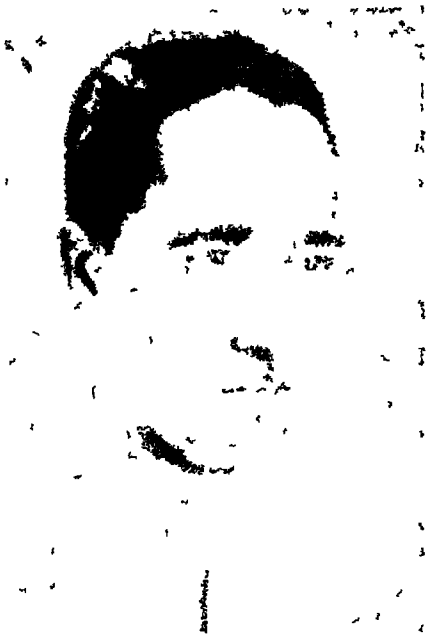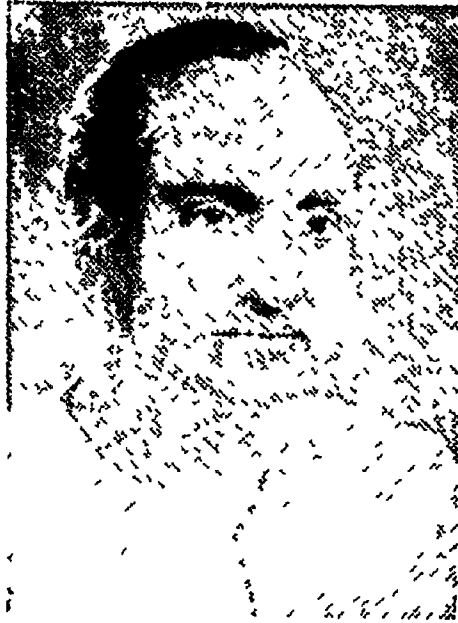
सम्मेलन के प्रणेता

डा० के० सी० कोटिया
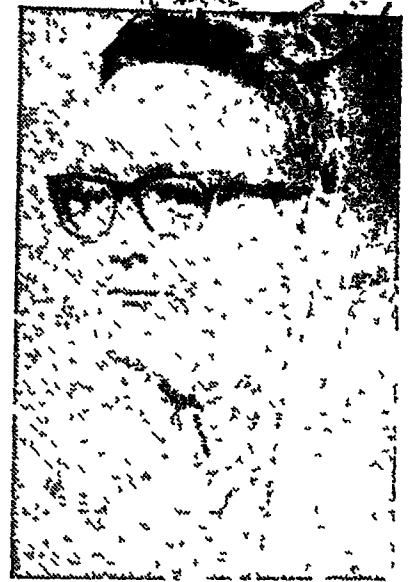
कोमलचन्द पाटनी

ताराचन्द मालू

मोतीचन्द डागा
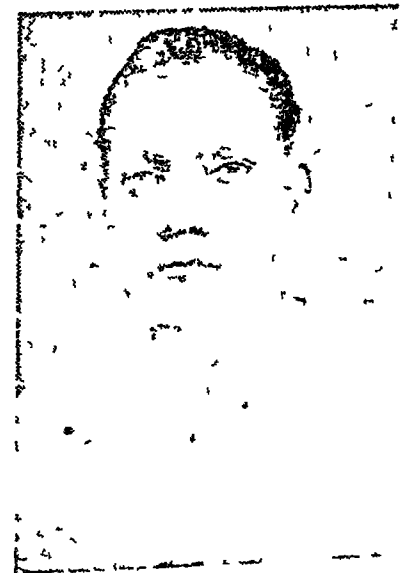
अजीमवक्म कोकूमिया
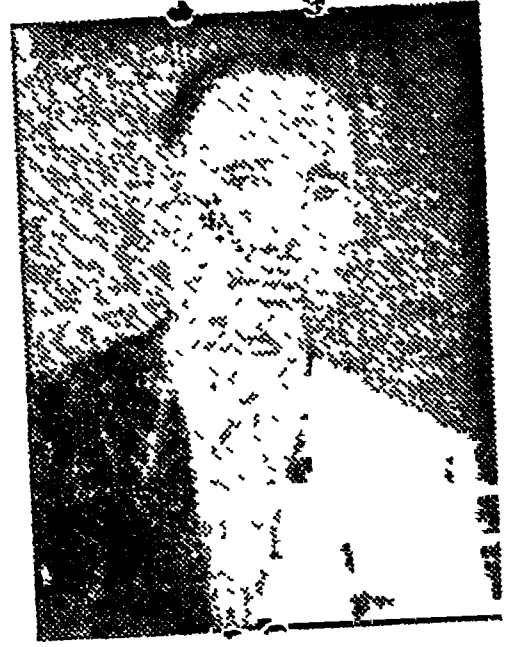
सम्मेलन के प्रमुख सहयोगी

अमरजीत सोनी

रमेश बाजरगान
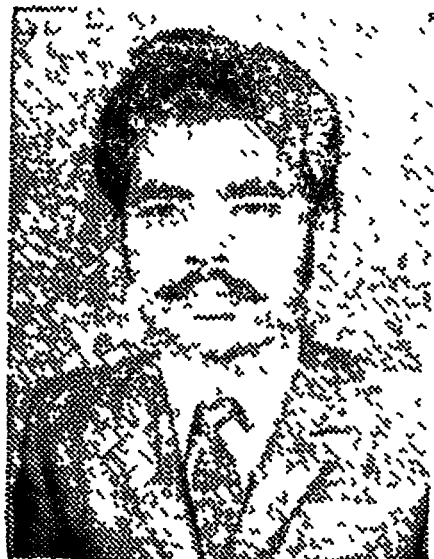
के० जी० गुप्ता

राजेन्द्र के० गोधा

बंकिम चन्द्र
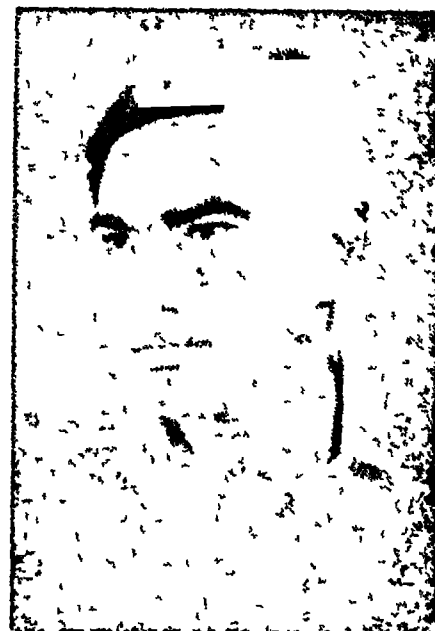
म्मेलन के प्रमुख सहयोगी
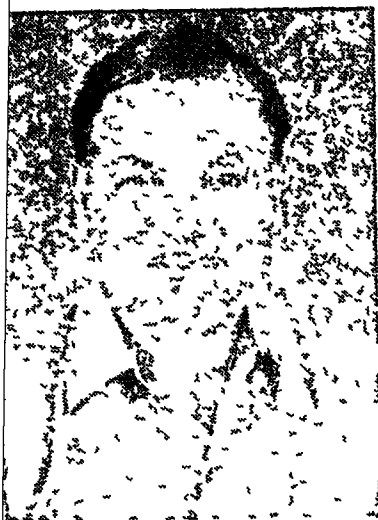
वेद प्रकाश मित्तल

पी० डी० माथुर

एम० डी० बग

सीताशरण पाण्डेय

चादमल

विगत सम्मेलनों की झांकी 1971 और 1972

पूर्णचन्द्र कुलिश
अध्यक्ष आसन पर

बृजसुन्दर शर्मा
प्रसन्न मुद्रा में

[illegible]

बृजसुन्दर शर्मा द्वारा
श्रोताओं का मनोरंजन

विगत सम्मेलनों की झांकी 1973

सम्मेलन का आनन्द लेते हुए अध्यक्ष रामकिशोर व्यास, साथ मे है कर्पूरचन्द्र कुलिश, निरजननाथ आचार्य, सतीशचन्द्र अग्रवाल व मन्नालाल सुराणा

अध्यक्ष रामकिशोर व्यास का स्वागत कर रहे है सयोजक शरत मोदी

श्रोताओ का स्वागत करते हुए सरक्षक कर्पूरचन्द्र कुलिश बैठे हुए हैं रामकिशोर व्यास, निरजननाथ आचार्य, सतीशचन्द्र अग्रवाल व डा कोटिया

विगत सम्मेलनों की झांकी 1973
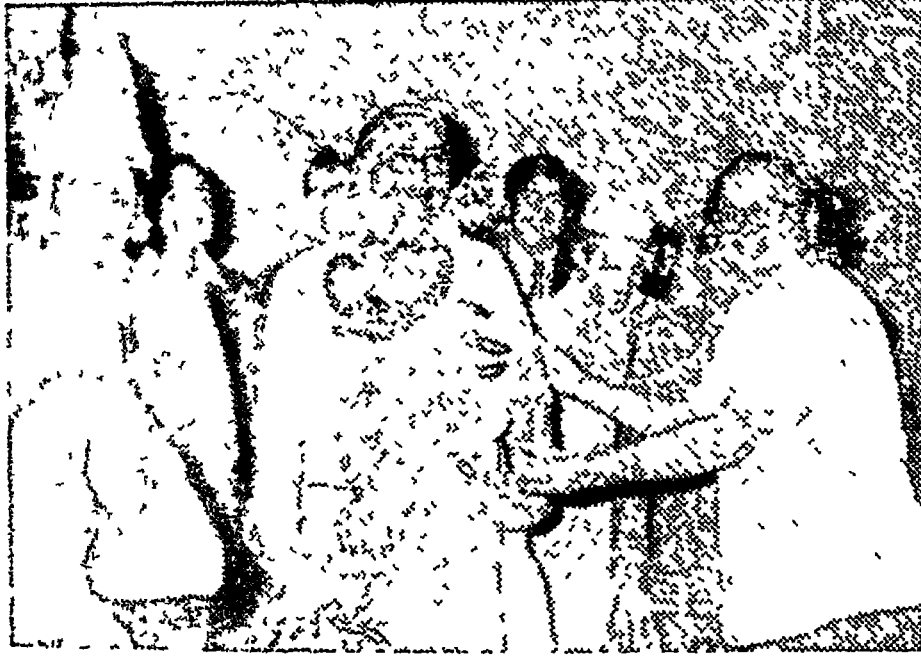
सतीशचन्द्र अग्रवाल की ताजपोशी करते हुए
कोषाध्यक्ष महावीर साघी पास मे प्रसन्न मुद्रा मे मन्नालाल सुराना

विगत सम्मेलनों की झांकी 1973

काका हाथरसी व अन्य कवि

महामूर्ख सम्मेलन का आनन्द लेती हुई महामूर्खाएँ
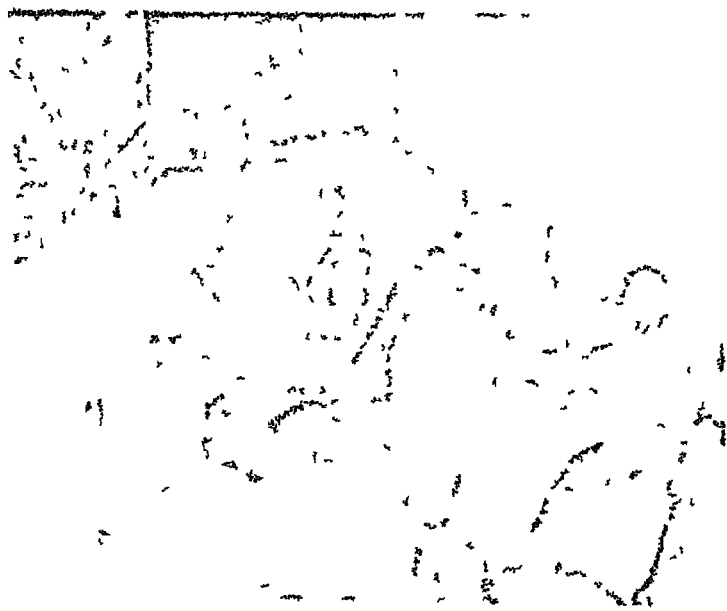
विगत सम्मेलनों की झांकी 1974
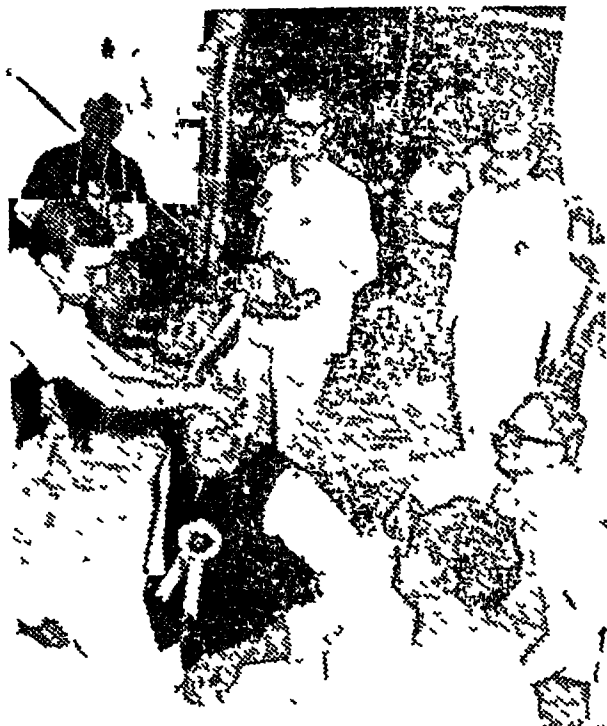
भूतपूर्व अध्यक्ष कर्पूरचन्द्र कुलिश की ताज पोशी करते हुए
स्वागताध्यक्ष विश्वम्भर मोदी

अध्यक्ष मोहन छगाणी की उन्मुक्त हंसी
साथ है सयोजक शरत मोदी

महामूर्खो का स्वागत करते हुए
सरक्षक कर्पूरचन्द्र कुलिश
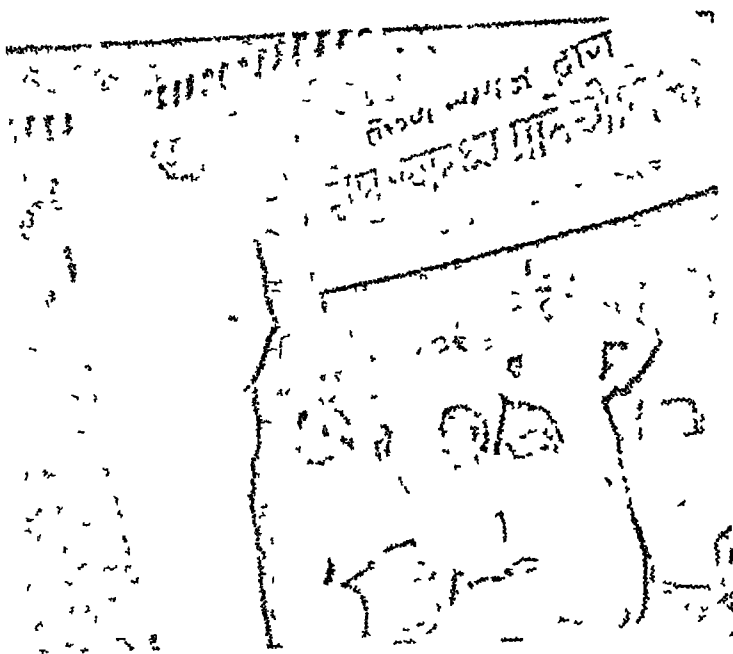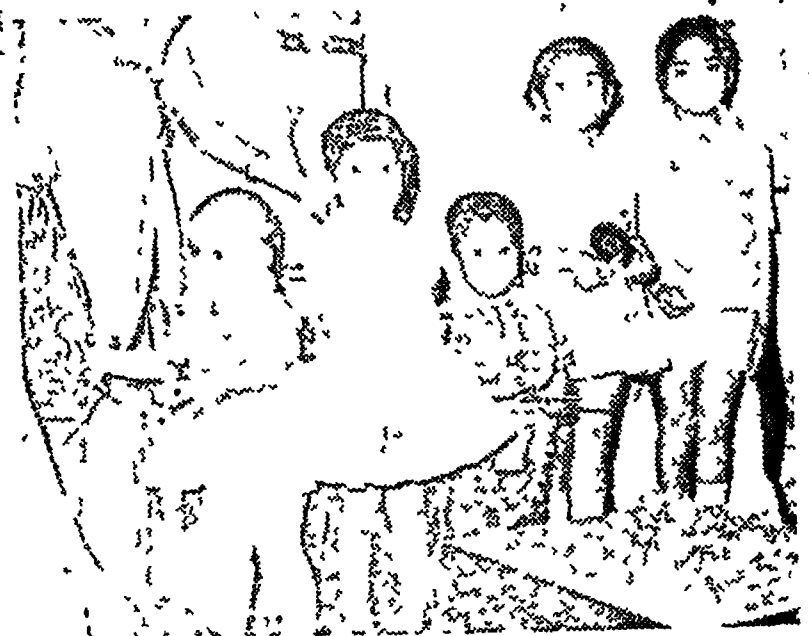
जिस देश में गंगा बहती है

लक्ष्मीकांत वैष्णव

"सरकार ! कहते है जबसे गगा बहनी शुरू हुई है, खूब हाथ धुल रहे है ?"

"धुलते है..." सरकार ने इत्मीनान से कहा—"जिस देश मे गगा बहती है, उस देश मे हाथ भी धुलते है । आप ही बताइए, नही धुलेगे क्या ?"

"धुलेगे सरकार ! क्यो नही धुलेंगे ? पर सरकार, लोग कहते हैं कि जब तक गगा आपकी कुर्सी के नीचे से बही, आपने भी जी भर के हाथ धोये ?"

"हाथ ही धोये ना ? नहाये तो नही ? (सरकार का नाराज हो जाना) दूसरे के बापो को नही देखते, नहा भी रहे है और चड्डी-बनियाइन भी धो-फचक रहे है । उनसे नही कहता कोई कुछ ? 'हम हाथ भी धो लेते है तो हो जाते है बदनाम' .." (सरकार का शेर कहना) ।

"सही फरमाया सरकार ! लोगो का क्या ? 'लोग तो बात का अफसाना बना लेते है ।' पर सरकार ! इधर आपके खिलाफ बडी हवा खराब है । लोग सरे-आम बकते फिर रहे है कि पूरे पाच साल—जब तक आपकी पाचो घी मे थी—आपने बडी मौज मारी ?"

"मैंने ही मारी ? (सरकार का तुनकना) दूसरो ने नही मारी ? और हमारी जगह आप होते तो क्या नही मारते ? लोग होते तो क्या नही मारते ?"

"मारते सरकार ! जरूर मारते । आखिर माल भी अपना है, और मुह

भी खाता है। अपना माल अपन ही नही खाते तो क्या दूसरो को खाने देते ? पर सरकार, सुना है इधर [illegible] लूट-मार मची है ?"

(सरकार का दोहा गाना)

"राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
और [illegible] पछतायगा..."

"जब सीट जायेगी छूट" (मेरा सरकार के मुह से [illegible] दोहा पूरा करना)। "बहुत खूब, सरकार। लूट-मार मची हो तो लूट लेना ही [illegible] होता है। पर सरकार! लोग कहते हैं कि यह लूटमार आपने मचायी ?"

"मैंने नहीं मचायी। दूसरो ने मचायी।"

"तो दूसरो ने मचायी, इसलिए आपने भी मचायी ?"

"क्यो ? हमारी जगह आप होते तो क्या नही मचाते ? [illegible] होते तो क्या नही मचाते ?"

"मचाते सरकार ! जरूर मचाते। पर सरकार लोग कहते है कि लूटमार मचाने के अलावा आपने [illegible] करवटें भी खूब बदली ? कभी इस करवट तो कभी उस करवट।"

(सरकार का प्रतिप्रश्न)—"क्या आप खडे ऊंट को देख कर बता सकते है कि वह किस करवट बैठेगा ?"

"[illegible] ऊंट भी नही बता सकता [illegible]।"

"तो अब बोलो ? जब ऊंट कमबख्त रह-रह कर [illegible] और हर बार करवटें बदल-[illegible] तो सामने वाला क्या करे ? क्या हमारी जगह आप होते तो ऊंट वाली करवट नही बैठते ? [illegible] होते तो क्या ऊंट वाली करवट नहीं बैठते ?"

"बैठते सरकार ! जरूर बैठते। पर सरकार [illegible] सीट के लिए [illegible]। [illegible] आप लगाई [illegible]"

(सरकार का रूपक बाधना)—"मान लीजिए आपने गाठ का पैसा खर्च करके एक रेल का टिकट लिया है। मान लिया ?"

"मान लिया सरकार।"

"तो अब बताइए कि भीड-भडक्के और धका-पेल के बावजूद क्या आप रेल मे नही चढेंगे ?"

"चढेंगे सरकार ! क्यो नही चढेंगे ?"

"और वहा यह देख कर कि दूसरे बाप पैर फैला कर सो रहे हे, आप भी पुट्ठे टिका लेने भर सीट के लिए नही लड़ेंगे ?"

"लड़ेंगे सरकार ! क्यो नही लड़ेंगे ?"

"और अगर लोग फिर भी जगह न दे तो लगाई से सीट ले लेने की जिद पर नही अड़ेंगे ?"

"अड़ेंगे सरकार, क्यो नही अड़ेंगे ? सीट कोई उनके बाप की है ?"

"तो अब बोलो ? सीट न उनके बाप की है, न अपने बाप की। सीट जनता के बाप की है। थोडा तुम खा रहे हो, तो थोडा हम भी खाये। अरे, तुमने पैसा खरचा है, तो हमने भी तो पैसा खरचा है। भला क्या गलत सोचा हमने ? आप होते क्या ऐसा नही सोचते ?"

"सोचते सरकार ! जरूर सोचते। पर सरकार लोग कहते हैं कि आपने सीट ले कर खूब आग उडेली ?"

"किसने नही उडेली ?"

"आपने खूब बारे-न्यारे किये ?"

"किसने नही किये ?"

"आपको जनता की कोई फिकर नही थी ?"

"किसको थी ?"

"आपको 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' से कोई सरोकार नही था ?"

"किसी को नही था। आप होते तो क्या आपको सरोकार होता ? लोग होते तो क्या लोगो को सरोकार होता ?"

'काहे को होता सरकार ? भला काहे को

होता ! पर सरकार, लोग कहते है कि आपकी कलई खुल गयी ?"

"सबकी खुल गयी । हमारी जगह आप होते तो क्या आपकी नही खुलती ? लोग होते तो क्या उनकी नही खुलती ?"

'खुलती सरकार ! जरूर खुलती । पर सरकार, आप अपनी ही जाघ उघाड रहे है और आपको शर्म नही आ रही ?"

"क्यो ? काहे को आवेगी शर्म ? हमारी जगह आप होते तो क्या आपको शर्म आती ? लोग होते तो क्या लोगो को शर्म आती ?"

"नही आती सरकार ! कम से कम इस धधे मे तो नही आती । पर सरकार लोग कहते है कि अब आपको खडा नही करेंगे ।"

"जैसे हम किसी के खडा करने से खडे होते हो ! कोई बच्चे है क्या ?"

"कौन कहता है सरकार ? बुढापा शौक आपके सर से टपक रहा है । पर सरकार, लोगों ने निश्चय कर लिया है कि बहुत हो गया, अब आपको टिकट नही मिलने देगे ।"

"कैसे नही मिलने देगे ? पैसा खर्च करेंगे तो क्यो नही मिलेगा टिकट ? क्या हमारी जगह आप पैसा खर्च करेंगे तो आपको नही मिलेगा टिकट ? लोग पैसा खर्च करेगे तो लोगो को नही मिलेगा टिकट ?"

(मैं चाहता तो सरकार के इस डायलॉग के जवाब मे कह सकता था कि 'क्यो नही मिलेगा सरकार ! जरूर मिलेगा ।' लेकिन मैंने यह नही कहा । आप बताइए कि यदि मेरी जगह आप होते तो आपका जवाब क्या होता ? लोग होते तो लोगो का जवाब क्या होता ?)

सौदागर ईमान के

शैल चतुर्वेदी

आख बंद कर सोये चद्दर तान के,
हम ही है वो सेवक हिन्दुस्तान के ।

बहते-बहते पार लगे है हम चुनाव की बाढ मे,
स्वतत्रता को पकड रखा है हमने अपनी दाढ़ मे ।
हीरे औ' माणिक है हम ही प्रजातत्र की खान के

कोई कहता काम चाहिए, कोई कहता रोटी दो,
कोई नगा खडा सामने कहता हमे लगोटी दो ।
सुनते-सुनते हाय हो गये बहरे दोनो कान के ।

चार साल दिल्ली मे काटे, बाकी जन सपर्क में,
सारी शक्ति लगा देते हैं, अपनी पचम वर्ष में ।
गरज-गरज कर भाषण देते हम बादल तूफान के ।

कब किससे मागा हमने, देनेवाले दे जाते हैं,
दे कर बहती गगा में, नैय्या अपनी खे जाते हैं,
रामराज के जादूगर, हम सौदागर ईमान के ।।

हँसगुल्ले

दिल्ली मे रामरिख 'मनहर' एक कवि सम्मेलन का संचालन कर रहे थे। कुछ श्रोता उनसे चुटकुले सुनाने का आग्रह कर रहे थे। और कुछ शैल चतुर्वेदी की कविता को सुनना चाहते थे। मनहर जी ने उस समय अपनी संचालन-प्रतिभा का परिचय दिया। वे श्रोताओ से बोले, "देखिए, मैं आपकी दोनो मांगों को एक साथ पूरा कर रहा हूं।" श्रोता बड़ी उत्सुकता के साथ मनहर जी के अगले वाक्य की प्रतीक्षा करने लगे। मनहर जी का अगला वाक्य था, "अब आपके सामने रामरिख 'मनहर' के चुटकुले शैल चतुर्वेदी अपनी कविताओ मे सुनाने आ रहे है!"

—गोविंद व्यास

अरे! यह कोई साधु महाराज नहीं, ये तो अपना लल्लू है। बहुत दिनो बाद शहर से लौटा है।

व्यंग्यचित्र पंकज गोस्वामी

देश के लिए दीवाने आए

हरिशंकर परसाई

देश के लिए दीवाने आ गये। दोपहर को २ बजे, सुबह ८ से ११ तक मैं लिखने-पढने की जगह से उठता नही। फिर दो घटे बाहर निकलता हूँ। दोस्तो से मिलता हूँ। कोई दोस्त न मिले, तो बस-स्टेशन के पास की पुलिया पर बैठ कर बसे कारे और रिक्शे ही देखता रहता हूँ, भुनी मूगफली खाता हूँ। फिर भोजन करके एक घटे आराम। फिर ३ से ७ लिखना-पढना-सोचना, फिर ७ से ६ बजे तक दोस्तो के साथ आपस मे चर्चा, हँसी-मजाक, बिना वर्जना के एक-दूसरे की टाग खीचना—और यह सब खुले मे। लोगो के सामने।

पर आज दोपहर २ बजे जब मैं रेडियो से वार्ता रेकार्ड करा के लौटा तो भोजन करने बैठने ही वाला था कि एक 'सज्जन' रिक्शे मे पधार गये। साथ मे रिक्शावाला और अगरक्षक यानी चमचा। दरवाजे पर दस्तक दी। मैं उनसे दो-एक बार ४-५ मिनट मिल चुका था। मैं पहचान गया। मैंने देखा, वे नशे मे धुत्त थे। न जाने कितनी पी ली थी। चमचा ठीक था। उसने एक बूद भी नहीं ली थी।

कहने लगे, "११ रुपये खर्च किये है, आपका मकान ढूँढने मे।

मैंने दरवाजा खोले बिना कहा, मुझे धिक्कार है कि २२ साल से शहर मे हूँ। आधा शहर तो कम से कम जानता है। आपको मेरे पते मे ११ रुपये लग गये। ये आप मुझसे ले लीजिए और कही आराम करिए।" मैं शर्म के कारण आत्मघात का इन्तजाम करता हूँ। मैं जानता हूँ उन्हे 'डाउन' समझ कर रिक्शेवालो ने कुछ कमा लिया होगा। कोई बुरी बात नही। जो रिक्शेवाले को रोज दूकान पर लूटते है, उनसे ११ रुपये ले लिये, यह शुभ हुआ।

वे कहने लगे, "दरवाजा तो खोलिए! मुझे १० मिनट आपसे जरूरी बातें करनी है।"

गुद

मैने कहा, "शाम को आइए, मुझे भोजन और आराम करना है। मैं सुबह ७॥ बजे से काम कर रहा हूँ।'

कहने लगे, 'इन्दिरा गांधी भी पाच मिनट का समय देती है। आप उनसे भी बडे हो गये ? आप पाच मिनट टाइम नही देंगे ?" मैं जानता था, जिस हालत में वे थे, उसमे ५ मिनट का मतलब २ घंटे होना—यानी उतरने तक। मैंने कहा, छोटे-बडे का सवाल नही है। आप पहले पास की पुलिस चौकी जाइए। वहा इन्स्पेक्टर से कहिए कि मुझसे मिलना है। वह आपकी तलाशी लेगा और एक सिपाही साथ भेजेगा।"

वे बोले, "यानी आप प्रधान मन्त्री से भी बडे हो गये। इतनी सुरक्षा!"

मैंने कहा, "यह बात नही है। आप पुलिस चौकी जायेंगे, तो आपके सिर पर एक बाल्टी ठडा पानी डाला जायेगा और फिर सिपाही दो झापड मार कर कहेगा—क्यो बे साले, अकेले ही अकेले! क्या हम नही है ? इसलिए शाम को आइए। मगर बात क्या करनी है ?"

वे बोले, "यही देश की दुर्दशा के बारे मे।"

मैंने कहा, "चौबीसो घटे देश की दुर्दशा की बात होती है। ५७ करोड आदमी करते है। पर बातो से कही देश सुधरता है ? आप पाच मिनट बात कर लेंगे, तो देश का क्या फायदा होगा ?"

वे [illegible] मे [illegible] थे। कहने लगे, 'तो फिर दुनिया [illegible] के बारे मे बात करूगा, विश्व-[illegible]'

मैंने कहा, 'मैं न देश का चौकीदार, न दुनिया का, आप चौकीदारो से बात कीजिए।'

वे कहने लगे, 'आप शराब पिये है।'

मैंने कहा, 'नही पिये हू। शराब मे खुद डूबा [illegible] [illegible] नही समझ पाता। अपने साथी को भेजो।' मैंने चमचे को बुलाया। वह—आया। मैंने कहा, 'सीखचे मे से मुझे सूंघ और उन्हे बता।'

साथी मजा ले रहा था। वह आया। नाक सीखचे मे से अन्दर डाली। मैंने उसकी नाक मे मुह खोल कर घुसेड दिया। सूघा और लौट कर उनसे कहा, 'भैया आप सभल जाइए। वे तो बिलकुल ठीक है।'

बोले, 'आप मुझे घर मे नही आने देंगे ?'

मैंने कहा, 'देश की बात तो सीखचो के आर-पार से भी हो सकती है। मैं और आप कुल १ फुट दूर है।'

मुझे अब मजा आने लगा था। सोचा, 'खा लेंगे खाना कभी।'

वे कहने लगे, सुना है आप काफी पीते है।'

मैंने कहा, 'हा ६ साल काफी पी। अब एकदम बद कर दी है।'

वे बोले, 'सिर्फ छह साल! मैं ३० साल से पी रहा हू।'

मैंने कहा, 'आप मेरे परदादा हुए। प्रणाम करता हू।'

उन्हे शायद थोडी शर्म आयी। कहने लगे, 'आप जैसा आदमी मुझे प्रणाम करे। अरे बाप रे, मै मर जाऊगा। किशन, मुझे मार डाल। इसी वक्त छुरा भोक दे।'

× × × ×

वे 'किक' मे बोलने लगे। इस 'किक' से मैंने अपने आपको अनगिनती लाते मारी है मित्रो को भी, जिन्होने मुझे हर बार माफ किया है। इतने उपद्रव किये हैं कि 'कनफेशंस आफ एन ओपियम ईटर' से अच्छी किताब बन सकती है। सत्य शुभ हो, अशुभ हो, काला हो, सफेद हो—साहित्य उसी से बनता है।

वे कहने लगे, 'चलिए, 'वार' चले । कुछ लेंगे ?'

मैंने कहा, 'मैने वह सिलसिला बद कर दिया है। आपका प्रेम हे तो एक 'ब्लैक नाइट' की कीमत दे जाइए । मैं बिजली का बिल चुका दू गा।'

वे कहने लगे, 'आपको चलना होगा। मैं मुहल्ले मे तूफान खडा कर दू गा ।'

मैंने कहा, 'आप पिट जायेंगे । उधर देखिए। ८ मजदूर आपकी सेवा के लिए तैयार खड़े हैं। पूछ गये है। इधर ये ४ युवक । या मै पुलिस को फोन कर दू ?'

वे दबे। बोले, 'जो आपको शराब पिला दे, उसके खिलाफ आप नही लिखते । यह क्या बात है ?'

मैंने कहा, 'आप दो बोतले रख जाइए, दोस्तो को मजा दू गा । और ९–१० दिन मे अपने खिलाफ पढ लीजिए। मै लिखू गा आपके खिलाफ । मैं नमक हराम ही नही, मदिराहराम भी हू' ।

अब वे उतार पर थे । कहने लगे, 'आप मुझे बैठक मे नही आने देंगे ?'

मैंने कहा, 'नही, प्रधानमत्री शायद मुझे शराब पिलाती हैं इसलिए मैं उनके खिलाफ लिखता हू । आपका सिद्धान्त कहा उड गया ?'

साथी ने इशारा किया कि इन्हे अन्दर आ ही जाने दो। मैने दरवाजा खोल दिया । वे बैठ गये। कहने लगे, 'इतनी देर तो प्रधानमत्री के बगले के सामने भी नही खडा रहना पडा ।'

मैंने कहा, 'मैं लेखक हू, प्रधानमत्री नही, न ससद सदस्य । मुझे वोट नही चाहिए। वोट वाले फौरन दरवाजा खोलते हैं।'

वे अब कुछ शान्त हुए। कहने लगे, 'देश का भविष्य आपके ही हाथो मे है।'

मैंने कहा, 'देश का भविष्य मेरे हाथ मे हो, पर दबे माल का गोदाम तो मेरे हाथ मे नही हे। आप क्या धधा करते हैं जो रुपये रिक्शेवाले को दे देते है ?'

वे साफ बोले, 'साफ बताऊ ? नबर दो जमाखोरी, मुनाफाखोरी । खूब कमाते हैं । खूब पीते हैं ।'

मैंने कहा 'जब अभी आनद है, तो फिर देश को दशा आप क्यो सुधारना चाहते हैं ? देश की दशा सुधरेगी, तो आपकी बिगडेगी । आपकी खटिया खडी हो जायेगी ।'

वे कहने लगे, 'मुझे इतना क्लेश हुआ। जब सुना कि आप पर हमला हुआ। पर इस देश ने उनका क्या कर लिया ? यह मुर्दा देश है।'

मैंने कहा, 'आपको क्लेश हुआ पर आपने क्या कर लिया !'

वे चुप हो गये। मैंने कहा, 'करने का वक्त होता है। उन्होने बेवक्त किया हम वक्त से करेंगे।'

वे अब अच्छी बाते करने लगे थे। कहने लगे 'आप सरीखे ही पहले आग उगले ।'

मैंने कहा, 'आग उगल रहा हू । पर आप चाहते है, सिर्फ कुछ अखबारो पर उगलूं, ताकि आपका गोदाम तोडा न जाये। आपने पिछले छह महीनो मे मेरा लिखा पढा है ?'

वे बोले, हम तो ऐसे ही कोई हेर्नी मे पट लेते हे।'

मैंने कहा, 'जब पढा ही नही, तब लिखे पर बात क्यो करते हो ?

मैंने कहा, 'आपके साथी ही कहते होंगे कि पीट परसाई । सरकार को पीट । पीट अपनर को

गुदगुदी

जिससे नम्बर दो की सडक पर कदम बढाने की उनकी हिम्मत न पडे और हम जनता का खून चूस । अब मै लिखता हूं—गोदाम को या तो तोडो या आग लगा दो। जो आदमी नही खा पाता, उसे आग को सौपो, यज्ञ ही करो मिलावटी घी मे। हालाकि मैं जानता हूं कि प्रेम बडा है—शासन मे, नेतृत्व मे, आदमखोर मे।'

वे शात हो गये। कुछ शोक ग्रस्त भी। कुछ पछताये भी। आंखो मे आसू आ गये। आदमियत पानी बन कर निकल रही है। पता नही, जन की आखो मे खून बन कर कब निकलेगी। मै इंतजार मे हूं। फिर उन्होने पूछा कि फला-फला मत्रियो से आपके कैसे सबंध है, दो-तीन खास विभागो के दो-तीन खास मत्रियो के बारे मे पूछा। मैंने कहा, 'अच्छे सबध हैं।' समझ गया, मत्री से काम कराने शहर से निकले होगे, पर रास्ते मे 'वह' दूकान दीख गयी होगी, तब मैंने उनसे कहा. 'हो, मैने काफी समय आपका नष्ट किया करेगे,'

मैने उनसे कस कर हाथ मिलाया 'बहुत आभारी हू' रिक्शा आपका इ[illegible] रहा है।'

वे कहने लगे, 'आप मुझे घर से रहे है ?'

मैने कहा, 'नही, मै प्रेम से हाथ [illegible] आपको ससम्मान विदा कर रहा हूं। एक रिश्ते से मेरे परदादा होते है।'

साथी ने उन्हे रिक्शे मे बिठा दिया। [illegible] भविष्य तय हो गया। विश्व का भी। पर अदाज है, उन्होने जरूर किसी 'बार' मे [illegible] देश और विश्व के कल्याण के बारे मे होगा।

चार व्यंग्य कविताएं

धांधली है

जाओ, दो आने का तेल लाओ
और टूटी कमर पर मालिश कराओ
क्योकि तुम्हारे हिमायतियो ने
पट्टी तुम्हारी कमर पर बाधने के बजाय
अपनी आखो पर बाध ली है।
अपनेपन मे भी देखो, कितनी धाधली है !

चुप रहो

उस्ताद, थोथी भावना मे न बहो
जितना कर सको, उतना ही कहो
मेरी नेक सलाह मानो
हजार वर्ष लडने के लिए
कम से कम सौ वर्ष तो चुप रहो।

—विमलेश

दोस्त

मेरे बारे मे
किसने, किससे
क्या कहा ?
यह जान लेने पर
मेरा कोई दोस्त
नही रहा !

अक्ल

शरीरगज की
सबसे ऊची मंजिल मे
रहती थी मुई।
इसलिए उसे कूद कर
आत्महत्या करने में
परेशानी नही हुई

—सरोजकु[illegible]

तरीके छुट्टी बिताने के

रवीन्द्रनाथ त्यागी
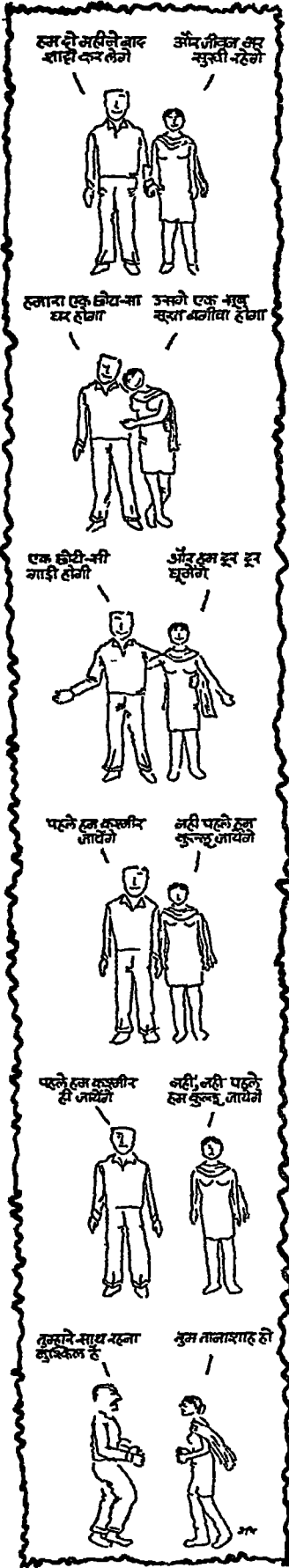
छुट्टिया कई तरह की होती है। एक छुट्टी वह होती है, जो चाय का नया सेट तोडने पर मेम साहब नौकर को देती हैं। एक छुट्टी वह होती है, जो बच्चा होने पर जनाने अस्पताल से मिलती है। सजा पूरी हो जाने पर जिला जेल से जो कुछ मिलता है, उसे भी छुट्टी कहा जाता है। खैर, यहा मै इन छुट्टियो का जिक्र नही कर रहा हूँ। यहा मैं उस छुट्टी का जिक्र भी नही कर हूँ, जो मिडिल स्कूल मे बारिश के या डिपुटी साहब के मुआयने के दिन मिला करती थी। छुट्टी से मेरा अभिप्राय यहाँ उस खास किस्म की छुट्टी से है, जो दफ्तर, बैंक, अदालत और कारखानो वगैरा मे कामकाज करने वाले लोगो को रविवार के दिन तथा अन्य कुछ विशिष्ट अवसरो पर गाहे-वगाहे मिलती रहती है।

छुट्टी विताने के हम सभी के अपने अलग-अलग ढग होते हैं। मेरे विचार से यदि हमे पता लग जाये कि मिस्टर अमुक अपनी छुट्टी किस तरह गुजारते है, तो हमे उनके व्यक्तित्व के बारे मे काफी हद तक पता लग सकता है। आजकल का नागरिक जीवन कुछ ऐसा हो गया है कि हफ्ते के छह दिन तो सारे-के-सारे लोग प्राय' एक ही तरह रहते हैं। ये छुट्टियो के ही दिन होते है, जो आदमी और आदमी (तथा औरत और औरत) के बीच का अन्तर स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए मैं अपने मित्रो मे से वर्मा जी व ठाकुर साहब की चर्चा करूंगा। ये दोनों सज्जन सारी छुट्टिया शरीर को धर्म का प्रथम साधन मानते हुए उसी की सेवा मे गुजारते हैं, जिससे जाहिर होता है कि ये कितने भौतिकतावादी किस्म के प्राणी है। वर्मा जी शरीर की सेवा के लिए जुलाब लेते है, जिससे उनका व्यक्तित्व कभी-कभी जरूरत से ज्यादा पतला भी होता देखा गया है। ठाकुर, क्योकि परमार्थी किस्म का इन्सा[illegible]

गुद[illegible]

अपने शरीर की अपेक्षा दूसरो के शरीर पर ज्यादा ध्यान देने की कोशिश करता है। दूसरे शब्दो मे, छुट्टियो के दिन वह उन सब लोगो से हाथापाई करने का प्रोग्राम रखता है, जिनसे हफ्ते के दौरान उसका मनमुटाव हुआ हो। हालाँकि छुट्टियाँ काफी होती है, पर इसे मैं ठाकुर की कर्तव्यपरायणता ही कहूँगा कि शायद ही कोई ऐसी छुट्टी होती है, जिसमे वह इस प्रकार के कार्यक्रम मे पूरी तरह व्यस्त न रहे। कभी-कभी तो पूरे सीजन के लिए पहले से ही 'बुक' रहता है। इस दिशा मे वह इतना कर्मठ है कि एक साहब के दाँत तोडने के लिए एक बार उसे बीस मील बस का सफर अपने खर्चे पर करना पडा था। रह गये मेरे मित्र सान्याल—सो वे बुद्धिवादी जीव हैं। सुबह ही सुबह डायरी, पेंसिल, मैग्निफाइंग ग्लास वगैरह लेकर जगलो की तरफ निकल जाते हैं। सारे दिन पता नही किस-किस कीडे-मकोडे के सेक्स जीवन का गहन अध्ययन करते हैं। इसी प्रकार प्रसिद्ध लेखक सी.ई.एम. जोड इतवार के दिन बगैर टिकट के रेल मे सफर किया करते थे, ग्लैडस्टन इतवार के दिन लकडिया फाडा करते थे और स्टालिन शतरज खेलते थे। इनके अलावा डेगफानेगी अपनी छुट्टियाँ यही देखने मे गुजारते कि और लोग अपनी छुट्टिया किस तरह गुजारते हैं।

ऊपर जितने भी लोगो के नाम मैंने गिनाये है, वे जैसा कि शायद जाहिर भी है— मुझसे अलग हैं। इस बात का नतीजा यह होता है कि छुट्टी गुजारने का मेरा ढंग भी अलग होना चाहिए। वास्तविकता यह है कि वह अलग ही है भी। छुट्टी का दिन गुजारने का मेरे पास बडा सरल नुस्खा है। मैं सारे दिन को तीन भागो मे विभाजित करता हू—सुबह का वक्त, दोपहर और संध्या का समय। [illegible] सुबह को सोता हू यानि कि छह बजे से बारह बजे तक। फिर दोपहर को सोता हू यानि कि बारह से पाँच तक। इसके बाद शाम को सोता हू, यानि कि पाँच से दस तक। दस बजे के बाद सोना तो यूँ भी जरूरी है कि डाक्टरो ने शरीर को पूरा-पूरा विश्राम देने कि बात पर कई किताबो मे काफी जोर दिया है। वैसे अगर आप मेरे जैसे क्रियाशील व्यक्ति से सारे दिन सोने को कहे, तो सम्भव है कि मैं उसे कभी भी न कर सकू, मगर चूकि मै दिन को तीन हिस्सो मे बाँटकर सोने की क्रिया को सम्पन्न करना शुरू करता हू, वैसा करने मे मुझे कोई विशेष असुविधा नही रहती। वैसे भी सोने की क्रिया को सम्पन्न करना काफी सरल क़िस्म का काम है। बस, इतना जरूर ध्यान रहना चाहिए कि जहा तक हो सके, वहा तक अपना हैड-क्वार्टर पलग पर ही रहे। लेटे लेटे सुबह का अखबार पढिए, चाय का प्याला लीजिए, बीवी को सुबह के घूमने के फायदे समझाइए, और बस, इसके बाद फिर सर्वांग आसन मे आ जाइए। रह गया बाथरूम वगैरा जाना, तो एक दिन के लिए चलिए गोली मारिए इन मामूली चीजो को। क्या लिखा है कही इतिहास मे कि कबीर, नेपोलियन या मोपासा रोज बाथरूम जाते थे? और अगर मान लीजिए कि जाना पड ही जाए, तो खयाल रखिए कि एक आँख ही खुले। दूसरी आख मे खुमारी रहना जरूरी है। वापस आये कि बिस्तर मे। दोपहर को एकाध आँख थोडी बहुत देर के लिए जरूर खोलिए। सूर्योदय का सच्चा मजा बारह बजे के करीब ही आता है। थोडा सा नाश्ता वगैरा कीजिए, धर्मपत्नी को याद दिलाइए कि आज उसे कहा-कहा जाना है, बच्चो को होमवर्क दीजिए और फिर कमान के तीर की तरह आप फिर अपने अड्डे पर आ जाइये। इस दफा जो चादर तनेगी, तो शाम को हटेगी। शाम को वक्त पर उठियेगा, हाथ मुह धोइयेगा और चाहे तो कपड़े भी बदल लीजिएगा। थोडी बहुत सुस्ती उतरने का गमन कीजिए, भरपेट खाना खाने के बाद फिर आ जायेगी। और लीजिए जनाब—गुजर गयी छुट्टी! जिन्दगी मे जैसा कि एक नीग्रो, ने कहा है कि सोने और प्रेम करने के अलावा

ग्रौर है ही क्या ? मै तो कहूगा कि प्रेम भी तभी करना चाहिये, जब कि नीद न ग्रा रही हो, नही तो 'प्रिये, प्रेम की याद ग्रगले वसन्त पर दिला देना, ग्राज तो सोयेगे ।'

शायद ग्रापने ऊपर लिखी मेरी बातो पर यकीन कर लिया । काश मै ऐसा कर सकता । भगवान साक्षी है, यदि कभी भी मेरा पूरे दिन सोने का प्रोग्राम उसे सहन हुग्रा हो । बात यह है कि मेरे ग्रलावा कुछ दूसरे लोग ऐसे भी है, जो सारी छुट्टियो का दिन ग्राखे पूरी पूरी फाडकर जागने मे गुजारना चाहते है । हर देश मे ग्रौर हर समाज मे ऐसे चन्द व्यक्ति पाए जाते है, जिन्हे ग्रपने कुछ विशिष्ट ग्रगो को काम पर बराबर भेजने की ऐसी आदत पड जाती है कि वे उन्हे कभी भी ग्राराम की इजाजत नही देते । डॉक्टर पद्मधर को ही ले लीजिए ग्रौर सब ठीक है, मगर बस चुप नही रह सकते ! पैदा होने के वक्त से ग्रब तक शायद चन्द ही घन्टे ऐसे गुजरे हो, जब किसी ने इन्हे, इनकी सरस्वती को विश्राम लेते देखा हो । कालेज जाने से पहले बच्चो को वेद पढाते हैं, नौकर को भुरता बनाने की विधि पर भाषण देते है, पत्नी को पतिव्रता होने के फायदे ग्रौर नुकसान समझाते हैं ग्रौर फिर कालेज जाते हें । रास्ते भर रिक्शेवाले को व्याकरण का सही प्रयोग सिखाते रहते है ग्रौर इसके बाद क्लास मे भाषण शुरू होता है । भाषण इतने ऊचे स्वर मे होता है कि लडके चाहे तो घर पर बैठकर ही नोट ले सकते हैं । छुट्टी के दिन ग्रौर कुछ नही, तो मेरे यहा ग्रा जायेगे । ब्रह्मचर्य की महिमा समझाने लगेगे । तग होकर ग्रगर मै कहूगा कि इन चीजो का कहना ग्रासान है, करना कठिन, तो बडे गर्व से सीना फुलाकर कहेगे, हर्गिज नही, हमने भी तो १३ वर्ष की ग्रायु तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया ही है ग्राखिर ! ग्रब बताइए, इनसे क्या कहिए । पिछले इतवार को मुझे समझा गये कि यद्यपि उनकी पत्नी से ११ वर्ष से सम्बन्ध कुछ खिचे खिचे है, पर इसका प्रभाव बच्चे होने पर कतई नही पडा । तर्क देते हुए उन्होने बताया कि जनाब जर्मनी ग्रौर इग्लिस्तान मे कितने दिनो लडाई रही, क्या वहा बच्चे पैदा होने बन्द हो गये ? जो स्थिति दो देशो के युद्ध मे होनी है, वही गृहयुद्ध मे होनी चाहिये । गर्ज यह कि कुछ ना कुछ बाधाए विशुद्ध निद्रा के मार्ग मे पडती ही रहती है । ग्रौर कुछ नही, तो पालतू कुत्ता या बिल्ली मे से कोई ग्रापके ऊपर चढ ग्राता है ग्रौर ग्रमरीकी फिल्मो के स्टाइल मे ग्राप से प्यार करना शुरू कर देता है । जब ग्रापको यह पता लगता है कि यह घरेलू कुत्ता या बिल्ली ही है, तो एक विशेष प्रकार का दुख होना स्वाभाविक है । लेकिन यह सोचकर कि कदाचित् कुत्ता या बिल्ली न होकर कोई ग्रौर होता तो क्या हादसा गुजरता, ग्राप को सन्तुष्ट होकर फिर सो जाना चाहिए । छुट्टी ग्राखिर है किसलिए ?
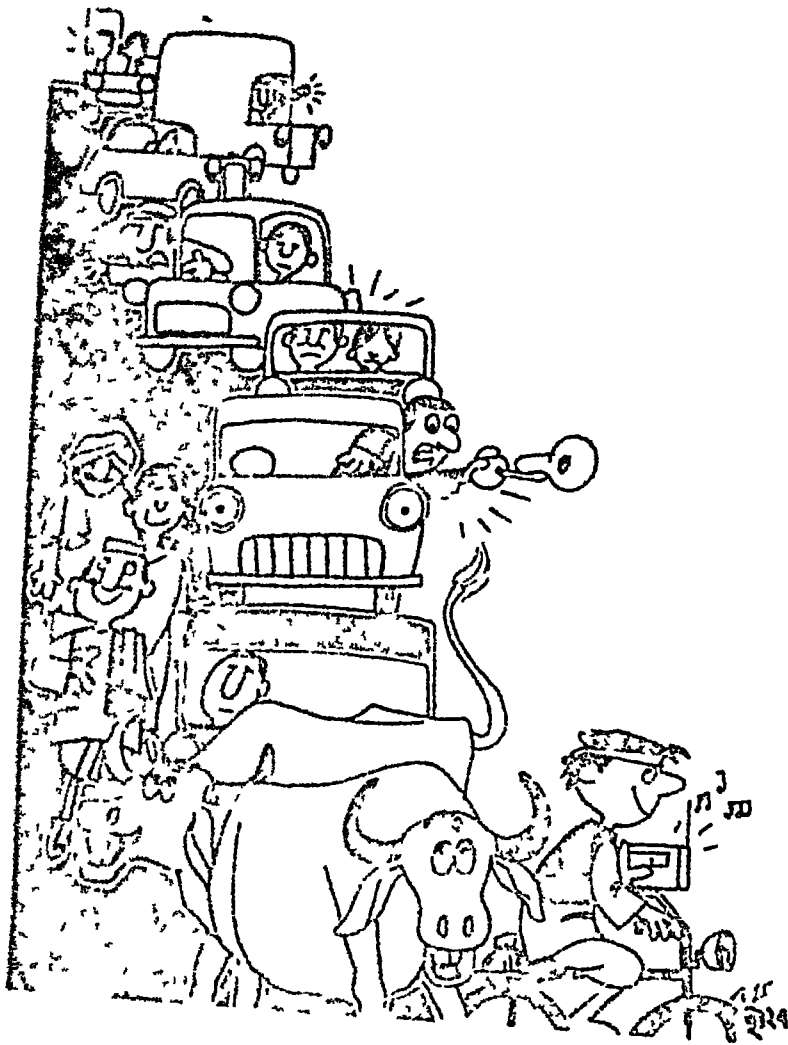
सड़क से फुटपाथ तक

प्रयागदत्त चतुर्वेदी

ईसा मसीह के जन्म का १९३०वाँ वर्ष था। मेरे घर मे मोटर खरीदने की चर्चा हुई तो जाने कैसे दीवारो ने सुन लिया और शहर मे ब्रॉडकास्ट कर दिया। उन जमाने मे मोटर-विक्रेताओ की घ्राण-शक्ति बहुत विकसित और दूरगामी थी। वे सूंघते-सूंघते मेरे घर, वहाँ से दफ्तर, वहाँ से कहवा घर तक पहुँच गये। फिर वहाँ किसी ने 'फोर्ड' की तारीफ की, किसी ने कनवर्टिबुल 'शेव' का गुण गाया, किसी ने [illegible] की 'ऑस्टिन' के नखशिख का बखान किया। कमीशन का प्रलोभन दिया गया, [illegible] इंजिन और लगेज कैरियर का ऑफर आया, शो-रूम मे ले जाकर जामातु-तुल्य [illegible] की गयी। आखिर जामातु-तुल्य फिसल गये और एक दिन साजसज्जा और [illegible] के साथ वह, जिसके नखशिख का बखान किया गया था, मेरे घर आ गयी।

[illegible] तो उसकी आरती उतारी गयी। माँ ने मगल गीत गाये। पिता ने [illegible], पुरखो के भाग जगे है।' पड़ोसी देखने को दौड़े। मुहल्ले मे धूम मच गयी। लोगो [illegible], '[illegible] का बेटा मोटर लाया है, पूत हो तो ऐसा हो, हाथीनशीन है।'

दूसरे दिन जिधर से गाड़ी निकली, सारी भीड छट कर खीरे की फाँक की [illegible]। मुगलो का जमाना याद आ गया। जब शाही सवारी निकलती [illegible] भाग-भाग कर घरो मे छिप जाते थे तथा पुरुष सडको के किनारे [illegible] सलाम की आतुरता मे खड़े हो जाते थे। कुछ ऐसी शान थी [illegible] निकलता, तो मुझे लगता कि मै दर-असल हाथी पर सवार हूँ।

[illegible] इस युग मे भिन्न था। गाये और भैसो के गिरोह सूर्योदय के साथ

निकलते थे और गोधूलि मे लौटते थे। आजकल भैसे ठीक दस बजे स्कूलो और दफ्तरो के टाइम से चरने निकलती है और चार बजे दीवानी कचहरी बन्द होने के समय वापस लौट आती है। अब उनके साथ कोई गोपालक नही होते। वे अलग साइकिलो पर ट्रांजिस्टर बजाते हुए चलते है और भैसो को सडक पर चलने वालो से निपटने के लिए छोड देते हैं, जैसे द्वापर मे गायो को खुद चरने के लिए छोड कर महागोपाल कृष्ण महाराज बाँसुरी बजाते और गोपियो से आख मिचौनी खेलते रहते थे। अस्तु, यह विषयान्तर हो गया। मुख्य विषय यह है कि जब मेरी सवारी निकली, तो भैसो का काफिला अपने गोपालो की सुरक्षा मे सडक पर जा रहा था। मोटर का हॉर्न बजा तो भैसे रेस के घोडो मे बदल गयी। और चरवाहो के लिए विकट समस्या खडी हो गयी। वे उन्हे सम्भालने का प्रयास कर रहे थे।

एक दिन मुझे दूर देहाती अचल मे जाना था। मेरी गाडी धूल के गुबार उडाती हुई चली जा रही थी और पीछे-पीछे उसी धूल मे लडके तालिया बजाते और चीखते हुए दौड रहे थे। कुत्ते किनारो पर भौक रहे थे और वयोवृद्ध विस्फारित नेत्रो से कार को देख रहे थे। शहरो मे ऊट के दीखने पर जो दृश्य होता है, वही दृश्य उस देहाती अचल मे मोटरकार के दीखने पर था। जिस लडके पर कार की ढेर-सी धूल पड जाती, वह कृतकृत्य होकर सदर्थ मुद्रा मे दूसरो पर रोब जमाता था और जो पीछे दौडता-दौडता कार को छू लेता था वह लडको मे इन्द्र का स्थान प्राप्त कर लेता था। अन्तत जब कार एक गाव मे रुकी तो लडको और सयानो के झुड न उसे घेर लिया। उसे देखकर, उसके पास जाकर और उसे छू कर अपने जीवन को धन्य समझा।

●

आज यह सब याद आ रहा है, क्योकि कई घटनाएं एक के बाद निष्ठुर सत्य की चकाचौध के साथ आज ही घटित हुई है, और सिद्धार्थ गौतम की भाति कार-स्वामित्व के प्रति मुझमे वैराग्य जाग उठा है।

आज सवेरे घर से निकला, तो पहली मुठभेड भैसो के गिरोह से हुई। दस बजे का समय था और मै दफ्तर पहुँचने की जल्दी मे था। पर भैसो को भी अपनी दैनिक भ्रमण यात्रा पूरी करनी होती है। वे पूरी सडक पर फैली हुई पुरु सेना के गजदल की भाति मन्थर गति से चली जा रही थी। मैंने बाये से निकलने की कोशिश की, तो पगुराती भैसो का एक दस्ता सामने आ गया। दाहिनी तरफ से निकलना चाहा, तो गाडी नाली मे जाते जाते बची। बीच से निकलना चाहा तो एक भैस ने सिर झमका दिया और सीग बॉनेट पर लगी। भैसो का यह महासागर मेरे लिए दुस्तर हो गया। उधर स्कूटर वाले और साइकिल वाले अपनी तन्वगियो को लिये भैसो के बीच से कावा काटते हुए बडी दक्षतापूर्वक निकले जा रहे थे। चरवाहे दूर पर बुशर्ट और पैंट पहने, साइकिलो पर चढे, ट्रांजिस्टर बजाते हुए ऐसे चल रहे थे कि कोई भैसो से उनका ताल्लुक न जोड ले। मुझे याद आया कि यह वही हॉर्न है, जिसे सुन कर भैसे कुलाचे मार कर भागती थी, और चरवाहे हडबडा कर दौड पडते थे। पर वही अर्जुन, वही बाण, आज बेकार हो गये थे।

आगे बढा तो चौराहे पर लाल-बत्ती मार्ग अवरुद्ध किये खडी थी। मोटर वालो की लम्बी कतार मे मैं भी नतमस्तक होकर बैठा रहा। साइकिल पर सवार सैलानी ट्रैफिक-नियमो को उगलियो पर उछालते हुए धडल्ले से चौराहा पार कर रहे थे—क्योकि दूर केबिन मे बैठा हुआ सिपाही न तो उन्हे दौडा सकता था और न मेरी तरह उनकी पीठ पर यू. पी. एच १५१५ या इस प्रकार का कोई कैदी नम्बर लगा था। मेरे जैसे अनेक निरीह मोटरस्वामी कभी लाल बत्ती की ओर कभी अपनी घड़ी की ओर देख रहे थे।

सिद्धार्थ का ज्ञान और वैराग्य गया।

साइकिल और पैदल चलाने वालो के पीछे मैं दफ्तर पहुँचा। वहा सभी के लिए स्थान है, पर मोटरो के लिए कोई जगह नही। आप मैदान मे या चहार-दीवारी से लगी बोगनवेलिया की छाया मे मोटर खडी कर सकते है। पहले जब मेरे पास वज्रदेह वाली आयसागी फोर्ड थी, तो वर्षा या धूप-छाह की कोई परवाह न थी। पर अब मैने कृशकटि वाली कोमलागी फियेट ले रखी है। यह फियेट जूलियट की तरह नाजुक है। इसमे सहन-शक्ति बहुत कम है। यह हवा के झोके से भी हिल जाती है और बिहारी की नायिका की भाति फूलो से भी दब जाती है। अत जब २२,००० मेहरवाली अपनी कोमलागी फियेट को धूप में झुलसते या वर्षा मे भीगते देखता हूँ, तो हृदय विदीर्ण हो जाता है। पर अभी भी कोई उपाय नही दीखा।

वैराग्य की विचार-शृंखला मे एक और कडी जुड गयी है।

सब कुछ आज ही होना था। शाम को खरीददारी के लिए अमीनावाद निकला। इस शहर की सडके विश्व-बन्धुत्व और सह-अस्तित्व की सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ पैदल, साइकिले, स्कूटर, हथठेला, रिक्शे, मोटरे, ट्रके, भैसा-गाडियाँ, म्युनिसपैलिटी के मैला-ट्रेलर, गाये, खच्चर, ये सब साथ-साथ चलते है। राजमार्ग पर सबका समान अधिकार है।

अनेक कठिनाइयाँ झेलते, रिक्शे-वालो की बोलियाँ सुनने और केले के ढेरो से लदी भैसा-गाडियो से कतराते जब मैं बाजार पहुँचा, तो पार्किंग की चिन्ता हुई। सबसे पहले पश्चिम की सडक वाली पार्किंग प्लेस पर पहुँचा और एक तरफ से जगह ढूढनी शुरू की, पर वहाँ कोई जगह न थी। फिर पीछे और आगे से आती हुई गाडियो को बचाता हुआ पार्किंग की एक संकरी लेन ढूढता रहा, पर ऐसा मालूम होता था कि शहर की सारी मोटरे आज यही जमा हो गयी हैं। एक सज्जन ने

प्रयोगवाद

आलू !
उस पर एक और आलू,
फिर एक और आलू,
उस पर एक और आलू,
आलू, ऊपर आलू, उस पर आलू,
बोलो कृपालू
काव्य नही समझे
तो थैले से बैंगन भी निकालू ?

—दिनेश कुमार गोयल

नया 'वाद'

एक साहित्य गोष्ठी मे
जितने थे
सब किसी न किसी 'वाद' के
'वादी' थे।
गोष्ठी खत्म हुई
तो एक ने पूछा,
"जो सबसे ज्यादा बोले
वे कौन थे ?"
दूसरे ने धीरे से कहा,
वे इलाहाबादी थे !"

—निशिकान्त

अपनी मोटर हटायी, तो मैं लालायित हो कर उधर दौडा, पर सामने से दूसरे सज्जन ने वहाँ तेजी के साथ अपनी मोटर पेल दी और मुझे ऐसी आँख दिखायी कि लगा, वे अपनी आँख से मेरी आँख फोड देना चाहते है। दुकाने वन्द हो जाने की घवराहट और कार पार्किंग की दिक्कत से जूझता मैं अव उत्तर दिशा मे पहुँचा और फुटपाथ के पास गाडी खडी करके उसे वन्द करने जा रहा था कि एक ट्रैफिक सिपाही ने सूचना दी कि यहाँ पार्किंग

मेरा मनोवल पूर्णत समाप्त हो चुका था। अव मैं किसी चोर की भाँति सिपाही की नजरें वचाता हुआ एक ऐसे स्थान की खोज कर रहा था कि जहाँ मैं चुपके से अपनी गाडी पार्क कर सकू। कुछ देर वाद मैंने अपनी गाडी एक अधेरी गली मे खडी कर दी। गाडी से मुझे वैराग्य हो चला था। थोडी ही देर मे मेरा वैराग्य अपने और जनता के खिलाफ खीझ मे वदलने लगा। तय किया कि अव मैं मोटर वेच दूगा। साइकिल वालो और पैदल

कर्तव्यशील

कुर्सी-देवी के
प्रगाढ-बन्धन मे बँधे
वे सब (अधिकारी)
कोई
'शठनायक'
थोडे ही है
जो—
जन्म-भर साथ निभाने के
वादे से
मुकर जाएँ

—प्रवीण कपूर

मना है। फिर गाडी स्टार्ट की और एक ऐसे घपले मे फँसा कि न तो मोटर वैक कर सकता था और न आगे वढकर दक्खिन से निकल सकता था। जव मेरे लिए सब दिशाएँ अवरुद्ध हो गयी, तो अपनी पत्नी की याद आयी। वह मेरी वगल मे ही वैठी थी। मैंने तुरन्त उस पर विगडना शुरू किया, 'तुम्हारी ही वजह से मै कार ले आया। वरना यहाँ तो पैदल भी आया जा सकता था।'

चलनेवालो का साथी वनूगा, उनका नेता भी वनने की कोशिश करूंगा। तव लोग कहेंगे कि यह वुर्जुवा प्रतिक्रियावादी अव जनवादी होने का स्वाग कर रहा है। पर मैं वुरा नही मानूगा, क्योकि आज जनवाद का नारा लगाने वालो मे से वहुतो मे और मुझ मे कोई खास फर्क नही है। उनकी गाडियाँ किसी-न-किसी अधेरी गली मे वहुत पहले से छिपी हुई खडी हैं। ●

• प्याले मधुशाला वाले •

सवेरे उठते ही पत्नी ने पूछा—रात तुम इतनी देर से आये, इतनी पीकर आये, लेकिन उस पर भी तुम रात-भर इतना शोर क्यो करते रहे ?

पति ने उत्तर दिया—कुछ न पूछो। मुझे सोने पर इतने बुरे सपने आते रहे कि मैं चिल्लाता रहा। फिर उठकर शीशे मे देखा तो पाया कि मेरे चेहरे पर सचमुच एक बहुत बड़ा छेद हो गया है।

पत्नी ने पूछा—फिर क्या हुआ ?

पति—होना क्या था, मैंने अपना मुँह बन्द किया तो वह छेद गायब होगया।

●

दो पियक्कड़ मयखाने मे आमने-सामने बैठे थे। एक ने अपनी मुट्ठी बन्द की और पूछा—बताओ मेरी मुट्ठी मे क्या है ?

दूसरे ने सोचा और उत्तर दिया—जेट वायुयान।

पहला—गलत।

दूसरा—रेलगाडी।

पहला—फिर गलत।

दूसरा—चन्द्रमा।

पहला लगभग रोते हुए बोला—तुमने बेईमानी क्यो की ? तुमने मेरी मुट्ठी मे देख लिया है।

●

पतिदेव झूमते हुए घर पहुँचे तो उनकी आशानुकूल पत्नी हाथ मे बेलन लिये दरवाज़े पर ही खड़ी मिली।

पत्नी ने झुँझलाते हुए कहा—तुम्हारी हिम्मत कैसी हुई इस दशा मे घर आने की ?

पति बोले—देख लो कितना बहादुर हूँ मैं। जानते हुए भी कि तुम हाथ मे बेलन लिये दरवाजे पर खड़ी होगी, तब भी मै आ गया।

●

एक व्यक्ति झूमते हुए मयखाने से निकला। सामने जाने वाले एक अन्य व्यक्ति ने उससे समय पूछा। समय बता दिया गया तो झूमते हुए व्यक्ति ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा—बड़ी अजीब बात है। यही प्रश्न मैं आज शाम से कई लोगो से पूछ चुका हूँ और सबके उत्तर अलग-अलग थे।

●
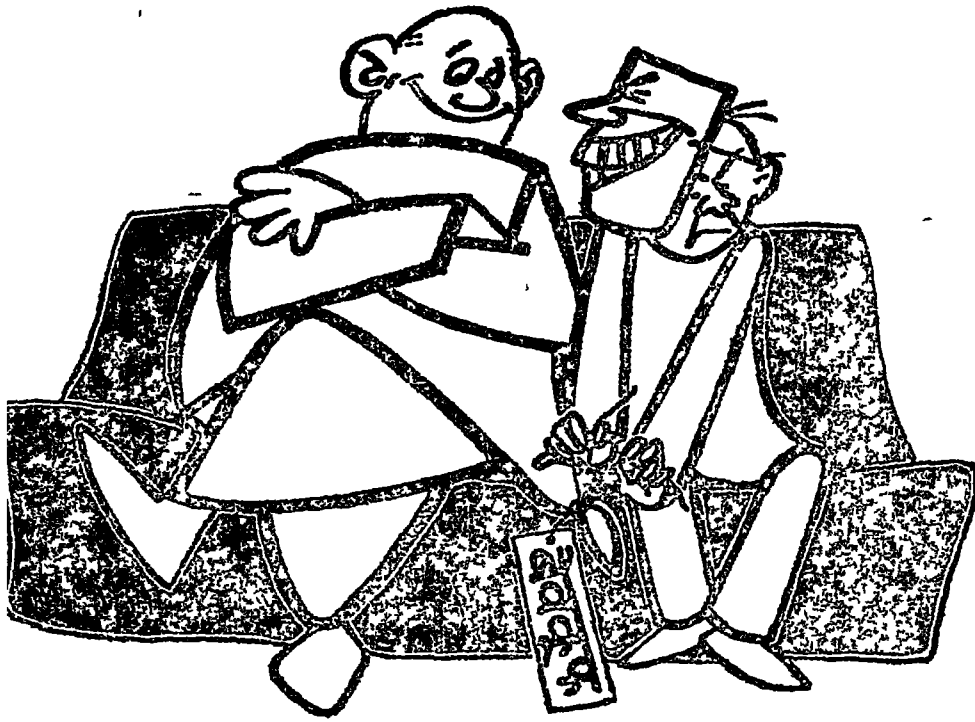
एक निहायत अशुद्ध बेवकूफ

बिना जाने बेवकूफ बनना एक अलग और आसान चीज है, कोई भी इसे निभा देता है।

मगर यह जानते हुए कि मैं बेवकूफ बनाया जा रहा हूँ और जो मुझसे कहा जा रहा है, सब झूठ है—फिर भी बेवकूफ बनते जाने का एक मजा है। यह तपस्या है। मैं इस तपस्या का मजा लेने का आदी हो गया हूँ। पर यह महगा मजा है—मानसिक रूप से भी और दूसरी तरह से भी। इसलिए जिनकी हैसियत नही है, उन्हे यह मजा ही मजा नही है। करुणा है, मनुष्य की मजबूरियो पर सहानुभूति है। आदमी की पीडा दारुण व्यथा है। यह सस्ता मजा नही है। जो हैसियत नही रखते, उनके लिए दो रास्ते है—चिढ जाए या शुद्ध बेवकूफ बन जाए। बेवकूफ एक दैवी वरदान है, मनुष्य जाति को। दुनिया का आधा सुख खत्म हो जाए, अगर शुद्ध बेवकूफ न हो। मैं शुद्ध नही, 'अशुद्ध बेवकूफ' हूँ। और शुद्ध बेवकूफ बनने को उत्सुक रहता हूँ।

अभी जो साहब आये थे, निहायत अच्छे आदमी हैं। अच्छी सरकारी नौकरी मे हैं। साहित्यिक भी है, कविता भी लिखते हैं। ये एक परिचित के साथ मेरे पास कवि के रूप मे आये। बाते काव्य की घण्टा भर होती रही—तुलसीदास, सूरदास, गालिब, अनीस वगैरह की। पर मैं 'अशुद्ध बेवकूफ' हूँ, इसलिए काव्य-चर्चा का मजा लेते हुए भी जान रहा था कि भेट के बाद काव्य के सिवाय कोई और बात निकलेगी। वे मेरी तारीफ भी करते रहे और मै बर्दाश्त करता रहा। पर मैं जानता था कि वे साहित्य के कारण मेरे पास नही आये।

मैंने उनसे कविता सुनाने को कहा। आमतौर पर कवि कविता सुनाने को उत्सुक रहता है, पर वे कविता सुनाने मे सकोच कर रहे थे। कविता उन्होंने सुनायी, पर बडे बेमन से। वे साहित्य के कारण आये ही नही थे। वरना कविता की फरमाइश पर तो मुर्दा भी बोलने लगता है।

मैंने कहा, 'कुछ सुनाइए।'

वे बोले, 'मैं आपसे कुछ लेने आया हूँ।'

मैं समझा ये शायद ज्ञान लेने आये हैं।

मैंने सोचा—यह आदमी अजीब है। ईश्वर को भी कहा जाय, तो वह अपनी तुकबन्दी सुनाने के लिए सारे विश्व को इकट्ठा कर लेगा। पर वे सज्जन कविता सुनाने मे सकोच कर रहे थे।

मैं समझता रहा कि ये समाज और साहित्य के बारे मे कुछ ज्ञान लेने आये हैं।

कवितायें उन्होंने बडे बेमन से सुना दी। मैंने तारीफ की। पर वे प्रसन्न नही हुए। यह अचरज की बात थी, घटिया से घटिया साहित्य-सर्जक प्रशसा मे पागल हो जाता है, पर वे प्रशसा से जरा भी विचलित नही हुए।

उठने लगे तो बोले, 'डिपार्टमेंट मे मेरा प्रमोशन होना है। किसी कारण अटक गया है। जरा आप सेक्रेटरी से कह दीजिए, तो मेरा काम हो जायेगा।'

मैंने कहा, 'सेक्रेटरी क्यो? मैं मत्री से कह दूंगा। पर आप कविता अच्छी लिखते है।'

एक घंटे तक मैं जानकर भी साहित्य के नाम पर बेवकूफ बना—मैं 'अशुद्ध' बेवकूफ हूँ।

●

एक प्रोफेसर साहब—क्लास वन के! वे इधर आये। विभाग के 'डीन' मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। यह वे नहीं जानते थे। यों वे मुझसे पचासों बार मिल चुके थे। पर वे डीन के साथ मिले, तो उन्होंने मुझे पहचाना भी नही। डीन ने मेरा परिचय उनसे करवाया। मैंने भी ऐसा बर्ताव किया, जैसे वह मेरा उनसे पहला परिचय है।

डीन मेरे यार है। कहने लगे, 'यार परसाई, चलो कैंटीन मे अच्छी चाय पी जाय। अच्छा नमकीन भी मिल जाय, तो मजा आ जाए।'

अब क्लास वन के प्रोफेसर साहब थोडा चौंके।

हम लोगो ने चाय और नाश्ता किया। अब वे समझ गये कि मैं 'अशुद्ध' बेवकूफ हूँ।

कहने लगे, 'सालो से मेरी लालसा थी कि आपके दर्शन करूं। आज वह लालसा पूर्ण हुई।' (हालाकि वे कई बार मिल चुके थे, पर सामने डीन थे न!)

अग्रेजी मे एक बडा अच्छा मुहावरा है—'टेक इट विथ ए पिंच आफ साल्ट' यानी थोडे नमक के साथ लीजिए। मैंने अपनी तारीफ थोडे 'नमक' के साथ ले ली।

शाम को प्रोफेसर साहब मेरे घर आये। कहने लगे, 'डीन साहब तो आपके बड़े घनिष्ठ है, उनसे कहिए न कि मुझे पेपर दे कुछ कापियाँ भी और 'मॉडरेशन' के लिए बुला ले, तो और अच्छा है।'

मैंने कहा, 'मै आपके ये सब काम डीन से करवा दूंगा। पर आपने मुझे पहचानने मे थोडी देर कर दी थी।'

बेचारे क्या जवाब देते? अशुद्ध 'बेवकूफ' मैं—मजा लेता रहा कि वे क्लास वन के अफसर नही चपरासी की तरह मेरे पास से विदा हुए। बडा आदमी भी कितना बेचारा होता है।

●

एक दिन मई की भरी दोपहरी मे एक साहब आ डटे। मई की भयकर गर्मी और धूप। सोचा कि कोई भयकर बात हो गई है, तभी वे इस वक्त आये है। वे पसीना पोंछकर वियतनाम

की बात करने लगे। वियतनाम मे अमरीकी बर्बरता की बात करते रहे। मै जानता था कि मै निक्सन नही हूँ, पर वे जानते थे कि मैं बेवकूफ हूँ। मै भी जानता था कि इनकी चिंता वियतनाम की नही है।

घंटे भर राजनीतिक बाते हुई।

वे उठे तो कहने लगे, 'मुझे जरा दस रुपये दे दीजिये।'

मैंने दे दिये और वियतनाम की समस्या आखिर कुल दस रुपयो मे निपट गयी।

●

एक दिन एक नीतिवाले भी आ गये। बडे तैश मे थे।

कहने लगे, 'हद हो गई। चेकोस्लोवाकिया मे रूस का इतना हस्तक्षेप! आपको फौरन वक्तव्य देना चाहिए।'

मैंने कहा, 'मै न रूस का प्रवक्ता हूँ, न चेकोस्लोवाकिया का। मेरे बोलने से क्या होगा?'

वे कहने लगे, 'मगर आप भारतीय है, लेखक है, बुद्धिजीवी है. आपको कुछ कहना ही चाहिए।'

मैंने कहा, बुद्धिजीवी वक्तव्य दे रहे है यही काफी है, कल वे ठीक उलटा वक्तव्य भी दे सकते है, क्योकि वे बुद्धिजीवी है।'

वे बोले, 'यानी बुद्धिजीवी बेईमान भी होता है?'

मैंने कहा, 'आदमी ही तो ईमानदार और बेईमान होता है, कुत्ता तो नही होता। बुद्धिजीवी भी आदमी ही है। वह सूअर या गधे की तरह ईमानदार नही हो सकता। पर यह बतलाइए कि इस समय क्या आप चेकोस्लोवाकिया के कारण परेशान है। आपकी पार्टी तो काफी नारे लगा रही है। एक छोटा-सा नारा आप भी लगा दे और परेशानी से बरी हो जाये।'

व्यंग्यचित्र : विनोद

आपके पास आया था। लडके ने रूस की लुलुम्बा यूनिवर्सिटी के लिए दरख्वास्त दी है। आप दिल्ली किसी को लिख दे, तो उसका सेलेक्शन हो जायेगा।'

मैंने कहा, 'कुल इतनी सी बात है? आप चेकोस्लोवाकिया के कारण परेशान है। रूस से नाराज है। पर लडके को स्कॉलरशिप पर रूस ही भेजना चाहते है।'

दया जाग गयी।

मैंने कहा, 'आप जाइए। निश्चित लडके के लिए जो मैं कर सकता हूँ, करूंगा

वे चले गये।

बाद मे मै मजा लेता रहा। जानते हुए बनने वाले 'अशुद्ध' वेवकूफ के अलग मजे है।

—हरिशंकर

एक पियक्कड झूमता हुआ एक मयखाने मे घुसा और बोला—यहा जितने लोग बैठे हुए है उन सब को एक-एक जाम मेरी ओर से दे दो। और हा, मैनेजर को भी एक जाम जरूर दे देना।

जाम सबके सामने पहुँच गये। पीने के बाद पियक्कड ने बताया कि उसके पास देने को एक नया पैसा भी नही है। मैनेजर को गुस्सा चढ गया और उसने पियक्कड को उठाकर बाहर फेंक दिया।

दूसरी रात उसी समय वह पियक्कड झूमता हुआ फिर उसी मयखाने मे पहुँचा और सौ रुपये का नोट मेज पर पटकते हुए बोला—सब लोगो को मेरी तरफ से एक एक जाम दे दो लेकिन उस वदतमीज मैनेजर को मत देना। एक जाम पीते ही वह मारपीट पर उतारू हो जाता है।

भूतपूर्व [भू. पू.] उर्फ एक्स

डॉ० प्रभाकर माचवे

हमारे देश मे भूत शब्द प्राणीमात्र के लिए प्रयुक्त होता है। शिव जी भूत-भावन है। भूत-दया का बडा मान है। 'जिहि सुमरत भूत सब भागे' वाले भूत सचमुच मे है या नही, हम नही जानते। पर इधर अपने यहाँ कई तरह के 'भू पू' जरूर चल गए है। परिचय यो दिये जाते है

'आप भूतपूर्व क्रातिकारी है' '

'आप भूतपूर्व मन्त्री है '

'आप भूतपूर्व सेनाधिकारी है·· '

'आप भूतपूर्व कवि या पत्रकार है' 'इत्यादि।

अब हम यह भी देखते है कि हर बूढा भूतपूर्व जवान रहा होता है हर जवान भूतपूर्व बच्चा। पर ऐसा कोई नही कहता--'जवानो को डाँटते रहते है—क्या बचपना करते हो जी ?' या बूढो को कहते है—'क्या दात गिरने पर भी शृगार के गीत गा रहे है ? साहित्य मे उल्टे 'चिर-यौवन' की बडी महत्ता है। 'अभी तो मैं जवान हूँ' हफीज जलधरी कहते कहते बूढे हो गये। कवि वह जो 'चिर-किशोर चिर-कुमार' रहे। 'प्रौढत्वी निज शैशवास जपणे बाणा कवीचा असे' (मराठी कवि ने कहा प्रौढता मे भी अपने शैशव को टिकाए रखना कवि का वाना है!) कवि लोग क्या-क्या बाल-सुलभ हरकते करते है, यह कवि-सम्मेलन जुटाने वाले प्रबन्धको से पूछिए। पर हमारे सामाजिक जीवन मे भूतपूर्व नरेशो की तरह भूतपूर्व देश-सेवको की काफी चर्चा होती रहती है। 'आप सन् ४२ के 'हीरो' है।' 'आपने सन् ३० मे जेल की तीर्थयात्रा की थी।' 'आप सन ३४ मे बम बनाते थे।' आप पहले क्या थे यह सब बखान उसी तरह होता है, जैसे पूर्व-जन्म मे आप अमुक ऋषि थे या अमुक राजा थे, कहने से पुराण-कथाओ का बोध होता है।

मुझे ऐसे कई भूतपूर्व क्रान्तिकारियो का पता है, जिन्होने पक्के मकान बना लिये है, जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य के हस्तक और मुखबिर रहे, जिन्होने 'क्रान्ति' को कभी का छोड दिया है, परम 'शान्ति' का वरण कर लिया है। पर वे कहलाते है अब भी आतकवादी' ही। अग्रेजी मे कहावत है—'वन्स ए प्रोफेसर आलवेज ए प्रोफेसर।' कभी एक बार प्रोफेसर रहे तो सदा के लिए वह उपाधि चिपक गई। अब बेचारे क्रान्तिकारी सेवा पर पुस्तके लिखते हो, या बीमा कम्पनी की एजेन्टी, आखिर क्रान्ति का उन्हे 'ठप्पा' लग चुका; वह क्या कभी उतर सकता है! वह वत्स-लाछन की तरह उनका वक्ष-हार बन चुका है।

अब 'भू पू' शब्द 'भोपू' से मिलता-जुलता है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी कहा करते थे—यह युग ही 'अपना भोपू वजाने वाले' लोगो का है। तूर्य (तुरही का भू पू.), पटह, सिगा (जिसका भू. पू शृंगी था), दमामा, ढोल, ढक्का आदि प्रचारवादी शब्द-प्रधान माध्यमो के रूप पुराने जमाने मे बहुत प्रचलित थे, जब आधुनिक साधन नही थे, जैसे माइक्रोफोन या 'वार्की-टार्की' आदि। महाकवि व्यास को 'महाभारत' लिखना था। डिक्टाफोन उनके पास नही था, न कोई स्टेनोग्राफर। तो उन्होने बुला लिया 'गणेश' जी को। प्रचार उस समय भी महापुरुषो (और महानारियो) को प्रिय था। पर साधन भिन्न थे। जैसे कोई कूटनयिक काम करना हो तो नारद मुनि उसके लिए सर्वथा उपयुक्त थे। प्रचार की पद्धतियाँ युगानुकूल वदलती रही है। पहले भाट-चारण, स्तुति-पाठक, दरवारी कवि आदि होते थे। अब यह सब वदल गया है। ब्रिटिशो के जमाने के खैरख्वाह और उपाधि-प्राप्त व्यक्ति अब अपने 'भू पू.' की कोई याद न दिलाए, इस काम मे लगे हैं। वैसे ही कई 'भू. पू' दल वदलने पर अपना रूप, वेश, मत और मन वदलते हुए नजर आते है।

कल्पना कीजिए कि किसी व्यक्ति की—साहित्यकार हो या राजनीतिक कार्यकर्त्ता—एक 'इमेज' लोगो के मन मे है। वह देशान्तर, रूपान्तर करले तो क्या होगा ? ऐसी कहानी कहते हैं, जो सच नही भी होगी। एक वार लाहौर मे देवेन्द्र सत्यार्थी विना दाढी मूँछो के पहुँच गए तो कॉफी-हाउस मे किसी ने उन्हे पहचाना ही नहीं। पन्त जी या इलाचन्द्र जोशी यदि कभी विना लम्वे वालो के सामने आ जाए तो उनका 'असामान्यत्व' नष्ट हो जाए। तो ऐसे मामलो मे 'भू पू' रूप वदलना मानने मे ग्लानी नही। नही तो आत्म-परिचय देने की मजबूरी पर उतर आना पडे।

आजकल पी-एच. डी. परीक्षा ज्यो-ज्यो आसान होती जा रही है, कई लोग बडा तंग करते हे, प्रश्नोत्तर के लिए प्रश्नावलियाँ भेज-भेज कर। कोई लिखता है 'आपने पहला प्रेम कब किया ?', 'कौन-सा आपकी रचना का प्रेरणा-विन्दु था ?' 'किसी महान् साहित्यकार का कोई पत्र हो तो कृपया भेजिए', 'कृपया अपनी रचनाओ की सूची भेजिए' आदि-आदि। ऐसे समय मेरे मन मे कई वार उठता है कि लिख भेजू—'भाई, जिस लेखक की आप बात कर रहे है वह 'भू. पू.' हो गया। अब यह उसका नया 'चोला' या नया 'अवतार' है। मैं अपने पूर्व-रूप को पूर्णतया भूल गया हूँ। यह सवसे आसान तरीका छुट्टी करने का हो सकता है। काश, साहित्यिको के पास कोई उपाय होता कि अपने पूर्व-कर्मो से वे जल्दी निजात पा लेते।

'भू पू' लोग अपने सस्मरण लिखने लग जाते हे। आत्म-कथाएँ और 'लिखाई हुई आत्म-कथाएँ'। इसमे बडी सुविधा यह है कि मृत व्यक्ति तो बेचारे 'कोन्ट्रैडिक्ट' करने आ ही नही सकते। मै प्रेमचन्द जी से एक-दो वार मिला, उन्होने मुझे लिखने की प्रेरणा दी—यहाँ तक तो सच है। पर अब मिर्च-मसाला लगा कर मै यह सब लिखने लग जाऊँ कि बनारस मे ही 'प्रसाद' और 'प्रेमचद' दोनो रहते थे। और उनमे एक-दूसरे को पान देते समय कैसी 'नोक-झोक' होती थी—तो वताइए कौन इस बात का विरोध कर सकेगा ? अधिकाश भूत-काल का पुनरावलोकन ऐसा ही पक्षपात से भरा हुआ होता है। इसलिए इतिहास को लोग अर्द्ध-सत्य कहते है। मै केवल परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि 'मुझे' वर्त्तमान ही रहने दे। 'भू पू' मत वना।
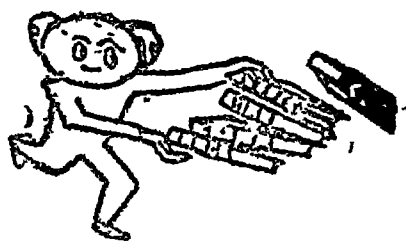
मेरा रंग दे बसंती [लाल] फीता

डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली

बसन्ती चोला पहनकर मातृभूमि के लिए आत्म-बलिदान के लिए अग्रसर होने वाले शहीद धन्य है जिन्होने मुझ जैसे साधनहीन के लिए भी शहादत का मार्ग खोल दिया। सरकारी फाइलो के लाल फीते से दुनिया को परेशान होते देखकर अब मैं उस फीते का रग बसन्ती कर देने के पक्ष मे हू।

मै सरकारी कार्यालय का एक अदना सा लोअर डिवीजनल क्लर्क हू। मानवीय सवेदना-जैसी चीज अब सभवतया मेरे जीवन से गायब हो गई है। अभ्यास की बात है साहब! अभ्यास और वैराग्य से मन का निग्रह तक हो जाता है फिर जीवन की ऐसी निहायत वाहियात चीज को मार भगाना कौन सी बड़ी बात है! आठ घटे तक रोजाना सरकारी कार्यालय मे पचशीत मे ठढाते-ठढाते काम नाम की चीज को हिम-शिला बनाकर हम लोगो ने तहखाने मे रख दिया है। प्राचीन ऋषि-मुनि पचाग्नि तापा करते थे। कदाचित् उस समय शीत अधिक पडती थी। आजकल पचशीत—पखे की ठंडी हवा, कूलर का शीतल वातावरण, खस की टट्टी की शीतलता, फ्रिज का ठडा पानी और ऊपर से ठन्डी लस्सी का पजाबी गिलास—से ठडाने की व्यवस्था है। आणविक परीक्षणो से संसार का तापमान बढ जाने के कारण यह सब आवश्यक हो गया है।

कभी उद्घाटन आदि के अवसर पर हम उसका एक टुकडा तोडकर सब के सामने रख देते है जिस से वातावरण शीतल ही नही स्निग्ध भी हो जाता है। श्वेत-परिधानधारी युगचारण इस पर हमारी कार्यक्षमता के गुणगान गाते-गाते नही अघाते। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे सरकार को जो प्रतिष्ठा मिलती है, उसका श्रेय मुझे और मेरे साथियो को मिलता है।

इस ससार मे मेरा अनुभव बडा गहरा है। मै बता सकता हू कि अनेक भवरो से बच कर नदी के किनारे पर पहुचे हुए तैराक को किनारे का लालच दे-दे कर इधर से उधर भटकाने मे कितना आनन्द आता है। एक बार एक सज्जन २५ मील पैदल चल कर कार्यालय मे आए। बोले—"बेटा, आठ वर्ष से पेंशन के कागज रुके हुए हे। आओ, आराम से चाय पीकर बतलाओ कि मुझे किस तरह ये कागज निकलवाने चाहिएं।"

मैने चायपान करके लम्बी डकार ले कहा—"बाबा जी, आप किसी तरह की फिकर मत कीजिए! यह काम मैं घटे भर मे करवा दूंगा। जरा साहब का मूड ठीक होने दीजिए।"

—क्रमशः

तब से बाबा जी रोज नही दो-चार दिन मे आकर आशीर्वाद देते रहते है। असीम विश्वास है उनका मुझ पर, परन्तु विवश हूँ, साहव का मूड ही ठीक नही रहता। एक दिन वावा जी कह गए है—"बेटे, मेरे पोते का नाम भागीरथ है। साहव का मूड ठीक होने पर उसको खवर कर देना। तुम अपने आदमी हो इसलिए कह रहा हू। मेरे जीवन मे तो ये कागज निकलेंगे नही। निकलने पर फैसला होगा तब तक तुम्हारी बुढिया दादी भी मर-खप जाएगी। मेरे बेटे के जीवनकाल मे ट्रेजरी बिल पास नही करना, इसलिए पेशन की भागीरथी को धरती पर लाने का श्रेय मेरे पोते को ही मिलेगा।"

उस दिन से वे सज्जन दिखाई नही दिए। सुनते हैं कि अब उनकी पेंशन का विल पास होने वाला है। वे पत्नी सहित स्वर्ग मे युग के भागीरथ को भागीरथी लाते हुए देख कर कितने आनन्दित हो रहे होंगे।

जो अनिद्रा रोग से ग्रस्त है, उनको मेरी सलाह है कि वे पलग के वजाय कुर्सी पर सोया करें और तकिया लाल फीते वाली फाइलो का लगाएँ। ऐसी सुविधा उन्हे सरकार के किसी भी कार्यालय मे विना शुल्क मिल सकती है। ऐसे लोगो को कामदिलाऊ महकमे मे पहले नाम लिखा देना चाहिए। मैंने कई वार गहरी निद्रा लेकर इस बात का अनुभव किया है कि घर पर कोई सतयुगी पतिव्रता भी पति की निर्बाध निद्रा का इतना ध्यान न रखती होगी, उससे कही अधिक ध्यान कार्यालय का चपरासी रखता है। शेषशायी विष्णु की निद्रा कभी-कभी दानवो की करतूतो के फलस्वरूप टूटती है, उसी प्रकार कभी-कभी वॉस की पुकार सुनकर मुझे भी जागना पड़ा है। परन्तु खाद या बीज लेने के लिए प्रार्थनापत्र देने वाले किसान के खेत मे फसल कट चुकी होती है या बाढ सुखाड़ के लिए व्यवस्था करने के लिए चली हुई फाइल को छह मास से अधिक व्यतीत हो जाते है या कई फाइलो मे अनाज की दो-दो फसले कट चुकी है।

ससार की परिवर्तनशीलता के साधारण नियम को भी ये वॉस लोग नही समझते।

पुराने जमाने की राज्य-व्यवस्थाओ मे फाइली-व्यवस्था का कही उल्लेख नही मिलता। आश्चर्य है कि तीनो कालो के ज्ञाता हमारे पूर्वजो को इसका ज्ञान कैसे नही हुआ! शास्त्रो के किसी आधुनिक भाष्यकार को भी इस व्यवस्था को शास्त्र प्रमाणित कहने की नही सूझी। इग्लैंड के एक प्रधानमत्री का सिद्धान्त था—सोते हुए कुत्ते को सोता रहने दो।

हम भी इससे प्रेरणा लेकर फाइल को यथा-स्थान सुरक्षित रख देते है। इधर या उधर जो कुछ होना है, वह तो हो ही जाता है। बेकार ही सिर पर आफत क्यो ली जाए। अगर हम फाइल को आगे सरका भी दे तो वह कही अन्यत्र जाकर रुक जाएगी। आप प्रश्न करेंगे कि आखिर यह फाइल रुक क्यो जाती है! मेरा अनुमान है कि इसका मनोवैज्ञानिक कारण है। आप ने मदमाते भैंसे को लाल कपडे से विदकते हुए देखा होगा। फाइल के कागजो पर लिखे हुए अक्षर कई नेताओ की दृष्टि मे भैंसे से भी वडे होते हैं। कम से कम भैंसे के वरावर तो वे निश्चित ही होते होंगे। कोई आश्चर्य नही कि वे लाल फीते से बिदक जाते हो और फाइल आतरिक सतुलन विठाए रखने के लिए चलती-चलती रुक जाती हो। अब तो लाल फीता मोटा होकर लाल रस्सा वन गया है।

मुझे लाल फीते वाली फाइल का तकिया लगा कर सोए हुए देख कर इस से यह न समझे कि मैं आपसे रुष्ट हू या आपके दुख को नही समझता। सच वताऊँ तो मेरी सवेदनशीलता मेरी

नही है, केवल पगु हो गई है । मै तो स्वयं लाल फीताशाही का शिकार हो चुका हू । बी. ए. कर के मैं एक स्थान पर साक्षात्कार के लिए गया । भाग्य से चुन लिया गया । कई दिन तक नियुक्ति नही हुई तो मैं घबराया । पता लगा कि वह स्थान तो किसी मिनिस्टर के भतीजे ने हथिया लिया है । आपने देखा होगा कि ऐसे अवसरो पर सिनेमा मे गीत गा कर आन्तरिक करुणा को अभिव्यक्त किया जाता है । सो मैं भी सडक पर चलता हुआ गुन-गुनाने लगा —'मुझे तो लूट लिया लाल फीते वाली ने ।'

गीत की यह पक्ति सुन कर एक खाकी परि-धान वाले ब्रह्मचारी ने रोक लिया और बोले—"नौजवान, तुम्हे कई दिनो से ढूंढ रहा था । चलो मेरे साथ !" मैं बेकार तो था ही । सोचा, इस से अधिक क्या होगा ! उन के साथ चल दिया । थोडी दूर चलने पर उन्होने दक्षिणा के दो रुपये मागे । मेरी जेब मे दो रुपये तो थे, परन्तु एक निगोडे ब्रह्मचारी को देकर खाली जेब कर देना मुझे अच्छा नही लगा । बेकार आदमियो से ऐसे ब्रह्मचारियो को दक्षिणा मागनी भी नही चाहिए । वे मुझे थाने मे ले गए । वहा उन्होने रिपोर्ट लिख-वाई कि मै किसी लाल फीते वाली लडकी को छेड रहा था और ऐसा मै रोजाना करता रहता हू ।

मैं इस आरोप से घबरा गया । मैंने कहा—"थानेदार साहब, मैं तो उस लाल फीते वाली फाइल के गुणगान कर रहा था जिसकी कृपा से मुझे नौकरी मिलते-मिलते रह गई ।"

थानेदार साहब ने तिरछे तेवर बदल कर मुझे डाटा और मेरी तलाशी ली । मेरी जेब का दो रुपये का नोट ले कर वे बोले—"देखो तुम्हारा अपराध बहुत बडा है । हम इस नोट की जाच कर-वाएंगे । तुम इसे जिस लड़की को देना चाहते थे, उसका नाम इस पर अवश्य लिखा हुआ होगा । तुम्हे बाद मे बुला लिया जाएगा । अब तुम जा सकते हो ।"

तब घर जाकर मैंने सबसे पहले सकट-मोचनी फाइल की स्तुति की—
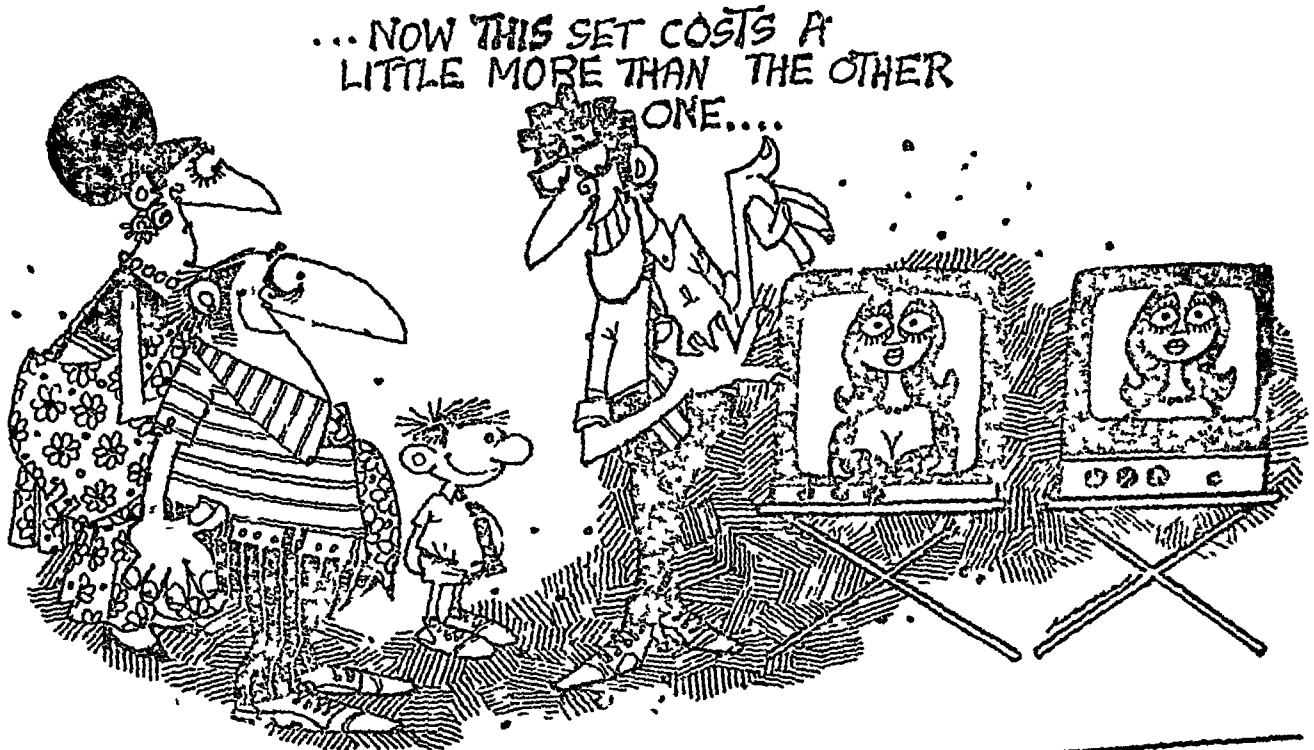
थाने को संकट आय परयो
तुम मोहि तो याहि से आज उबारो
तीनहुँ लोक मे राज करो माता
संकट मोचनि नाम तिहारो

आपको क्या बताऊँ—इस दिव्य देवी ने मुझे उबार लिया। पुलिस की फाइल आज तक आगे नही बढी। लाल फीता कही बिगाडता है तो कही बना भी देता है।

कार्यालय से ठंढाया हुआ घर पहुँचता हू तो नित्य मेरी पत्नी मुझ से एकान्त क्षणो मे प्रेम की गर्मी की आकाक्षा करती है। चूल्हे को गरमाने के लिए मुझसे लकडी मगवाना चाहती है। गर्म रजाई के लिए १५ तारीख के बाद तेल के लिए कहती है। समय पर आकर गर्म रोटी खाने के लिए कहती है। गर्म स्वभाव की होने के कारण न जाने क्या-क्या कह कर वातावरण को गरमा देती है।

गर्मी के मारे मै तो पसीने-पसीने हो जाता हू। कल तो इतनी गर्मा-गर्मी हो गई कि मैंने उसको साफ-साफ कह दिया—"यदि तुम्हें लाल फीते के साथ, जिससे मेरी यह दशा हो गई है, मेरा सम्पर्क पसद नही है तो या तो मुझे तलाक दे दो या मुझे फाइल मे लगाने के लिए बसती रंग के फीते रग दो जिससे उनका तकिया लगा कर सोते समय भी मुझे शहीदो से प्रेरणा मिलती रहे और मै इतना ठडा न रहू।"

यह सुनकर वह हँस दी। मेरी उचित माग को सरकार की तरह उसने भी नही माना। ●

"कैसी समीक्षा लिखी है तुमने, मेरी तो समझ मे नही आती।"

"कोई बात नही, करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।"

"लेकिन तुम कब तक अभ्यास करते रहोगे ?" ●

"ईमानदारी और नम्रता श्रेष्ठ गुण है, यह बोर्ड काउण्टर पर क्यो लगा रखा है, तुम्हारा मैनेजर तो बडा चालाक और मुँहफट है ?"

'साब, ये बोर्ड ग्राहको के लिये है।" ●

"एक कजूस आदमी का अपनी प्रकृति के विरुद्ध कार्य करने का कोई दृष्टान्त बता सकते है ?"

'हाँ, एक महाकजूस ने होटल मे चाय पी। कप मे मक्खी थी। उसने पैसे देने से इन्कार कर दिया। अन्तत झगडा यो सुलझा कि उसने चाय के तो नही, मक्खी के पैसे चुकाना स्वीकार किया।" ●

"आश्चर्य है तुम्हे मेरी पेंटिंग समझ नही आई, उसे तो कोई मूर्ख भी समझ लेता।"

"हाँ, हाँ उसे कोई मूर्ख ही समझ सकता है।" ●
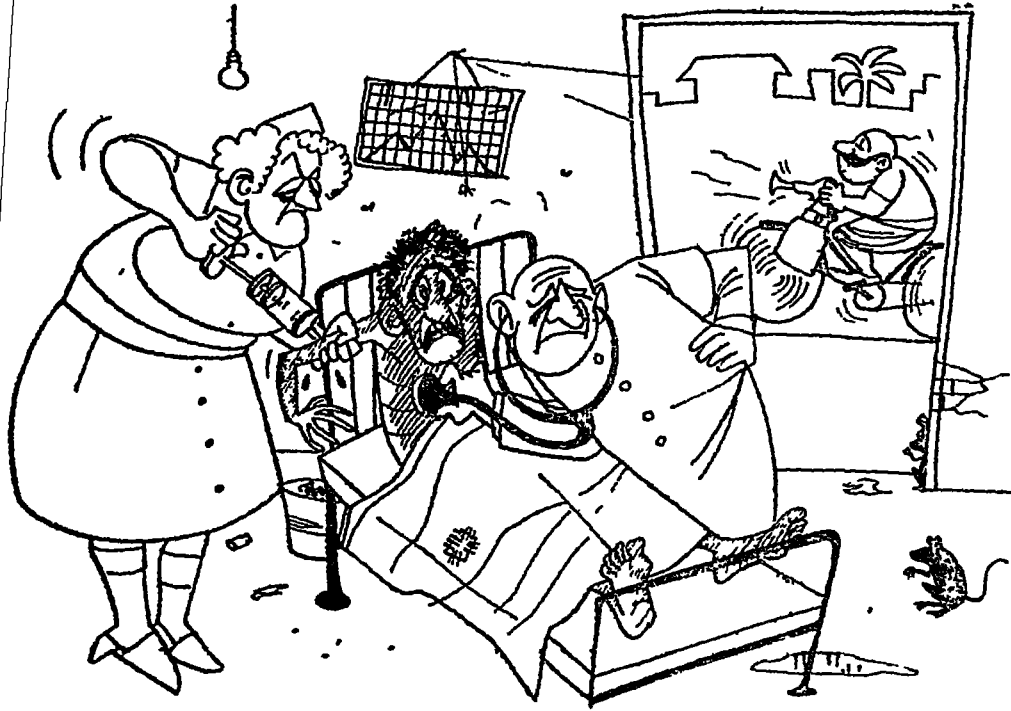
जनता का अस्पताल

डॉ. शिव शर्मा

(अस्पताल का शात क्षेत्र रात्रि भर गर्मी और मच्छरो से युद्धरत मरीज अभी-अभी सोये हैं। अचानक तोप के गोले के फटने-सी आवाज। दूध-वाले ने पूरी शक्ति से अपना भोपू दबाया। वह जानता है कि तभी निद्रामग्न मरीज जागेगे। भोपू बजता रहता है, जब तक कि नवजात शिशु तक कुलबुलाने न लगे। मरीज भयग्रस्त होते हैं। अस्पताल खुलने को है। वे सोचते हैं—काश, यह भोपू की आवाज जोधपुर के अस्पताल मे गिरे बम मे बदल जाये।

एक मरीज-सा दीखनेवाला व्यक्ति, दूध की तपेली ले कर दूधवाले तक जाता है। यह मरीज का सहायक है। यहा रहते हुए मरीज बन गया, वरना अच्छा-भला आया था।)

मरीज-सा व्यक्ति . (गुस्से मे) यह तोप-सा भोपू क्यो छोडते हो ?

दूधवाला · (मुस्करा कर) यह तुम रोज पूछते हो, तुम सब को 'टैम' पर जगाने के लिए।

मरीज-सा व्यक्ति : तुम्हे पता है कि इससे मरीज मर भी सकता है।

दूधवाला : अस्पताल से नही मरे, तो भोपू से क्या मरेंगे। फिर तुम मरीज न डाक्टर, क्यो पूछते हो ?

मरीज-सा व्यक्ति मै शिकायत करूगा। कल से घुसने नही दूगा।

दूधवाला . कई चले गये कहते-कहते, अस्पताल वालो को असली दूध जो पिलाता हूं।

(यह कहता हुआ वह फिर 'भोपू–भोपू' करता हुआ चला गया। मरीज-सा व्यक्ति अपनी तपेली से दूध-सा पानी देखता रहा। इतने मे अस्पताल के मेहतरो ने

सफाई के नाम पर, सारी धूल मरीजो के पलंगो से लेकर फेफड़ो तक मे भर दी।)

× × × ×

(थोड़ा उजाला होता है। काले वदन सफेद वस्त्र पहने हुए एक झुड आता है। इन्हे नर्स या सिस्टर कहते है। मरीज-सा व्यक्ति शिकायती मुद्रा, प्रतिदिन की तरह बनाता है।)

एक नर्स . तुम यहा 'लीडरशिप' क्यो करते रहते हो ? यह अस्पताल है विधान सभा नही ?

(मरीज-सा व्यक्ति शात हो जाता है। नर्सो को देख कर उसके हाथ-पैर ठडे हो जाते हैं।)

मरीज सा व्यक्ति : भोपू बजानेवाला नेता नही, मुझे बोलने पर 'नेता' कहा जाता है।

× × × ×

एक नर्स (दूसरी से) सिस्टर, बेड नम्बर तीन को कौन-सा 'प्रिक' करना है ?

दूसरी नर्स लाल रग वाली शीशी का। (स्पष्ट है कि उसे केवल रग का ज्ञान है।)

पहली नर्स (मोटा चश्मा चढाये हुए) वहा दो लाल रग की शीशिया है।

दूसरी नर्स दीखता नही तो 'रिटायर' हो जाओ। कोई भी लगा दो। मेरा सिर मत खाओ।

तीसरी नर्स . (जो स्टूडेट ट्रेनी है) सिस्टर, ट्वेंटी सी० सी० के लिए सिरिंज नही है।

दूसरी नर्स मैं क्या करू, 'टेन सी० सी०' से ही ठोक दो।

(एक मरीज के आसपास कई सिस्टर खडी है। जिस प्रकार [illegible] के छात्र, मेढक को कुछ नहीं समझते, वे भी मरीज को कुछ नही समझती। एक नर्स मरीज की नब्ज ढूढ़ रही है, जब कि नई नर्से बाहर झाँकती लग रही है। कई स्थान पर छेद दिया। उनका ध्यान कही और है।)

एक नर्स अरी, यह क्या कर रही है ? 'ब्लड' बाहर आ रहा है।

दूसरी नर्स . तो क्या करू 'टेन सी सी.' की सिरिंज को ठोक रही हू। इसलिए 'प्रिक' बार-बार निकाल रही हूं।

मरीज का सहयोगी (डरते हुए) नर्स जी, ४० सी. सी दवा अन्दर गयी और ६० सी सी. खून बाहर आ गया।

नर्स : कहो तो न लगाऊ बाहर से बुलवाओ।

मरीज का सहयोगी मेरा मतलब है कि बडी सिरिंज से लगाये।

दूसरी नर्स बडी सिरिंज 'एमरजेसी' मे गयी है। स्पेशल वार्ड मे कोई 'रेलेशंस' का केस है। सभी वहा लगे है।

\+ + + +

(जनरल वार्ड के मरीज दूध-सा पानी पी कर भूख महसूस कर रहे है। टकटकी लगा कर 'किचिन' की ओर देख रहे है। आबनूसी 'कुक' हाथ मे थूली की भगोनी लेकर आता है। यह पदार्थ मुफ्त दिया जाता है। अत एहसानवश प्रतीक्षा आवश्यक है। एक मरीज खाने की चेष्टा करता है।)

एक मरीज : यह गेहू की थूली है या भूसे की?

कुक : (नाराज हो कर) कभी तुम्हारे बाप ने भी गेहू खाया है ? घर पर यह नखरे लगाना। मुफ्त खाने को मिलता है तो यहा बघारते हो ?

दूसरा मरीज : कम से कम थूली तो मिली वरना फल और मक्खन तो तस्वीरो मे ही देखते है।

क्लर्क : चुप रहो, यहा खाने के लिए नही आये। खा-खा कर ही बीमार हुए। यह अस्पताल है। परहेज से चलना होगा। लो दस्तखत करो।

(वह मरीजो से अपने चार्ट पर हस्ताक्षर या अंगूठा लगवाता है। उसके कालम मे फल-फूल व मक्खन-अन्डे भरे हुए है। फल वालो के बिल आ गये है। उनसे रसीदे ले ली गयी है। पेमेन्ट हो गया है। अस्पताल वालो के बच्चो का स्वास्थ्य बढ रहा है। मरीजो का घट रहा है।)

+ + + +

(ड्यूटी डाक्टर, मजबूरी मे वार्ड का चक्कर लगाने आता है। वह अहसान-बोध से मरीजो को दबा रहा है। एकाध मरीज के 'बेड' पर रुकता है, जैसे कोई प्रधानमत्री विदेश-यात्रा मे एकाध बच्चे के गाल थपथपा देता है। एकाध मरीज देखना औपचारिक भी है। वह टेंपरेचर चार्ट देखता है। जैसे कोई भी व्यक्ति अपने विभाग की घटिया प्रदर्शनी को देखता है।

उस चार्ट मे, हर घटे का टेंपरेचर भरा हुआ है। वह मान लेता है कि सिस्टर ने यह ठीक भरा है। वह मरीज को टटोलता है। मरीज ठीक नही मिलता। चार्ट के अनुसार टेंपरेचर नही होना चाहिए। मरीज का सहायक बताता है कि हालत खराब है। डाक्टर बात उडा देता है। वह प्रति-दिन बहुत सुनता है। वह चार्ट पर विश्वास करता है। आगे बढ जाता है। मरीज को चार्ट के अनु-सार ठीक हो जाना चाहिए। कभी-कभी नही हो पाता। सिस्टर ने चार्ट ड्यूटी-रूम मे बैठ कर नही भरा है। यह मरीज के सहायक का भ्रम है।

वह दूसरे 'बेड' पर रुकता है। वह मरीज चिल्लाता है। कभी-कभी विरोधियो की ओर ध्यान देना अच्छा होता है। वह लबा 'प्रिस्क्रिप्शन' लिख डालता है। कपाउण्डर उस पर 'आउट आफ स्टाक' लिख देता है। मरीज का सहयोगी बाजार से दवाए लाने जाता है। अस्पताल के पास के 'ऑनेस्ट मेडिकल स्टोर' पर उसे ही दवाएं मिल जाती है। जो आधे दामो का अस्पताल है। आउट आफ स्टाक होकर यहा आती है, फिर वहा चली जाती है। इससे दवाए कम और 'टर्न-ओवर' ज्यादा बढता है। व्यापार मे टर्न-ओवर बढना आवश्यक है। खैर मरीज को दवाए मिल तो गयी।)

+ + + +

('सीरियस केसेज' का वार्ड है। एक मरीज को आक्सीजन देना है। गैस सिलेंडर है। आक्सी-जन खत्म हो गया। नर्स उसके मुह पर आक्सीजन नली ले जाती है। मरीज को क्या पता चलेगा कि आक्सीजन खुला छूट गया था।

दूसरे मरीज को ग्लूको-सलाइन चढाना है। अस्पताल मे 'सलाइन बॉटल' नही है। बाजार से मगायी जाती है। नर्से ठिठोली करती हुई बोतल चढाती है। लगता है जैसे कि वह किसी 'एक्समस-ट्री' पर गुब्बारा चढा रही हो। वे बोतल को हिलाती है। उसमे कुछ जम गया है। वे नली को छेडती है। उसमे भी कुछ गडबड है। बोतल के अन्दर कुछ फफूद-नुमा 'फगस' जम रहा है।)

मरीज का मित्र यह ग्लूको-सलाइन है या देसी ठर्रे की बोतल ? अन्दर कचरा जमा है।

एक नर्स · चुप रहो। डोन्ट डिस्टर्ब द पेशेंट। यह मिनिस्टर के सन की हैंडलूम फैक्ट्री की बोतल है।

डॉक्टर : थोडा तकलीफ देगी। क्या करें। 'स्माल स्केल इन्डस्ट्री' को बढावा देना हमारी पॉलिसी है। 'कन्ट्री' को आगे बढाने के लिए यह करना होगा।

मरीज का सहयोगी यह कहो कि आपके 'ट्रांसफर' और 'प्रापर पोस्टिंग' के लिए जरूरी है। मरीजों का क्या, कल और आ जायेंगे।

+

(४८ घन्टे की बेहोशी के बाद पता चला कि इस मरीज को ए-बी. ग्रुप के 'ब्लड' की जरूरत है। यह कहा से मिलेगा, पता नही। अस्पताल का रजिस्टर, जिसमे रक्तदान-दाताओ के पते लिखे थे, गायब है, 'ब्लड बैंक' यहा नही है। मरीज के घर वाले घूम रहे हैं।)

मरीज का सहयोगी डॉक्टर साहब, ए-बी. ग्रुप कहा मिलेगा ?

डॉक्टर : अस्पताल के सामने की सडक पर वहा कुछ बेकार युवक रक्त बेचने के लिए खडे होंगे। उन्हे पकड लाओ।

मरीज का सहयोगी कोई 'डोनर' नही मिलेगा ? फीस कितनी लगेगी ?

डॉक्टर : पैसा बचाना है या मरीज ? २५ रुपये ब्लड निकालने वाले को। २५ रुपये फिर मरीज को ब्लड भरने वाले को।

(अस्पताल के बाहर, मरीज का शुभेच्छु ए-बी. ग्रुप वालो की तलाश कर रहा है। बेकार युवक थक कर घर चले गये हैं। मरीज बेहोश पडा हुआ है। डॉक्टर नर्सों से बतिया रहा है। 'दरस और परस' का सुख भोग रहा है।

दूसरा डाक्टर, आपरेशन थियेटर से झल्लाता निकल रहा है। मरीज बेईमान निकला। 'आपरेशन टेबुल' तक फीस न दी, तो नही ही दी। मरीज भी 'स्ट्रेचर' पर प्रसन्न है। बिना चीर-फाड के नुकसान नोट रहा है।

+

(बेड नम्बर दस के रोगी का 'प्रिस्क्रिप्सन शार्ट' और 'यूरीन रिपोर्ट' डॉक्टर देखता है। वह नर्स को उसे 'स्ट्रेप्टोपेनीसिलीन' लगाने को कहता है।

इन्जीनियर का ट्रान्सफर

दफ्तर के दरवाजे पर
सावधान खडा था संतरी
बंद कर रखी थी एन्ट्री
क्योकि अदर--
चल रही थी क्रिकेट कमेंट्री।

तभी पी ए
अपनी नोट-बुक लिये
मुख्य अभियन्ता के पास आया
और शिकायत करने के लहजे में फुसफुसाया--
"सर, वह आपका विरोधी इंजीनियर
देर से आया है दफ्तर,
साथ मे लाया है ट्राजिस्टर.
आप यदि कहे तो अभी जाऊ
उसका ट्रांसफर-आर्डर टाइप कर लाऊं?"

कमेंट्री सुनते हुए
मुख्य अभियन्ता ने अपना मुँह खोला
और गुस्से मे पी ए से बोला--
"बढिया विकिट-कीपिंग
और शानदार बैटिंग पर
कभी नही हो सकता
'इंजीनियर' का ट्रासफर".

--जैमिनी हरियाणवी

मरीज कुछ पढा-लिखा है। वह बुखार मे भी सुन लेता है, नर्स के 'प्रिक का वह प्रतिरोध करता है। तीन दिन से उसका यही 'इलाज चल रहा है। उसकी हालत बिगडती जाती है। सिविल सर्जन आता है। तब पता चलता है कि वह तीन दिन पूर्व ही वहा आया है। उसे 'टाइफाइड' था और दवाए दूसरी दी जा रही है।

×

वार्ड के गलियारे भी भरे है। पहले मरीज इस 'गलियारे वार्ड' के मेहमान बनते है, 'बेड' खाली होने की प्रतीक्षा करते रहते है। इसी बीच अस्पताल के दलाल उर्फ समाज सेवक यह शुभ-सूचना देते है कि फला 'बेड' खाली हो गया। कमीशन के साथ 'बेड' का रिजर्वेशन हो जाता है।

प्रवेश-द्वार पर मरीजो का लम्बा 'क्यू' लगा है। ये 'लाइट पेशेंट' है। आउट डोर डॉक्टर भौचक हैं। उनके पास गर्दन उठाने की फुरसत कहा। वह सिर नीचे किये ही पूछता है।)

डॉक्टर (दोहराता है) : जबान निकालो।

मरीज (अचकचा कर): परन्तु मेरी तो टाग...

डॉक्टर : चुप रहो ! होशियार मत बनो। मैं डॉक्टर हू या तुम ! मैं कहता हू, वही करो। वरना आगे बढो।

(मरीज गुस्से मे पूरी जबान मय गले के बाहर निकाल देता है।

डॉक्टर मैंने गला फाडने को कहा था या कि जबान बताने को। कैसे-कैसे जाहिल है।

(दात के डॉक्टर का वार्ड। एक छात्रनुमा मरीज दात पकड कर खडा है। डॉक्टर उसे नही देखता।)

छात्र मरीज मेरा दात देख ले।

डॉक्टर . यहाँ की मशीन खराब है। दात दिखाना है तो यह 'कार्ड' लो। घर आ जाओ।

मरीज यह अस्पताल है या कारखाना ? मुझे तो यही दिखाना है।

डॉक्टर यहा गलत उखड सकता है।

मरीज दात निकालने की हथौडी होगी ? मैं अभी अपना और आप सबके दात निकाल देता हू। (डॉक्टर, छात्र मरीज को देखकर भागते है।)

(दिल का मरीज 'कार्डियोग्राम' के लिए हृदय रोग विभाग मे जाता है। वह डॉक्टर स्वयं 'हार्ट' का मरीज-सा लगता है।)

मरीज मेरा 'एक्स-रे' लेना है।

डॉक्टर मशीन बिगडी हुई है।

मरीज · फिर मैं क्या करू ?

डॉक्टर (चिढ कर) किसी फोटोग्राफर के यहा जाओ और अन्तिम फोटो खिचवा लो।

(दोनो के वाक्‌युद्ध मे 'ब्लड-प्रेशर' बढ जाता है। डॉक्टर और मरीज, दोनो ही बेहोश हो जाते हैं।)

+ + +

(अस्पताल के 'कम्पाउन्ड' मे ही 'दुआखाना' है। एक मन्दिर देवी चामुन्डा का और एक मस्जिद इस दुआखाने मे अच्छे 'केस' ठीक हो जाते हैं। जो अस्पताल से बचकर जाते है। निराश-हताश मरीज सोचता है।

एक मरीज अब मुझे चामुन्डा देवी के पास ले चलो।

शुभचिंतक अभी प्रतीक्षा करो। डॉक्टर ने दवा बदल दी है। पहले वाली दवाए नकली थी।

मरीज इस डाक्टर ने कहा है कि ये दवाए भी नकली हैं।

(अचानक डॉक्टर का प्रवेश। वह मरीज से पूछता है 'तुमने यह दवाए खायी ?')

मरीज आपने कहा न कि ये नकली है।

डाक्टर इससे क्या ? 'एक्सपेरीमेंट' तो होता। नुकसान नही होता। आज ही एक ने 'डायजाल' पिया। वह नही मर सका। 'डायजाल' नकली था।

(मरीज उठ कर भागता है। चामुन्डा के मन्दिर से कीर्तन तेज होता है। दवा खाने वाले पकडने को दौडते हैं। वह हाथ नही आता। वह अच्छा हो जाता है। शेष मरीज 'बेड' के लिए 'बुकिंग' कराते है। वे जीवन भर दवाखाने और दुआखाने के बीच 'स्ट्रेचर' पर लेटे हुए घूमते रहते है।)

अन्तर्देशीय कुत्ता विकास आयोजन

● शंकर नेगी

पिछले दिनो यह अफवाह उडी थी कि सरकार ने एक नयी योजना विचाराधीन रखी है, जिसके अनुसार कुत्तो के विकास को प्रोत्साहन मिलेगा। कुत्तो को अब तक बहुत ही नीच समझा जाता रहा है, और यह मनुष्य की भूल कही और समझी जानी चाहिये। उस समय तो हद हो जाती थी, जब उनकी उपमा किसी बुरे से बुरे आदमी के लिए दी जाती थी। इस पर कुत्तो ने बहुत बुरा माना। इसका प्रभाव उन पर इतना गहरा पड़ा कि बेचारो की पूँछ ही टेढी हो गयी, पर मनुष्य ने इस रहस्य को नही समझा।

जैसा कि कुछ कुत्तो की डायरी से पता चला, कुत्तो की पूँछ टेढी होने से मनुष्य आश्चर्य मे पड गये। पूँछ टेढी होने को घोर अपशकुन समझा गया। एतदर्थ एक 'पुच्छ वक्रता उन्मूलन समिति' बनायी गयी। समिति मे डाक्टर, नीमहकीम, जड़ी-बूटी वाले, झाड-फूंक वाले तथा होशियार कम्पाउडर आदि खोज-खोज कर शामिल किये गये। इन सबने कुत्तो की पूँछो को टटोल-टटोल कर देखा, पर कही टेढेपन का कारण नही मिला। तब यह उपाय सोचा गया कि कुत्ते की पूँछ को बारह वर्ष तक बास की नली मे रखा जाये। बारह वर्ष पूरे होने पर तथा तेरहवा लगने पर जब कुत्तो की पूँछे खींचकर बाहर निकाली गयी तो वे वैसी ही टेढी पायी गयी। बारह वर्ष के लम्बे इलाज मे अधिक इलाज करने की हिम्मत समिति मे नही थी, इसलिए उसने अपनी रिपोर्ट एक कहावत लिखकर प्रस्तुत कर दी कि 'कुत्ते की पूछ बारह वर्ष तक बास की नली मे रखी, तब भी टेढी की टेढी रही' और छुट्टी पायी।

अचानक ही पिछले दिनो जब रूस के कुत्ते ने अन्तरिक्ष की यात्रा की, तब समस्त संसार के कुत्तो की ओर लोगों का ध्यान खिचा। जनता के रुख को प्रोत्साहित

और उत्साहित करने के लिए सरकार ने अपनी कई योजनाओं मे एक इस योजना को भी फाइलो मे चला दिया कि कुत्ता जाति मनुष्य जाति से भी अधिक पहले से पिछडी हुई है, इसलिए अन्य पिछडी जातियो की तरह, बल्कि उनसे भी अधिक ध्यान कुत्ता कम्युनिटी पर दिया जाना चाहिये।

सरकार का ध्यान आदमियो की बजाय कुत्तो पर इसलिये गया कि कुत्तो की सेवाए राष्ट्रीय महत्त्व की हो सकती है। घोडे और खच्चर पहले से ही सरकारी स्तर पर और प्राइवेटली भी, जनता को अपनी सेवाए देते फिर रहे है और चूँकि कुत्ता भी 'फेथफुल' जानवर है, इसलिए इसकी सेवाओ से वचित रहना निहायत बेवकूफी की बात होगी।

हालाकि अब आगे अधिक उदाहरण देने की जरूरत नही थी, फिर भी एक उदाहरण और टिका ही दिया गया कि जैसे कुत्ते अपना पेट अपने आप पालते आये है, वैसे ही मनुष्यो का प्रोत्साहन न देने पर तथा वैसे ही छोड देने पर वे भी अपना पेट पाल ही लेगे। कुत्तो की तरह एक पेट मनुष्य के पास भी है और उसे भी कत्तो की तरह भूख लगती है, इसलिए कोई जरूरी नही है कि मनुष्य जाति को ही प्रोत्साहन दिया जाये। यह भी निचोड सामने रखा गया कि आदमी जितना अक्लमद है, उतना ही खतरनाक भी है, इसलिए उसकी जगह कुत्तो को भर्त्ती करना ही ठीक है। कुत्तो के पक्ष मे एक कहावत का स्मरण भी किया गया कि जो कुत्ते भौकते है, वे काटते नही, परन्तु जो कुत्ते भौकते नही, उनसे बचना चाहिये, वे समय देखकर अवश्य काट लेगे। इसी प्रकार चूँकि मनुष्य भौकता नही, चुप रहता है, इसलिए मनुष्यो से भी बचना चाहिये। इसके विपरीत कुछ छिद्रान्वेषी और दूरन्देपी सदस्यो ने इस योजना का विरोध भी किया। विरोध मे यह तर्क ऊंचा उठाया गया कि चूँकि कुत्ते एक दूसरे को
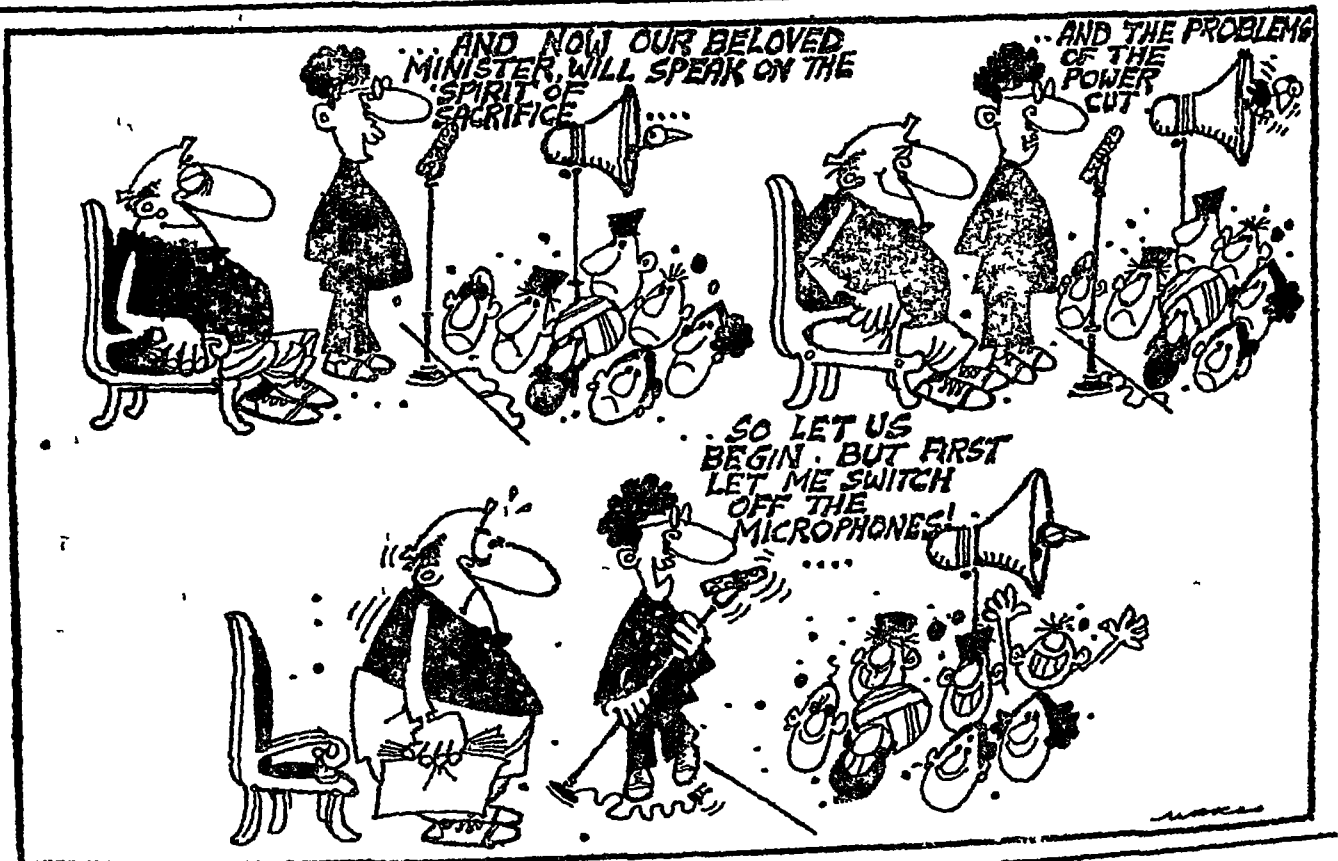
देखकर गुर्राते हैं, इसलिए कुत्तो को भर्ती करके प्रोत्साहन न दिया जाये। भविष्य मे जहा चार कुत्ते इकट्ठे होंगे, वही वे आपस मे गुर्रायेंगे और तू-तू, मैं-मैं करेंगे। इससे वैमनस्य फैलने की सभावना है। वैमनस्य बुरी चीज है और बुरी चीज को आदमजात जल्दी अपनाते हैं। हमेशा वैमनस्य से ही पार्टियो का जन्म होता आया है। हमारे यहा पहले ही से पार्टिया अधिक हैं, इसलिए नयी-नयी पार्टियों को फैलने के अवसर न दिये जाये।

एक समझदार सदस्य ने इस तर्क पर नमक-मिर्च पोतते हुए कहा कि चूंकि छोटी-छोटी वस्तुओ को मिलाकर बडी वस्तु पैदा होती है, इसलिए यह निश्चित है कि छोटी-छोटी पार्टियो से भी बडी राजनैतिक पार्टिया प्रकाश मे आ सकती हैं। इसलिए सरकार को छोटी पार्टियो पर रोक लगा देनी चाहिये। इसी सिलसिले मे सुझाव दिया गया कि यदि कही तीन या तीन से अधिक कुत्ते जमा हो तो उसे भी एक पार्टी माना जाये और उन्हे तुरन्त फ्लाइंग स्क्वाइड मगाकर थाने मे ले जाया जाये। चूंकि थाने मे कुत्तो को गिरफ्तार कर रखने मे बेवकूफी समझी जाने की सम्भावना है, इसलिए हर एक थानेदार को एक-एक कुत्ता प्राइवेट तौर पर घर ले जाने दिया जाये और कुत्ते की कीमत उनके वेतन से काट ली जाये।

चूंकि विरोध मे यही एक प्वाइन्ट पडा था कि कुत्ते एक दूसरे को देखकर गुर्राते हैं और इससे पार्टीबाजी फैलने का डर है, तो कुत्तो की योजना के समर्थक सदस्यो ने इस प्वाइन्ट का यह कहकर खण्डन किया कि साल के आखिर मे जब कुत्तो की कॉन्फिडेन्शियल रिपोर्ट दी जाए तो उसमे यह भी एक कालम रखा जाये कि फला कुत्ता दूसरे कुत्ते को देखकर गुर्राता तो नही। यदि वह गुर्राया हो तो उसका प्रमोशन ठप्प कर दिया जाये।

आशा की जाती है कि विरोधी मत वालो को डरा-धमका कर ठीक कर लिया जायेगा और योजना सर्व-सम्मति से पास करा ली जायेगी।

यह भी हवा है कि प्रस्ताव पास हो जाने के बाद इसका एक अलग विभाग खोला जायेगा जिसके अधिकारी यू. पी एस सी. के द्वारा भर्ती किए जाएगे। इनकी क्वालिफिकेशन यह होगी कि उन्हे भोटिया नस्ल का कुत्ता होना चाहिए, या फिर उन्हे अग्रेज मेमों के कुत्तो के रूप मे रह चुकने का अनुभव होना चाहिये। यदि कोई बारीक नस्ल का कुत्ता मेमसाहब का कुत्ता न रहा हो तो वह किसी भी असली या नकली मेम से झूठा सर्टिफिकेट ला सकता है और यू पी. एस सी के फार्म चुरा करके भर सकता है तथा रजिस्टर्ड पोस्ट से सम्पूर्ण सामग्री ठीक-ठाक करके भेज सकता है। वैसे भी जिन कुत्तो की तगडी सिफारिश होगी, उनको न तो सर्टिफिकेट की जरूरत होगी और न नस्ल-वस्ल के ही बखेडे की आवश्यकता होगी, उनको सादर वैसे ही भर्ती कर लिया जायेगा।

आगे यह भी तय हुआ कि चूंकि चपरासी कुत्ते और अफसर कुत्ते मे पहचान करना कठिन होगा, अत प्रत्येक कुत्ते की पूंछ पर एक हल्की तख्ती लटका दी जायेगी और उस पर उसका पद और नाम अकित होगा। कुत्ते की हुकनुमा पूंछ तख्ती लटकाने मे सुविधाजनक रहेगी, इसलिए मसौदे के अन्त मे 'पुनश्च' करके ईश्वर को धन्यवाद दिया गया कि उसने कुत्ते की पूछ टेढी करवा दी, इससे तख्ती के खो जाने का खतरा काफी हद तक दूर हो चुका है।

मुन्ने का जेब-खर्च

❁

अञ्जनी चौहान

•

वे मेरे घर मे लगभग इस मुद्रा मे घुसे मानो आवेश का तपता हुआ इन्जन पटरी छोडकर घडबडाता आ गया हो। याद है, उन्हे आवेश लम्बे अन्तराल देकर आता रहता है। उनके आवेश से ड्राइग-रूम गर्म होने लगा। उनकी सूरत से लग रहा था कि वे राशन की लाइन मे सीधे चले आ रहे है, नम्बर आने से पहले दुकान बन्द हो जाने की वजह से।

हाफते हुए बोले, "साहब, हद हो गयी। मेरे मुन्ने का जेब-खर्च बहुत बढ गया है। वर्तमान सत्र मे उसने एक सौ उनतालीस रुपये सत्रह पैसे खर्च कर दिये। अभी-अभी टोटल किया और सीधा आपके पास आ रहा हू।"

मै निवेदित हुआ, "आखिर आपके मुन्ने के मामले मे, मै कर भी क्या सकता हू ?"

कहने लगे, "मै चाहता हू कि मुन्ने के जेब-खर्च के लिए सरकार अलग मे बाल-भत्ता दे।" कुछ देर रुक कर वे फिर बोले, "इधर सविधान मे सशोधन की पवित्र परम्परा अबाध गति से चल रही है। मुन्ने के जेब-खर्च को लेकर यदि एक सशोधन विधेयक पारित हो जायगा तो सरकार का क्या बिगडेगा ?"

जब वे गये थे, उस समय दोपहर के बारह बज चुके थे। आशा के विपरीत शाम चार बजे वे पुन. आये। इस बार उनके साथ उनकी धर्मपत्नी, दो बेविया और एक अदद वह वस्तु भी थी, जिसे मुन्ना कहते है।

उस मुन्ना नामक पदार्थ को देखा तो मेरे रोगटे खडे हो गये। वह अपने धूल-धूसरित पावो को सोफे की गद्दी पर समेट कर उछलने लगा। प्राक्कथन के बतौर वे कहने लगे, "यही है वह मुन्ना, जिसका जेब-खर्च बहुत बढा हुआ है।" उन्होने जेब से डायरी निकाल कर देखी और कहा, "इसने एक साल मे उनहत्तर रुपये पचास पैसे की तो चाकलेट ही खा डाली।"

मैंने देखा कि मुन्ने ने अपने 'पिताजी' की बात पर तत्काल काउन्टर एक्शन दिया और चाकलेट का एक टुकडा मुह मे डाल लिया। मैंने उनकी धर्मपत्नी से कहा, "कहिये भाभी जी, इधर कैसा चल रहा है ?" कहने लगी, "हम मुन्ने के जेव-खर्च को ले कर बहुत परेशान हैं भाई साहब ! बडा जिद्दी है। बिना चवन्नी लिये स्कूल जाता ही नहीं।" मुन्ना हथेली की चवन्नी को उचकाने लगा, जब कि वह स्कूल से नही आया हुआ था।

मैं फिर पस्त। सोचा, बेबी से बात करू। कहा, "आपके एम. ए. के पेपर कैसे रहे ?" जवाब मिला, "हिस्ट्री का पेपर बिगड गया। जिस दिन पेपर था, मुन्ना डेढ रुपये का माउथ आर्गन ."

मैं समझ गया कि इस परिवार के समुद्र मे मुन्ने की हैसियत सातवे अमरीकी बेडे की तरह है। सारा परिवार मुन्ने की तरह है, सारा परिवार मुन्ने से त्रस्त है। मुन्ना इन सब के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। मैंने अवैतनिक सलाहकार मुद्रा मे उनसे कहा, "भाई साहब, बुजुर्गो का कहना है कि मुन्ना भगवान की देन है। इस देश की धर्म-परायण जनता भगवान के नाम पर हजारो रुपये फूंक देती है। फिर भगवान का भेजा हुआ मुन्ना अगर साल मे सौ-दो सौ रुपये खर्च करवा देता है, तो आपको चिंतित नही होना चाहिए।" पर वे सतुष्ट नही हुए और बोले, "आप लेखक है, बुद्धिजीवी है। आप लोग आवाज उठाइए कि सरकार एक बाल-भत्ता आयोग गठित करे और उनके प्रतिवेदन पर विचार करके बाल-भत्ते का शीघ्र वितरण करे।"

मै सिर झुकाये उनके अन्तहीन सुझावों को सुनता रहा। उनका मुन्ना ड्राइंग रूम मे काच की गोलियाँ खेलता रहा। उनकी बेबियाँ अपने-अपने स्वेटर बुनती रही। वे अपनी धर्मपत्नी के साथ डायरी मे कुछ देर बाद जोड बाकी मे व्यस्त हो गये। वक्त बीतता रहा। कमरे मे रह-रह कर खट्, खन्न और छन्न की आवाजें गूंजतीं रही। पाच घन्टे के अनवरत सत्सग के बाद उनका परिवार मुन्ने के साथ विदा हो गया।

उनके जाने के बाद मैंने ड्राइंग रूम की हालत पर गौर किया। रेडियो के तीन बैंड-स्विच अपने नित्य-कर्म से हमेशा के लिए निवृत्त हो चुके थे। फर्श गीला था। सम्भवत मुन्ना भी एकाध निजी नित्य-कर्म सार्वजनिक धरातल पर निबटा कर गया था। काच के गुलदस्ते का दिल मुन्ने की मुहब्बत से टूट कर टुकडे-टुकडे हो चुका था। शो-केस के ऊपर रखे नेवले का पेट मुन्ने ने नृसिंह अवतारनुमा मुद्रा मे चीर दिया था, जिससे बुरादा शिमले मे गिरती बर्फ की तरह झर रहा था। मुझे लगा कि यदि सरकार ने शीघ्र ही मुन्ने के जेब-खर्च को ले कर कोई प्रभावकारी कदम न उठाया, तो मैं एक दिन उनके मुन्ने के आवेश का शिकार हो जाऊंगा।

बुरी लत

नेता जी ने अपने पुरखो का नाम रोशन करने के लिए एक स्मारक बनवाया। उद्घाटन का दायित्व उन्होने स्वय ग्रहण किया। वे चाहते थे कि किसी कवि की राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत एक कविता भी खुदवा दी जाये। सोचा, यह गौरव अपने ही किसी आदमी को क्यों न दिया जाय ? उन्होने अपने पुत्र गोवरधन को बुला भेजा। नेता पुत्र उस समय नशे मे धुन था।

नेता जी ने पूछा, 'क्यो रे, तू कुछ कविता वगैरा लिखता है ?"

"नो-नो.... बाबूजी .. हर्गिज नही, मैंने तो वह बुरी लत कब की छोड दी।" पुत्र ने घबरा कर कहा।

तीन मिनी कहानियाँ .

श्रीमती मगरमच्छ की दिल्लगी

एक बार फिर बन्दर और मगरमच्छ मे दोस्ती हो गई। बन्दर रोज मीठे-मीठे जामुन अपने दोस्त को खिलाता और उसकी बीबी के लिए भी देता। जब से मगरमच्छ जामुन लाने लगा था, उसकी श्रीमती खुश रहने लगी थी। खुश रहने का फल यह हुआ कि श्रीमती मगरमच्छ श्रीमान मगरमच्छ से शक्तिशाली हो गई। शक्ति सम्पन्न होते ही वह मगर से नाराज रहने लगी।

मगर ने बहुत कोशिश की मगर मगरी की नाराजगी दूर न हुई। उसने अपने पूर्वजो की याद की और बन्दर से मिलने के लिए वह किनारे की ओर चल पडा। मगर को आया देख बन्दर बोला—"दोस्त, आज तुमने आने मे बहुत देर कर दी क्या भाभी ने नही आने दिया ?"

मगर बोला—"हाँ यार, तेरी भाभी ने नाक मे दम कर रखा है। कहने लगी कि तुम बन्दर भाई के पास रोज जाते हो और जामुन खा कर आते हो, उन्हे एक दिन भी अपने गरीबखाने पर नही लाए। उन्हे आज ही लाओ वरना मैं तुमसे नही बोलूँगी। मेरे प्यारे दोस्त, पत्नी का न बोलना, बोलने से ज्यादा खतरनाक होता है। आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ। जल्दी चलते है, देर होने से, वह कही मुझसे और नाराज न हो जाए।"

बन्दर ने मछलियो से सुन रखा था कि श्रीमती मगरमच्छ बहुत खूबसूरत और दिलचस्प है। वह मगर की पीठ पर बैठ गया। झील के बीच मे मगर का घर था। श्रीमती मगरमच्छ मेकअप-पर्व समाप्त कर बरामदे मे बैठी ही थी कि मगर और बन्दर पहुँच गए। मगर बोला—"प्रिय, यह वही बन्दर है जिसके जामुन हम रोज खाते है। तुमने इतिहास मे पढा होगा कि तुम्हारी एक नानी की नानी की नानी ने जामुनो वाले बन्दर का दिल खाने की इच्छा की थी। उस समय के बन्दर ने उन्हें चरखा दे दिया था। हम दोनो तो बचपन से ही हिन्दी फिल्मे देखते रहे है, भला बन्दर हमे कैसे ठग सकता है!"

मगर का यह प्रणय-सवाद सुन कर बन्दर का कलेजा फटने के लिए उतावला होने लगा। श्रीमती मगरमच्छ कुछ बोली नही, लेकिन बन्दर को तिरछी चितवन से देखती रही। श्रीमती मुसकराई और बोली—"तुम्हारे पास जामुन के कितने पेड है ?" बन्दर ने सोचा कि अन्तिम समय है, अत डीग मारने मे क्या हर्ज है। फिल्मी हीरो की अदा से एक टाँग नचाते हुए और पूछ को रूमाल की तरह हिलाते हुए बोला—"अभी तो पाँच सौ के करीब है। मेरे डेडी के पास एक हजार पेड है। वे भी कुछ ही दिनो मे मेरे होने वाले है। कुल पन्द्रह सौ समझो!"

'पन्द्रह सौ!" कहते हुए श्रीमती मगर ने लिपिस्टिक ठीक की और काजल-अन्जी आँखो को नचाते हुए कहा—"प्यारे मगरमच्छ, तुम मूर्ख के मूर्ख ही रहे। इतनी हिन्दी फिल्मे देख ली, मगर अक्ल से काम लेना नही आया। इतने अच्छे दोस्त का दिल कही खाया जाता है ? उससे दिल लगाया जाता है। तुम घर-बार सम्भालो, मै इनके साथ जामुन खाने जा रही हूँ।"

श्रीमती मगरमच्छ ने बन्दर की तरफ हाथ बढाया। बन्दर जी पहले ही से तैयार बैठे थे। मगर की पीठ से सीधे मगरी की पीठ पर छलाग लगा दी। श्रीमती तीर की तरह किनारे की ओर चल पडी।

बेचारा मगरमच्छ! इस अनहोनी से इतना हतप्रभ हुआ कि यह तथ्य भी न बता सका कि बन्दर के पास केवल एक पेड है और उसका भी राष्ट्रीयकरण होने वाला है।

—गोविन्द शर्मा

एक प्रेम-पत्र—घासलेटी

मेरे प्राणों की प्राण, सब्जी की जान, पूरियो की अन्नदाता, ओ वनस्पति घी की पिपिया ! तुम अचानक कहाँ गुम हो गई ? तुम्हारी याद मे रोना आ रहा है लेकिन आँसू नही निकल रहे। तुम्हारे बिना मेरा तो मेरा, पत्नी से लेकर बच्चो तक का बुरा हाल है। मैंने तुम्हे कहाँ-कहाँ नही ढूँढा ? मैं आफिस मे 'अटैन्डेंस' लगा कर, तुम्हारी एक झलक पाने के लिए, राशनकार्ड लेकर सारे शहर मे घूमा। सुपर बाजार से लेकर सदर बाजार तक, चाँदनी चौक से लेकर महरौली तक, जहाँ-जहाँ तुम्हारे आने की खबर मिली, लोकल बसो के पायदानो पर लटका, बिना टिकट पहुँचता रहा। मगर तुम किसी के गोदाम मे जाकर इस तरह छिप गई कि अब स्वय भी निकलना चाहो तो नही निकल सकती।

उस दिन मैंने सुना कि कल तुम मेरे मार्केट मे 'सेतूराम जी' की दुकान पर आ रही हो। तुम्हे इस तरह लाने के लिए किसी लोकल नेता ने जी-तोड कोशिश की है तो मैं खुशी से फूला नही समाया, सारी रात सो नही सका। तुम्हारी मनोहारी छवि मेरी आँखो मे रात भर घूमती रही। दैनिक क्रियाओ से निवृत्त हुए बिना, तुम्हारे दर्शन की उत्कट अभिलाषा लिये राशनकार्ड हाथ मे दवाए बाजार मे आ गया, काफी दिनो से उवली हुई सब्जी खाते-खाते मुझे तुम्हारा महत्व मालूम पड गया था। बाजार मे आते ही मैंने देखा कि तुम्हे पाने के लिए हजारो हाथ, राशनकार्ड दवाए खडे थे। लाइन मँहगाई की तरह बढती ही चली जा रही थी, लोग एक-दूसरे को धक्का देकर आगे आने की कोशिश मे थे।

सूरज सिर पर आ चुका था। बारह बज रहे थे। तुम अभी तक नहीं आई। मेरी एक 'कैजुअल लीव' की हत्या मेरे सामने ही हो रही थी। जनता ने हल्ला मचाना शुरू कर दिया था। लाइन मे खडे तुम्हारे एक प्रेमी ने अपने आगे वाले प्रेमी से पूछा—"आप यहाँ कब से खडे हुए है भाई साहब ?"

"हम तो यही पैदा होकर बडे हुए है भाई साहब", उसने खीसे निपोरते हुए कहा।

वही हुआ जिसका मुझे डर था। शाम हो गई, लेकिन मेरा नम्बर नही आया। दुकानदार ने वनस्पति घी की समाप्ति की घोषणा कर दी। तुम दरवाजे से नही आई, पीछे वाली खिडकी से जाती रही। मैंने तुम्हे पीछे की खिडकी से जाते हुए कई वार देखा था। कुछ धुले कपडे पहने हाथ तुम्हे ले जा रहे थे। उनके हाथ काले थे। खिडकी मे भी अन्धेरा था। मै व्यग्य लिखते-लिखते अन्धेरे मे देखने का अभ्यस्त हो गया हूँ। उजाले मे मेरी आँखे चु धिया जाती हैं। मैं थका-हारा घर लौट आया था। मेरी आँखो से आँसुओ के परनाले बह रहे थे। उस दिन मै तुम्हारे लिए फूट-फूट कर नही, बिलख-बिलख कर रोया था। मेरे पिताजी का जब स्वर्गवास हुआ था, मै शायद तब इतना रोया था। मैं रो रहा था, मेरी पत्नी मुझे चुपा रही थी।

अरे ओ पत्थर-दिल ! तूने मुझे बहुत रुलाया है, बहुत सताया है। तेरी याद मे मेरी राते आँखो मे कटी है। तेरे बिना मुझे सारा ससार सूना लगता है। मित्र, पत्नी और नातेदार दुश्मन नजर आते है।

हाँ, एक वात और, इस पत्र को पढ़ कर फाड देना। कही तुम्हारे मालिक के हाथ पड गया तो मुश्किल हो जाएगी। वह न तुम्हे गोदाम से बाहर आने देगा, न मुझसे मिलने देगा। हम दोनो 'काली रात' मे ही मिल सकते हैं। मेरे विचार से 'काला बाजार' ही ठीक रहेगा। वहाँ कोई नही होता और यदि होता भी है तो देखा-अनदेखा कर देता है। वस एक ही तमन्ना है कि तुम जल्दी से जल्दी आ जाओ।

—हरिओम 'बेचैन'

इंजीनियर साहब का एक दिन

—उपकार चोपड़ा

हमारे पडोस मे एक इंजीनियर साहब रहते हैं। बडे ही मिलनसार आदमी है। हर बात तकनीकी अन्दाज मे कहते है। इससे इस बात का पता चलता है कि तकनीकी विषयो का उन्हे अच्छा-खासा ज्ञान है। आइए, हम आपको इंजीनियर साहब के घर ले चलते है, ताकि आपको भी थोडा-बहुत तकनीकी ज्ञान हो सके।

सवेरे के सात बज चुके है। इन्जीनियर साहब ऐसे खर्राटे ले रहे है जैसे दस हॉर्स पावर की मोटर चल रही हो। दूसरी तरफ उनकी श्रीमती उनको उठाने का असफल प्रयत्न लगभग आधे घण्टे से कर रही है। इन्जीनियर साहब भी कभी इधर करवट बदल लेते है तो कभी उधर। श्रीमती जी उन्हे अन्तिम बार बडी तेजी से झिझोडती हुई कहती हैं—"सवेरे के आठ बज चुके है, कब तक यह मोटर चलती रहेगी ? उठो भी! क्या आज फैक्टरी नही जाना ?"

फैक्टरी का नाम सुनकर इन्जीनियर साहब उठ कर बैठ गए और श्रीमती जी पेट्रोल उर्फ 'बेड टी' का प्याला पकडा कर जैसे ही जाने लगी तो इन्जीनियर साहब को अपने छोटे साहबजादे के रोने की आवाज सुनाई पडी। वह चिल्लाए—"अरे, ओ टरबाइन!"

श्रीमती जी उल्टे पैरो वापस लौट आई और तुनकती हुई बोली, 'क्या है ?'

"सवेरे-सवेरे सायरन बजना शुरू हो गया है। दिन भर बजता रहेगा ? प्लीज, इसे डिस्कनेक्ट कर दो। बिना मतलब के कान खाए जा रहा है।"

"क्या ?"

"अरे भई, मेरा मतलब है कि अपने छोटे नवाबजादे को चुप कराओ।"

श्रीमती जी पैर पटकते हुए चली गई। इनकी तेज चाल के कारण ही इन्जीनियर साहब इनको टरबाइन कहते है।

●

जिस सज्जन ने यह जूता फैंक के मारा है
उसे मेरा धन्यवाद दे दिया जाये।
कृपया वह दूसरा भी फेंक के मारे,
ताकि जोडी पहनने के काम आये॥

— व्यंगचित्र : प्राण

कुर्सी मुझे मिल जाए....

● राजेन्द्र प्रसाद

(तर्ज पन्ना की तमन्ना है . फिल्म हीरा-पन्ना)

'नेता की तमन्ना है कि कुर्सी मुझे मिल जाए
चाहे थोडा धन जाए चाहे थोडा मान जाए।'

'कुर्सी तो पहले ही किसी और की हो चुकी,
किसी की मद-भरी आंखो मे खो चुकी
सब्र से काम ले ख्वाबो को भूल जा।'
'उसकी मैं जेब भर दूं पद जो मुझे दिलवाए,
चाहे थोडा धन जाए चाहे थोडा मान जाए।'
नेता की तमन्ना है कि....

दल तो बदलते है तजते है लोग कई बार,
क्या हुआ मकबूल गर, बदल लिए कुछ बार
नारो को छोड दे, वादो को तोड दे।'
मन्त्री-पद मे कैसे नेता कोई हट जाए
चाहे थोडा धन जाए चाहे थोडा मान जाए।'
'नेता की तमन्ना है कि..
कुर्सी....कुर्सी....कुर्सी....

कमजोर आंख वाला एक और मरीज नेत्र विशेषज्ञ के पास आया। जब वह बोर्ड पर लिखा एक भी अक्षर नही पढ सका तब डाक्टर ने तंग आकर एक थाली उसके सामने रख दी।

'क्या तुम देख सकते हो कि यह क्या है?' डाक्टर ने तंग आकर पूछा।

'चवन्नी या अठन्नी है, और क्या है।' मरीज ने थाली को घूरते हुए बताया।

कवि महाशय घर लौटे तो श्रीमती जी ने उन्हे आडे हाथो लिया –"तुमसे कुछ भी होता है? दो रुपये दिये, एक रुपये की शक्कर और एक रुपये की चाय लाने को कहा, वो भी न ला सके?"

"भई बात यह हुई..." कवि महाशय ने बताया, "कि मै भूल गया था कौन से रुपये की शक्कर लानी थी और कौन से की चाय!"

होली है आखिर ..

होली है आखिर मनाना पडेगा
मजबूर है दिल मिलाना पडेगा

सडे डालडे की तली पूडियाँ हैं
वो कहते है अपने को खाना पड़ेगा

सूरत पे बारह बजे है मगर वो
कहते है ढोलक बजाना पडेगा

उडी चाय पीकर के होटल से मैना
मुहब्बत मे बिल तो चुकाना पडेगा

बढा लो बढा लो अभी बाल अपने
औलाद होगी घुटाना पडेगा

उन्हे चाय पर जब बुलाया गया
तो कहा आज ठर्रा पिलाना पडेगा

यूँ हो गया है 'मिनी' उनका 'स्तर'
उन्हे अब 'मिनिस्टर" बनाना पडेगा

वो दिन नही दूर जबकि वतन में
होली मे घर को जलाना पडेगा

अप्रतिबद्ध

प्रभु जोशी

दो निर्धन अचानक एक जगह मिल गये। पहले ने दूसरे को भरपूर निगाह से देखा और बोला, 'भाई, लगता है, आप मुझ जैसे ही है आइए, हम दोनो मिल कर उन तमाम लोगो के लिए कुछ करे, जो हम जैसे ही है।'

यह सुन कर दूसरे का चेहरा थोडा असहज हो आया। फिर वह सयत हो कर बोला, 'माफ कीजिए, आप गलतफहमी मे है। मै वैसा नही हू, जैसा आप समझ रहे है ...।'

पहले ने निर्णयात्मक स्वर की दृढता से कहा, 'मुझे इसमे दोबारा सोचने की कोई गुंजाइश ही नही लगती। आप साफ-साफ मुझे अपने ही लोगो जैसे लग रहे है।'

दूसरा उसके इस प्रतिकार से आहत हो उठा और बोला, 'देखिए, मैं आपको फिर समझा रहा हूँ। मै वो नही हूँ, जो आप समझ रहे है। मेरे चाचा के चाचा के चाचा की जमीदारी मे चवन्नी की हिस्सेदारी थी। और इस समय मेरे मामा के चाचा के चाचा बहुत बडी पोस्ट पर है।'

पहला उसके इस तर्क से बिल्कुल अप्रभावित रहते हुए बोला, 'खैर, आपके चाचा के चाचा के चाचा जमीदार भी रहे हो, और आपके मामा के चाचा के चाचा चाहे कितनी भी बडी पोस्ट पर हो, मुझे उनसे कतई मतलब नही है। मै सिर्फ आपकी बात कर रहा हूँ और आप मुझे सौ फीसदी अपने ही लोगों जैसे लग रहे है। इसीलिए आपसे कह रहा हूँ, आइए हम अपने जैसे लोगो के लिए कुछ करे। वक्त बहुत कम रह गया है।'

दूसरा इस वक्त तक थोडा गर्मी पकडने लगा था। बोला, 'देखिए, मै आपको फिर समझा रहा हूँ। मै वो कतई नही हूँ, जो आप समझ रहे हैं। आप मे और मुझ मे बहुत फर्क है। देखिए, आपके पैरो की चप्पले निहायत ही घटिया किस्म की है। और मेरे पैरो मे जूते है।

पहला उसके इस कथन से उसी तरह लापरवाह बन कर बोला, 'देखिए, वक्त बहुत कम रह गया है ...बहस की गुंजाइश नही है। फिर मेरी चप्पलो की किस्म घटिया होने से कोई खास फर्क नही पडता। बाकी इस समय आपके जूते भी घिस कर मेरी चप्पलो की कीमत के ही रह गये हैं और इसीलिए मै आप से कह रहा हूँ कि आप मुझ जैसे ही है....

चलिए, जल्दी से मेरे साथ हो जाइए. ..'

दूसरा अब बेकाबू होने को आया था। आवाज मे सख्ती भरते हुए बोला, 'तुम और मै एक जैसे कतई नही हैं। बहुत फर्क है। चलो मेरे घर चल कर देख लो, मेरे बिस्तर पर बैड-शीट है। मैं जानता हूँ, तुम्हारे बिस्तर पर बेड-शीट तो क्या, गद्दा भी नही होगा, समझे।'

पहला बहुत ठडे लफ्जो मे उसी तरह बोला, 'देखिए, इससे कोई फर्क नही पडता। चूंकि, दुनिया मे ऐसे लोग भी है, जिनके गद्दे की कीमत आपके घर के सारे सामान के बराबर होगी .. इसीलिए मै कह रहा हूँ, आप और मुझमे कोई फर्क नही है....आइए, वक्त बर्बाद मत कीजिए ..' और उसने दूसरे की कलाई पकड ली।

दूसरे के सब्र का बाध टूट गया। उसने झटका देकर पहले से अपनी कलाई छुडा ली और गुस्से से भर कर बोला, 'आप मुझे बहुत देर से जलील कर रहे है....मुझे बहुत देर से गालिया दे रहे हैं.... मेरी बेइज्जती कर रहे है। मै अभी आपकी चमडी उधडवा दूंगा. . आपने मुझे समझ क्या रखा है।'

और वह तेजी से कदम बढाता हुआ वहा से हट गया। ●

सैल करादे रै

● जैमिनी हरियाणवी

अरै निगोडे दिल्ली की मनै सैल करादे रै
कार-वार मे ना वैठूँ, ठेलो मँगवादे रै
'लाल-किलो', 'घर को घण्टो', जाऊँगी 'कुतवी-किल्ली'
उस किल्ली पै चढ करकै, देखूँगी सारी दिल्ली
उस किल्ली पै वैठ मेरी फोटू खिचवादे रै.....

'चौक-चाँदनी' मे घूमूँगी जणूँ निधाई घोडी
फिर 'अशोक के होटल' मे खाऊँगी चाट-पकोडी
'कनाट के सर्कस' मे आधी रात वितादे रै......

खोल घूँघटा चालूँगी तू चाहे जित ले जाइये
रोज रेडवा वोलै सै वस वीवी फिलम दिखाइये
हम दोनो कमरे मे वन्द, चावी गुमवादे रै ..

मनै सुण्या सै हिप्पी-हिप्पिण घूमे सै दिल्ली मे
उनकी सूरत इसी बतावै, फरक नही बिल्ली मे
इक हिप्पिण तै देवरया की जोट मिलादे रै......

छब्बीस जनवरी के परेड भी ओ साजन दिखलाइये
राष्ट्र-पति की पत्नी तै अपणी पत्नी मिलवाइये
वीच इण्डिया-गेट के मेरी खाट विछादे रै......

इन्दिरा गाधी के वैठण की जागा मनै दिखाइये
जिग तै सारे मरद डरै उस नारी तै मिलवाइये
उसी कुर्सी के नीचे की धूल चटादे रै........

'**क्या** आपको वे अक्षर दिखाई पड रहे हैं।' कमजोर नजर वाले मरीज से डाक्टर ने पूछा। 'कौन-से अक्षर?' मरीज परेशान हो कर बोला। 'वही जो पहली पक्ति में हैं।' 'कैसी पक्ति?' 'वही जो उस वोर्ड पर है।' 'कैसा वोर्ड?' 'वही जो दीवार पर है।' 'कैसी दीवार?'

एक सज्जन रेस्तरा मे वैठे चाय-डवलरोटी खा रहे थे कि एक दूसरे महाशय नमस्कार कर आ खडे हुए। पहले सज्जन ने उत्सुकता से पूछा—"आप मुझे पहचानते हैं?"

उत्तर मिला—'जी आपको नही, आपकी छतरी को। पिछले साल यह मेरे पास थी।"

सरकारी महकमों की होली

श्री कुँवरजी

पिछले दो-चार दिनो से मचने वाली होली का हुडदग जब इस हालत तक जा पहुँचा कि बेचारे सीधे-साधे लोगो का राह चलना तक दूभर हो गया, टोपियाँ, पगडियाँ उछलने लगी, कीचड कादा पडने लगा और गोरे-गोरे मुँह कालिख से साने जाने लगे, तब हमेशा सजीदगी लादे रहने वाले, पथरीले-बर्फीले दिलो-दिमाग से काम करने वाले सरकारी महकमे भी अपने दिल पर काबू न रख सके। उनका दिल भी कुछ ऐसा मचला, कुछ ऐसा उछला कि एक वार वह भी बडे जोर से चिल्ला पडे—"होली है !"

आवाज डाक-तार विभाग के मुँह से निकली थी। चिल्लाने के बाद सकपकाकर उसने जब चारो तरफ घबराकर देखा तब अपनी ही तरह वही पर जल-कल विभाग, बिजली-विभाग और सार्वजनिक निर्माण-विभाग आदि को भी खडा देखा। हमजोलियो को देख उसने खीसें निपोर दी।

उन लोगो ने झट से आपस मे तय किया कि उन लोगो को भी होली मनाने निकल पडना चाहिए। सबसे भारी भरकम होने के कारण डाक-तार विभाग को इस गिरोह की लीडरी मिल गई। बस, फिर क्या था? इस नए मसखरो की टोली होली मनाने निकल ही पडी!

आगे-आगे चले, अपना लाल-लाल गोल-मटोल लैटर-बाक्स वाला पेट लेकर डाकराम। उनके पेट के पास से निकले हुए छोटे हाथ-पावो को देखकर अपने आप ही हसी छूटने लगती थी।

डाकराम ने सब को एक सजे-सजाए बगले के चोर-बराभदे मे ले जा कर खडा कर दिया और बोले—"अब देखो मेरा मसखरापन!"

अन्दर कमरे मे एक पति-पत्नी मे बडी जोर-जोर से झॉय-झॉय हो रही थी। पत्नी बिसुरती हुई बरस रही थी—"महीना का महीना हो गया, कही पता ही नही था जनाब का! चार दिन को कह कर गए थे और सवा महीने बाद सूरत दिखाई है। यहाँ रो-रो कर जान आधी रह गई। देवी-देवता मनाते-मनाते जुबान घिस गई और आप से यह भी नही हो सका कि चार पैसे (पुराने वाले) का पोस्टकार्ड भी डाल देते! छोड दो ऐसी नौकरी जो घर-बार छुडाने पर तुली हो।"

पति बेचारे सफाई देने लगे—"मैने मैनपुरी से चिट्ठी डाली तो थी कि कम्पनी ने ट्यूअर प्रोग्राम बढा दिया है और अब मै दस-बारह शहरों का दौरा करने के बाद लौटूगा। यह भी लिख दिया था कि आते-आते यह महीना भी बीत जाएगा।"

'देखो झूठ न बोलो," आँखे तरेरकर और अगुली नचा कर पत्नी बोली—"भेजी थी तो क्या किसी ने हर ली? ऐसी छैल छबीली थी तुम्हारी चिट्ठी।"

पति बेचारे बारम्बार कसमे खा कर हलफ़नामा दाखिल कर रहे थे और पत्नी महोदय उन्हे छलिया-रंगिया बता-बता कर उसे बार-बार नामञ्जूर किए जा रही थी।

आखिर मे हार माने हुए पति महोदय ने चुपचाप अपनी गलती कबूल कर लेने और माफी माग लेने मे ही अपनी भलाई समझी।

उधर डाकराम का हँसी के मारे बुरा हाल था और मुंह मे हाथ ठूंस-ठूंस कर बडी मुश्किल से अपनी खी-खी-खी-खी रोक रहे थे और साथियो से कह रहे थे—"देखा, एक चिट्ठी के हेर-फेर करने से कैसा मजा आया।" अब तो जल-कलप्रसाद को भी जोश आ गया था। उन्होने सब को न्यौता दिया अपनी करामात देखने का। हो-हल्ला मचाती टोली दूसरी तरफ बढ चली। रास्ते मे कविवर उतावलाजी एक ओर से आ रहे थे और सम्पादकाचार्य बखेडिया जी दूसरी तरफ से आ रहे थे। दोनो ने एक दूसरे को देखा और देख कर भी न देखने का बहाना किए हुए अपने-अपने मुँह दूसरी तरफ घुमा लिए और एक दूसरे के बगल से मन-ही-मन यह कहते हुए निकल गए—"हुँह! कैसा घमण्डी है? पत्र का उत्तर तक नही देता। देख लूँगा उस को भी।"

और डाकरामजी के मुँह पर मुस्कियाँ छूट रही थी।

जल-कलप्रसाद के पीछे-पीछे आती टोली बाबू नर्मदाप्रसाद के घर मे जा कर छिप गई। बाबू नर्मदाप्रसाद एक तो होली की छुट्टी का सदुपयोग करने की दृष्टि से और दूसरे पत्नी से रात मे हुए झगड़े मे सुलहनामा दाखिल करने की गरज से घर की लिपाई-पुताई मे पत्नी के साथ जुटे हुए थे। सिर से ऊपर से नीचे तक मिट्टी-कीचड़ मे सने-पुते खड़े थे। इसी मे बारह की घंटी बजने पर उन्होने तय किया कि घर नहा-धोकर दफ्तर चल देना चाहिए। छुट्टी मे दफ्तर जाने पर भाडा मिलने का जुगाड था। उन्होने सोचा, थोडी देर को तो दफ्तर हो ही आना चाहिए। सरकारी पैसा बिल्कुल हराम मे लेना ठीक नही!' और सारा टिंडी-धागडा वही छोड-छाड कर कपडे उतार कर झट से नल के नीचे पहुँच गए और टूंटी खोल दी। जल-कलप्रसाद ने अपने साथियो की ओर एक आँख दबा कर देखा और चुटकी बजा कर बोले—"अब देखो बच्चू को कैसा मजा चखाता हूँ!" नर्मदाप्रसादजी नल के नीचे बैठे थे और उसकी टूंटी सूं-सूं कर रही थी। पानी गायब था। बाबू नर्मदाप्रसाद खीझ रहे थे और बाहर चपरासी चीख रहा था—"बाबूजी! जल्दी चलिए, साहब ने दफ्तर बुलाया है।"

बाबू नर्मदाप्रसाद को उछलते-कूदते देखकर और जल-कल-विभाग पर बरसते देखकर टोली फौरन वहाँ से रफू-चक्कर हो गई और पडौस के एक मकान मे जाकर बसेरा लिया। वहाँ पहली-पहली होली पर आए एक जमाईराज अन्दर नल लगे माडर्न शौचालय मे बगैर पानी लिए निवृत्त होने को घुस गए थे और जल-कलराम अपना करिश्मा दिखा बैठे थे। जमाईराज बेचारे शौचालय के अन्दर बगैर पानी के फडफडा बजा-बजाकर, उछल-उछल कर नाच रहे थे और जल-कलप्रसाद ने तो मारे खुशी के भागडा शुरू कर दिया था।

अब बारी थी बिजली महाराज और सार्वजनिक निर्माण-विभाग की। उन्होने अपने करिश्मे रात मे दिखाने का वायदा किया। इसलिए टोली विसर्जित हो गई।

शाम को होली फिर निकली। चौराहो पर जगह-जगह लकडी के बडे-बडे कुन्दे इकट्ठे करके होली जलाने का सामान इकट्ठा किया जा रहा था। लडको की टोलियाँ, "होली है! होली है!"

दार और बुजुर्ग भी घरो मे ही बैठकर आनन्द रहे थे। रेडियो से झर-झर झर-झर फागुन रहा था। दस बजने के साथ-साथ तमाम रेडियो के पास मक्खियो की भाँति भिनकने थे। दूर दिल्ली से हास्य-गोष्ठी प्रसारित की वाली थी। कार्यक्रम का समय हुआ और उन्सर महोदय ने तमाम श्रोताओ को अपने ष्ठी-स्थल चलने का न्योता दिया और हास्य-ष्ठी शुरू हो गई। सुनने वाले हँसी के मारे लोट-ट होने लगे, उनके पेट मे बल पडने लगे। कार्य-म दस पन्द्रह मिनट ही चला होगा कि रेडियो वता बोलते-बोलते एकदम खामोश हो गए। दो-एक बार सूं-सू और सी-सी आदि विचित्र तरह की सीटियो की आवाज आई, समझे रेडियो जी शायद मसखरी कर रहे है। थोडी देर बाद एनाउन्सर महोदय कल-पुर्जों की गडबडी के कारण कार्यक्रम न सुनापाने के लिए खेद प्रकाश रहे थे और श्रोतागण हास्य-गोष्ठी के स्थान पर सुन रहे थे—'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम!'

बिजली महाराज बार-बार आँखे झपका-झपका कर साथियो को इशारे कर रहे थे। अब टोली जो वहाँ से आगे बढी तो बिजली महाराज ने सबके कानो मे न जाने क्या फुसफुसाया कि सारे शहर मे अधेरा छा गया। वही पर मरम्मत के लिए खोदी गई सडक पर हुए गड्ढे के बगल मे लगे नल मे कुदाली की चोट से हो गए भारी छेद से निकलता पानी भर रहा था। अधेरे मे गुजरते लोग छपा-छप उस मे गिर रहे थे और ये लोग दूर खडे तमाशा देख रहे थे। जो भूला-भटका उस गड्ढे मे गिर जाने से बच जाता या उसे फूटे पाइप के छेद से निकलती तेज धार ऊपर से नीचे तक तर कर रही थी।

थोडी देर मे रोशनी वापस आ गई और टोली बाजार मे आ गई। होली जलाने का समय हो गया था। युवको की टोलियाँ मतवाली-सी हो रही थी। इधर-उधर से तमाम चीजे ला-ला कर होली मे झोक रहे थे। इन लोगो को भी जोश आ गया। जब सभी फूंकने-तापने मे लगे हुए थे। तब ये लोग ही क्यो पीछे रहते! इन लोगो को और कुछ न मिला तो सार्वजनिक धन-सम्पदा की ही होली जलाना शुरू कर दी और बार-बार चीखने लगे—"होली है!" ऐसे, जसे पागल हो गए हो। इतने मे उधर से आ गया रक्षा-विभाग। उसने इन लोगो को फटकारा—"यह भी नही समझ है कि होली मे क्या जलाना चाहिए और क्या नही जलाना चाहिए?" इधर लोगो को होली मे मस्त देखकर कुछ पाकिस्तानी और चीनी लुटेरो ने देश की आन लूटनी चाही थी। यह देखिए, मै इन्हे पकड कर लाया हूँ। चलिए, इनका होली मे दहन करे! साथ ही आज आपसी भेद-भाव, फूट, देशद्रोहिता को भी होली मे जला कर भस्म कर देना है।" इतना सुनते ही पुलिसदयाल जी, जो आने-जाने वाले लोगो से पाँच-पाँच पैसा वसूल कर होली का चन्दा जमा कर रहे थे फौरन इन दुष्टो को पकड लाने के लिए भागे।

सवेरे खूब धूम-धाम से होली खेली गई। तमाम को चारो तरफ होली-मिलन हो रहा था। इन लोगो का मन भी लोगो से मिलने को ललचा रहा था, पर मिले कैसे? सभी को तो वे लोग तग कर चुके थे। सबसे अलग-अलग कटे-कटे फिर रहे थे कि इनके पास श्वेत वस्त्र-धारिणी एक छाया-सी आई, जिसके चेहरे से तेज टपक रहा था। वह इन सरकारी विभागो की आत्मा थी। उसने इन लोगो को गलती समझाई और कहा—"खुद आगे बढकर जनता से मिलो।" जनता और सरकारी विभाग दोनो एक-दूसरे के गले मिल गए और दोनो के मन का मैल धुल गया। फिर दोनो ने साथ-साथ बैठ कर प्रेमपूर्वक जलपान किया और निश्चय किया कि अगले वर्ष पहले से तैयारी करके ज्यादा धूम-धाम से होली मनाई जाए। इस बार जल्दी की वजह से बहुत-से सरकारी विभाग इसमे शामिल ही नही हो पाए, उनको अगले वर्ष इस गिरोह मे सम्मिलित करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। ●

तबस्सुम के चुटकुले

●

एक मकान पर 'किराये को खाली, का बोर्ड लगा हुआ था, तथा साथ ही यह भी लिखा था कि यह मकान सिर्फ उन लोगो को ही दिया जायेगा, जिनके वाल-वच्चे न हो।

एक दिन एक वच्चा मकान मालिक के पास आया और वोला, 'मेहरवानी करके यह मकान मुझे दे दीजिए मेरे कोई बाल-बच्चा नहीं है, सिर्फ माता-पिता है।"

●

एक मालिक को अपने नौकर पर बहुत भरोसा था, और उसने तिजोरी की चाविया भी नौकर को संभाल कर रखने को दी हुई थी। एक दिन मालिक ने तिजोरी की चावी मांगी, तो नौकर घवरा गया। वहुत ढूढने पर भी चावी नही मिली।

मालिक ने नौकर को वहुत डाटा कि मैंने तुम्हे चाविया सभाल कर रखने को कहा था और तुम इतने लापरवाह हो कि तुमने चाविया गुम कर दी अब क्या करूं? अच्छा लाओ, वे डुप्लीकेट चाविया कहा है, जो मैंने तुम्हे दी थी!

नौकर सिर खुजाने लगा और वोला, "वह तो मैंने वहुत सभाल कर रखी है।'

"अच्छा तो लाओ, वहीं से लाओ!" मालिक ने कहा।

"जी! वे तो तिजोरी के अन्दर बन्द है।"

●

मास्टर "मोहन बताओ, बांगला देश कहां है?"

मोहन. "जी नोवल्टी सिनेमा मे।"

रमेश ' नही मास्टर जी, बांगला देश एटलस के तेरहवें पृष्ठ पर भी है।"

●

"आनेवाले 'कल' को अग्रेजी मे क्या कहते है?" उस्ताद ने शागिर्द से पूछा।

"टुमारो"- जवाब मिला।

उस्ताद "शावाश! अब बताओ 'परसो' को अग्रेजी मे क्या कहते हैं?"

शागिर्द: "टुमारो पर एक और मारो।"

●

मा. 'अरे बेटा, यह तुम 'बल्ब' अपने सिर पर क्यो रगड रहे हो?"

बेटा "मां! मै अपना दिमाग रौशन कर रहा हूं।"

●

चार महिलाए बैठी यह फैसला कर रही थी, कि लता की शादी मे वे किस-किस रग की साड़ी पहन कर चले।

मधु . "मेरे पति तो जवानी मे ही बूढे हो गये , सारे बाल सफेद हो गये है, इसलिए मै तो फेद साडी पहन कर ही जाऊगी।"

रीता . "मेरे पति के तो बाल काले है। मै तो काली साडी पहनूगी।"

आशा "मेरे पति के बाल तो हल्के ब्राउन हैं, इसलिए मै तो ब्राउन रग की ही साडी पहनूगी ।"

पूनम ने जोर से सिर पर हाथ मारा, "हाय ! मै क्या करू ! मेरे पति तो बिल्कुल गजे है !"

एक मरीज एक आंखो के डॉक्टर के पास आया और बोला, "डॉक्टर साहब ! मुझे हर चीज एक की बजाय दो दिखाई देती है।"

डॉक्टर ने उसकी तरफ अगुली से इशारा करते हुए पूछा, "तो क्या आप चारो को यही शिकायत है ?"

एक बार एक डॉक्टर के दवाखाने मे एक गवार किस्म का मरीज आया और बात-बात मे वह तैश मे आ गया। वह डॉक्टर को भद्दी-भद्दी गालिया देने लगा। डॉक्टर बहुत देर तक सुनता रहा, फिर धीरे से बोला, "तुम स्ट्रेप्टोमाइसीन, तुम्हारी नाक क्लोरोमाइसिन, तुम्हारा सिर पेसीलीन, तुम्हारी टागे टेरामाईसीन. ..

गवार यह सुन कर खामोश हो गया और चुपचाप दवाखाने से बाहर निकल गया।

युवती . मै उस व्यक्ति से शादी करूंगी, जो मेरी इज्जत बढा सके, गाना गाये, चुटकुले सुनाये, धुन बजाये, नाचे और रात को घर मे आराम करे"

युवक "ओह तो आपको पति नही टेलीविजन सेट चाहिए"

—सरस्वती

'इस डिबिया मे क्या रखती हो तुम ?'

'एक स्मृति ! अपने पति का एक बाल।'

'किन्तु तुम्हारे पति तो अभी जीवित है ?'

'हा, मगर उनके सिर पर अब बाल जो नही रहे !'

—द्विजेन मालवीय

'तो तुम्हारी नौकरी छूट गई'

'हा'

'क्यो ? मेल नही हुआ ?'

'हा'

'किसमे ? तुम मे और मालिक मे ?'

'नही ! कैश-बुक और कैश मे'

—मधुप पाण्डेय

कुछ लडकिया संगीत प्रेमी होती है। बाकी बिना संगीत के ही प्रेम कर लेती हैं।

— सुशील कपूर

यूनिवर्सिटी ऑफ मॉडर्निटी

रविन्द्रनाथ

नोट सभी प्रश्न आवश्यक है, किन्तु किसी एक का ही प्रतिवादी उत्तर पर्याप्त हो सकता है।

१. भारतीय भाषाओं को पुराणपन्थी रूढिवादी अक्षम और गवार सिद्ध करते हुए प्रतिपादित कीजिये कि अंग्रेजी ही एक ऐसी भाषा है, जो भारतीयो मे आधुनिकता की चेतना का सचार करती है। अपने उत्तर को वेत्ताओ और शिक्षाविदो के मतो से पुष्ट कीजिए।

२ धोती, पाजामा, कुर्ता, साडी, सलवार पहनने की हानिया बतलाते हुए पेंट-कोट तथा स्कर्ट की वैज्ञानिकता एव उपयोगिता पर प्रकाश डालिये। कंठ-लगोट (नेकटाई) तथा 'मिनी स्कर्ट की विशिष्टता का प्रतिपादन करना अनिवार्य है।

३ भारतीय फिल्मो को कूडा सिद्ध करते हुए "मै अंग्रेजी फिल्मे ही क्यो देखता हू" विषय पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखिये।

४ हिप्पियो के (नंगे पत्ते के सन्दर्भ मे) जीवन-दर्शन की विशेषताए स्पष्ट करते हुए बतलाइये कि स्त्री-पुरुष मे कोई अन्तर नही। 'जहा नारी की पूजा होती है। वहा देवता निवास करते है' इस ढोंग की पोल खोलिये। (उत्तर एक अंग्रेजी कविता के रूप मे भी दिया जा सकता है।)

५. किसी एक शीर्षक पर लेख लिखिये—

(क) पुरानी पीढी (बुड्ढे-खूसट) नई पीढी की दुश्मन है।

(ख) अंग्रेजो के आने से पूर्व भारत असभ्य देश था।

(ग) भारतीयता की बात करना संकुचित मनोवृत्ति का परिचय देना है।

(घ) फ्रायड, सार्त्र, कामू, काफ्का ही आधुनिकता के जनक है।

६ यूरोप के देशो और अमेरिका का सविस्तार गुणगान करते हुये स्पष्ट कीजिए कि उनके राजनीतिक, सामाजिक, एव आर्थिक आदर्शों पर चले बिना भारतीय उन्नति नही कर सकते (भौगोलिक और सास्कृतिक कारणो से दृष्टि हटाकर विचार किया जाना अपेक्षित है।)

७ यदि आप निम्नलिखित परिस्थितियो मे पड़ जायें तो क्या करेंगे (दिये गये उत्तरो मे से ठीक पर निशान लगाइये) ?

(क) गर्ल-फ्रेंड के साथ सिनेमा जाते समय कोई परिचित मिल जाता है—

सिटपिटा जायेंगे। तपाक से कहेगे यह मेरी 'कज़िन' है।

(ख) यूनिवर्सिटी लायब्रेरी की सीढिया उतरते समय जानबूझ कर लडकी से टकरा सकते है—

'सॉरी' कहकर मुस्कराते हुए खडे रहेगे। किंकर्तव्यविमूढ हो जायेगे।

(ग) माता-पिता आपके विवाह के लिए बात-चीत करते है तो—

उनकी बात समझने की कोशिश करेंगे। साफ-साफ कह देगे कि यह मेरा पर्सनल मामला है इसमे दूसरो को दखल देने की जरूरत नही।

(घ) अश्लीलता के विरोधी लोगो मे पड जाते है तो—

उन्हे जाहिल और मूढ समझ कर चुप रह जायेंगे। उनके तर्कों पर मनन करेंगे।

(ङ) मन्दिर गुरुद्वारे के सामने से गुजरते है, तो—

उसमे बैठे लोगो की अक्ल पर तरस खायेंगे। अन्दर जाकर सत्संग मे बैठना चाहेगे।

(च) बारात मे स्त्रियो को कन्धे उचकाकर और कूल्हे मटकाकर नृत्य करते देखते है तो—

इसे सस्कृति के विरुद्ध ठहरायेंगे। उनके लचकते गोरे अगो को देखकर प्रसन्न होगे और उनकी मधुर मुद्राओ की सराहना करेंगे।

८. विदेशी एव भारतीय नृत्यो की तुलना करते हुए विवेचन कीजिए कि कत्थक तथा भारत नाट्यम् की अपेक्षा ट्विस्ट कही अधिक महत्व एव कलात्मक उपलब्धि है। किसी मेहमान के आने पर बच्चे ट्विस्ट ही करके दिखाते हैं और हर बारात मे भगडानुमा ट्विस्ट का ही प्रदर्शन किया जाता है—लोकप्रियता की इस चरमसीमा का उल्लेख कीजिए।

९ 'अनास्था एक शब्द नही, नारा है—युग-दर्शन है।' पिता-पुत्र, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य, भाई-भाई आदि सम्बन्धो को नकारकर बदलते सन्दर्भों मे उक्त कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। (हर उदाहरण से पूर्व किसी अभारतीय चिन्तक का मत देना अनिवार्य है।)

'भई नीला अब तो मुझे नीद आने लगी है, रमेश आया कि नही

'आ जायगा, क्यो, इतने परेशान क्यो हो रहे हो ?

क्या, कुछ मगवाया था ?

'हा, मैने उसे नीद की गोलिया लाने भेजा था।'

आदमी आबाद हैं

❁ माणिक वर्मा

आप से मिलिये हमारे देश के दामाद है
जब से आजादी मिली बस आप ही आज़ाद है

❁

डालकर चूटी का चारा फाँस लेते है कलाई
जिस्म का जुगराफिया पढने मे ये उस्ताद है

❁

एक राधा नित नई इनके हरम मे चाहिये
अब इन्हे कल्लू न कहना, ये किशन परसाद है

❁

सूर्य का चेहरा नढाकर दिन को ये दे ले फरेब
जुगनुओ को सब पता है किसकी ये औलाद हैं

ऊँच इनके सामने कहता है खुद को चुप बे नीच
ये तो मन्दिर के कलश है आप तो बुनियाद है

❁

स्वर्ग की हर एक सुविधा इनको दी अच्छा हुआ
स्वर्गवासी हैं बेचारे, स्वर्ग मे आबाद है

❁

ये निराला जयन्ती है इसपे कुछ कहिये, कहा
इक निराला मर गया हम दूसरे बरबाद है

❁

हर बरस आती है होली हर बरस लगता है हम
रग के पैबन्द पहने, दर्द की फरियाद हैं

❁

भूख पर हँसते है कैसे आप से सुन लीजिये
इनको गोली के लतीफे मुँह जबानी याद हैं

❁

इनको रिश्वत दे के जल्दी से गला कटवाइये
आधी गर्दन छोटकर बैठ हुए जल्लाद हैं

आप हिन्दुस्तान के नक्शे मे ये बतलाइये
आदमी बनकर कहाँ पर आदमी आबाद हैं

❁

वोटर

अमृतराय

वोटर और लोकतन्त्र मे वही सम्बन्ध है, जो मोटर और उसके सवार मे होता है। अर्थात् लोकतन्त्र वोटर पर चढ कर चलता है। वोटर न हो तो लोकतन्त्र अचल हो कर बैठ जाये। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वोटर ही लोकतन्त्र की मोटर है।

वोटर की महिमा अपरम्पार है। उसके दाये-बाये समाज के बडे से बडे धनी-धोरी-और ज्ञानी-गुनी लोग चक्कर काटते हैं। जो उसके दाये रहते है, उन्हे दक्षिण-पन्थी और जो बाये रहते है, उन्हे वामपन्थी कहा जाता है। यानी वे जो भी है, वोटर को केन्द्र मानकर है, अलग से कौन क्या है बता पाना कठिन है। क्योकि दिशा तो जो है सब किसी बिन्दु को केन्द्र मानकर है, वरना तो सब हवा है, वही एक हवा, यहा से वहाँ तक।

उसी केन्द्र का नाम वोटर है। सब रास्ते वही से फूटते है और घूम-फिर कर वही पर खत्म होते है। इस दृष्टि से वोटर साक्षात ब्रह्म है। उससे अलग, उससे बाहर कही कुछ नही है। तभी तो उसके यहाँ भक्तो का ताता लगा रहता है। एक जाता है, दूसरा आता है। दूसरा जाता है, तीसरा आता है। सबके हाथ मे फूलो की माला होती है और दारू की बोतल। अक्सर लोग मिठाई का थाल लेकर भी पहुँचते है। और जो अधिक कुलीन है वे कम्बल और चादी-सोने की अशर्फियाँ चढाते है—भाँति-भाँति के नैवेद्य उस ब्रह्म के चरणो मे, जिसका नाम वोटर है। और भाई, सच तो यह है कि वोटर ब्रह्म से भी बडा है—उस खूसट बुड्ढे को कौन इतने सब फल-फूल-मिष्ठान्न देने जाता है!

चुनाव का समय आते ही विधायक और भावी विधायक पागल हवा की तरह दसो दिशाओ मे दौड़ने लगते हैं—हठात् अपने उन्ही वोटरो के दर्शन के लिए व्याकुल, जो स्वयं उनके दर्शन के लिए पाँच वर्ष व्याकुल रहे और फिर अगले पाच वर्ष तक व्याकुल रहेंगे। इसी को भाग्यचक्र कहते है। पर मैं सोचता हूँ कि इस दृष्टि से वोटर निश्चय ही घूरे से अधिक भाग्यशाली होता है, क्योकि घूरे के दिन तो बारह बरस पर फिरते सुने गये हैं, जबकि वोटर के दिन पाँच बरस पर ही फिर आते है, भले पाँच दिन के लिए ही क्यो न हो। मगर उन पाँच दिनो तक क्या ठाठ रहते है वोटर के, बारात का दूल्हा भी उसके आगे पानी भरे।

वह शान से अपने दरवाजे पर कुर्सी या खटिया डाले बैठा रहता है और सब लोग आते है, उसको सलाम कर जाते हैं, और अब तो लगता है वह दिन भी दूर नही, जबकि हर वोटार्थी के साथ एक-दो चारण भी अपने कवित्त-सवैये लेकर वोटर के घर पहुँचा करेगे उसकी स्तुति करने को। अच्छा है, बेचारे अर्थात् चाराविहीन कवियो को भी कुछ काम मिल जायेगा और उनके खाने-पीने का जो सिलसिला जमेगा सो तो जमेगा ही, उनकी कविता-सरस्वती अपने अकेलेपन और बोरडम के रेगिस्तानो मे भटकते रहने के बदले कुछ वास्तव मे समाजोपयोगी और सच्चे अर्थो मे प्रतिबद्ध काव्य की सृष्टि कर सकेगी। हमे यह कभी न भूलना चाहिए कि हमारा देश ससार का सबसे बडा लोकतन्त्र है, जो इसी वोटर नामक कछुए की पीठ पर खडा है। इस लोकतन्त्र को मल दल कर पुष्ट बनाने से अधिक समाजोपयोगी काम दूसरा क्या है? और वोटर जो जनता जनार्दन का ही दूसरा नाम है, उसके प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता से बढ कर कौन प्रतिबद्धता है?

निस्सन्देह हमारी प्रगति के चरण उसी ओर बढ रहे है और, जैसा कहा भी है, पूत के पाँव पालने मे ही दिख जाते है, हमारे यहाँ जिस प्रकार वोटर को शकर जी की बटिया के समान पूजा जाता है, जिस प्रकार हर कोई जो उधर से गुजरता है, उस पर एक लोटा जल छिडकना अपना धर्म समझता है, उससे सिद्ध है कि अपनी यह प्राचीन धर्मप्राण भारतभूमि ससार को लोकतन्त्र की एक नयी परिभाषा देने जा रही है।

और निश्चय ही हमारे वोटर का भी उसमे बडा योगदान होगा, क्योकि अब वह भी बहुत चघड हो गया है और दूसरी सब चीजो की तरह अपना वोट बेचने का गुर भी सीख गया है। इस प्रकार ससार के इस विशालतम लोकतान्त्रिक देश मे लोकतन्त्र के ऐसे कुछ नये आयाम जुड गये है। जो दुनिया मे और कही देखने को नही मिलते। अपनी इस विशेष दिशा मे हम और भी व्यवस्थित ढग से प्रगति कर सके, इस खयाल से इधर यह भी सोचा जाने लगा है कि चुनाव की सरगर्मियाँ शुरू होते ही वोटो का भी एक सट्टाबाजार चालू हो जाया करे, जहाँ सोने-चाँदी, रुई और तिलहन की तरह वोटो के भाव का उतार चढाव भी सटोरियो के सामने बराबर आता रहे। लेकिन कुछ लोगो को इस पर यह आपत्ति है कि सट्टा बाजार तो बडे पूँजीपतियो की चीज है और हम बडे पूँजीपतियो के दुश्मन हैं, तो फिर उनका रास्ता हम क्यो अपनाये? उनकी समझ मे इसका ज्यादा अच्छा और समाजवादी रास्ता यह होगा कि वोट के टिकट भी लाटरी की दूकानो पर बिका करे, फिर किसी को शिकायत का मौका न होगा। बात बुरी नही है, क्योकि अब तो गाँव-गाँव गली-गली लाटरी की दूकाने हो गयी है, उन तक सभी की पहुँच है, वोट के टिकट भी मजे से वही पर बिका करे, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। जो हो, अभी दोनो ही प्रस्तावो पर विचार हो रहा है और किसी निश्चय पर पहुँचने मे थोड़ा समय लगेगा, लेकिन इसमे सन्देह नही कि जिस भी दिन हमारे विधायक और उनके विधाता इनमें से एक पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा देंगे, वह दिन

ार के लोकतन्त्रो के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे कित किया जायेगा ।

इस बीच समय जैसे औरो को उसी तरह ोटर को भी माज-घिस कर और भी चिकना कर चुका रहेगा । यो ही वह अच्छा-खासा चिकना घडा है । वह सदा मुस्करा कर बोलता है और किसी को ना तो कहता ही नही । वह ऐसा विलक्षण दानी है, जो बिना किसी को कुछ दिये ही जैसे त्रिलोकी का राज्य दे डालता है । वह कुछ इस तरह सब पर अपनी जादू की छडी घुमाता है कि सभी उसका गुणगान करते हुए और उसके वोट को अपना पक्का वोट समझते हुए घर लौटते है । यानी कि अब ठठेरे-ठठेरे वदलई का समय आ पहुँचा है, जब कि वोटर भी लोकतन्त्र की भाषा समझने लगा है । मुँह से कोई कुछ नही कहता, लेकिन वोटार्थी भी जानता है और वोटर भी कि इस क्षणभगुर ससार मे कोई किसी का नही— अपना यह जो सुखदायी मिलन आज हो रहा है वह भी दो घडी का है, फिर हम कहाँ और तुम कहाँ । इसलिए वडे भाई, आज नकद कल उधार, पहले दाम रख दो फिर मान की बात करो । एक तरह से अच्छा भी है, क्योकि इसी के नाते इस पुण्यभूमि भारत मे जनता जनार्दन के लिए जितनी नयी सडकें वनती हैं, जितने नये स्कूल-कालेज और अस्पताल खुलते है, जितने नलकूप लगते हैं सब चुनाव के पहले, क्योकि चुनाव के अगले रोज तो वही वोटर, जो अभी कल तक लोकतन्त्र का मोटर था, लोकतन्त्र का वैशाखनन्दन वन जाता है ।

●

यह युग

●

गिरिधर गोपाल

यह युग निर्माणो का ?
यह युग वलिदानो का ?
यह युग उत्थानो का ?

अडो का वडो का
सडो मुस्टडो का
यह युग है पडो का ।

जातो का पातो का
नातो का नातो का
यह युग है वातो का ।

लेता का देता का
जेता का नेता का
यह युग अभिनेता का !

कूडो का कचरो का
झगडो का पचडो का
यह युग है लचरो का ।

कूटो का खूटो का
फूटो का लूटो का
यह युग है झूठो का ।

गोटो का वोटो का
छोटो का खोटो का
यह युग है टोटो का ।

मर्जों का मर्जों का
फर्जों का फर्जों का
यह युग है कर्जों का ।

रगो का ढगो का
[illegible]गो का जगो का
यह युग है नगो का ।

तिकडम का तोटो का
कागज के घोटो का
यह युग है घोटो का ।

यह युग हत्यारो का ।
यह युग दलवालो का ।
यह युग [illegible] ।

चमचा सम्मेलन क्यों नहीं

चिरंजीलाल माथुर 'पंकज'

होली जैसे महान् पर्व पर देश भर मे महत्व-पूर्ण सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं और देखने मे आया है कि देश की महान विभूतिया इस सम्मेलन की अध्यक्षता करने को आतुर रहती हे और 'महामूर्ख' की उपाधि प्राप्त करने की सूची मे अपना नाम देखने को बडे-बडे नेता और अफसर तैयार रहते हैं। लेकिन यह बात समझ मे नही आती कि इन लोगो को इस पद पर पहुँचाने वाली महान् शक्ति 'चमचा' की अवहेलना क्यो की जाती है। यह बहुत दुर्भाग्य की बात है। आवश्यकता आज इस बात की है कि 'चमचो' का सम्मान होना चाहिए। उनका सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए। वर्ष भर मे उनकी उपलब्धियो की सीमा का बखान होना चाहिए। स्मारिका का प्रकाशन होना चाहिए, उपाधि वितरण होना चाहिए।

आज देश मे मूर्खो की ही भाति चमचो की भी कमी नही है। जिस प्रकार मूर्खो की अलग-अलग डिग्रिया होती है, उसी प्रकार चमचो की भी अलग-अलग डिग्रियाँ होती है। कोई छोटा, कोई बडा तो कोई महान्। कोई प्लास्टिक का, कोई लोहे का, कोई स्टील का, तो कोई चादी का। कोई-कोई तो "Born with silver spoon in mouth" भी होता है। उनकी तो पौ-बारह ही होती है। इस अध्यक्ष पद के लिए आवश्यकता हो तो सोने के चमचे को बुलाया जाना चाहिए।

पर बात असल है कि इनमे भी आपस मे होड़ लगी रहती है कि कौन बडा कौन छोटा? यह बात तो चमचो के वर्ष भर के लेखे-जोखे से पता लग सकती है कि कौन महान् है और कौनसा अध्यक्ष पद के योग्य है, फिर चाहे वह स्टील का चमचा हो, चाहे प्लास्टिक का।

अलग-अलग चमचो का कार्य-क्षेत्र भी अलग-अलग होता है। कोई राजनीति के क्षेत्र मे दखल रखता है, तो कोई सिनेमा के क्षेत्र मे। कोई नौकरी दिलाने के क्षेत्र मे तो कोई किसी का काम निकल-वाने के क्षेत्र मे। कोई सांस्कृतिक क्षेत्र मे अपनी माया फैलाए रखता है तो कोई धार्मिक क्षेत्र मे। यह आप पर निर्भर करता है कि आप उसे खोजने मे सफल होते है या नही। यदि आपने सही चमचे को खोज निकाला तो समझो आपकी भी पौ-बारह है।

किसी भी राज्य मे मन्त्री बनने से लेकर एक चपरासी की नियुक्ति के लिए इनका महत्व होता है। बिना चमचो के आज तक किसी का काम बना हो, ऐसा किसी इतिहासकार ने आज तक नही लिखा। फिर पता नही क्यो आज के युग मे इस ऐतिहासिक महत्व के व्यक्ति की घोर उपेक्षा की जाती रही है, यह बात समझ मे आने वाली नहीं।

कोई बडा व्यक्ति शहर मे आने वाला हो, उसके चमचे एकदम सक्रिय हो जाते हैं। उनसे मिलना हो, उनसे काम की सिफारिश करनी हो इसके लिए वैसा ही आयोजन कराने की तैयारी

ह लोग करा लेते है। कही उद्घाटन, कही ...ता, तो कही थैली भेट का आयोजन—बस ...ो पर ही छोड दे वे किसके लिए क्या करवा सकते! उनकी प्रशस्ति मे भाषण ...ना, लेख लिखना, उनकी पुस्तक स्वय तैयार उनके नाम से छपवा देना आदि ऐसे कार्य हैं हर स्तर का चमचा कर लेता है।

अभी कुछ दिन पूर्व की ही बात लीजिए एक ...ल्म स्टार यहा आई। कई चमचे एकदम सक्रिय ...ो गये। अलग-अलग आयोजन हुए। फिल्म स्टार के साथ उन चमचो की जमात भी घूमी। बाद मे लेख लिख मारे कि उनका कहा-कहा सम्मान हुआ। उन्होने क्या खाया, क्या पिया, किससे बात की और इस सारे आयोजन मे स्वय चमचे का क्या रौल रहा? आदि-आदि! जिसमे वह फिल्म स्टार तो चली गई लेकिन जनता मे चमचे का रौब जम गया कि उसकी पहुँच कहाँ-कहाँ है? चमचे को यह तक पता रहता है कि उनको भोजन मे कहा क्या चीज मिली? किस चीज मे नमक तेज था व किसमे कम....

किसी केन्द्रीय मन्त्री का यहा आगमन हो तो उससे अमुक-अमुक काम निकलवाने के लिए अमुक-अमुक आयोजन करवा लिए जाए। फिर वह चमचे धीरे से मन्त्री महोदय के कान मे कुछ कहेगे। उपस्थित लोग चमचे से प्रभावित तो होगे ही, फिर बस क्या है—मन्त्री तो गये और चमचे की मौज आई। इस गुडविल का वह लाभ उठाए बगैर नही रहते। हा, अपना उल्लू सीधा करते रहते है और भला क्यो न करे! जिसके लिए अपना सब कुछ होम दिया! उनका पेशा ही जब चमचागीरी है तो पेशा तो लाभ के लिए ही किया जाता है। आप ही बतलाइये कि आप कोई ऐसा धन्धा करना चाहेगे, जिसमे लाभ न हो?

किसी विभाग मे नियुक्ति, पदोन्नति, रुके हुए काम निकलवाने के लिए आपको बस इतना करना पड़ेगा कि आप उस अधिकारी, मन्त्री अथवा सचिव के सही चमचे की खोज करें। यदि आप इस कार्य मे सफल हो गये तो आपका काम बन जाएगा। यह बात अलग है कि अलग-अलग चमचो की फीस अलग-अलग होगी। किसी चमचे को कुछ चाहिए तो किसी को कुछ। यह सब समय, काम का महत्व व चमचे की अपनी आवश्यकता पर निर्भर करता है। ऐसे चमचो को ढूढना कोई मुश्किल काम नही है, लेकिन आपकी दृष्टि होनी चाहिए। वैसे उन बगलो के इर्द-गिर्द वह अक्सर नजर आते हैं, जहा किसी का कुछ काम निकल सकता है। यह चमचे आपको साहब के घर का आटा पिसवाते हुए, सब्जी लाते हुए, उनके बच्चे को स्कूल पहुचाते हुए, बच्चो को पढाते हुए, या उनकी बीबी के कपडे धोते हुए मिल सकते हैं।

बडे दुख की बात है ऐसी महान् हस्तियो का जहा उद्धार होना चाहिए वहाँ उनकी पूछ न हो, यह बात कितनी बुरी है? कम से कम होली जैसे पर्व पर तो इनका सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए। उनकी दुख-गाथाएं भी होती हैं। प्रशस्ति के साथ उनको भी सुना जाना चाहिए। उनके निवारण के लिए एकाध आयोग का गठन भी किया जाना चाहिए।

लेकिन पता नही लोगो की अक्ल को क्या कहा जाय? यहा मूर्ख सम्मेलन तो बुलाते हैं, चमचा सम्मेलन नही। लीजिये वह जुलूस आ गया। नारे सुनिये—हमारी मागे पूरी करो! चमचा सम्मेलन बुलाया जाय! हमारे दुख-दर्द सुने जाय! श्रेष्ठ चमचो का आदर हो! देश के चमचो, जिन्दाबाद!

अब भी समय है, आप अपने यहा चमचा सम्मेलन का आयोजन करें। देश की महान् हस्तियो की अवहेलना नही होनी चाहिये। आप भी यदि इस गुण मे माहिर हो तो अपना नाम अभी से रजिस्टर्ड कराकर अपनी उपलब्धियो की सूची सम्मेलन के सचिव के पास भेज दें—वरना ऐसा न हो कि आपका सम्मान हुए बगैर रह जाए। ●
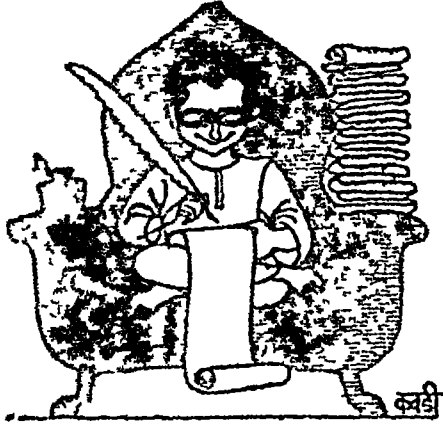
किताबों की चोरी और मैं

देवेन्द्र मोहन

इधर के दिन बडे बोरियत मे लदे रहते है। कोई काम-धाम नही, बेकारी। समझ मे नही आता क्या किया जाए? काफी हाउसो और टी-हाउसों मे वैसे ही इतनी भीड लगी रहती है कि बस पूछिए ही नही। ले-दे कर सिर्फ दो ही चीजे बची है—किताबे पढो या फिर फिल्मे देखो। पलायन के दो ही साधन रह गए है—किताबे। किताबें भी कहा, लगता है कि कही भी साहित्य रचा ही नही जा रहा! फिल्मे? फिल्मो का यह हाल है साहब, कि अच्छी फिल्म भी आजकल के जमाने मे देखने को कहा मिलती है!

कनाट प्लेस आया तो लगा कि अच्छा यही होगा कि किसी किताबों की दुकान मे चला जाए। जेब में १५-१६ रुपये थे। सोचा, अंग्रेजी का एकाध नावल ही खरीद लिया जाए, कुछ तो मिलेगा।

टहलते-टहलते पहुँचे उसी दुकान के भीतर जहा मैं अक्सर किताबे खरीदा करता हूँ। इधर-उधर नजरे दौडाने लगे। आज और दिनो की अपेक्षा भीड़ कम थी। मन थोडा शान्त हुआ। आराम से किताबो पर नजर मारने की फुर्सत तो मिलेगी। रैक पर से एक-एक किताब उठाता, देखता, उलटता-पलटता और वापस उसे अपनी जगह पर बदस्तूर रख देता।

किताबे वापस रखने की एक ही वजह है उनकी कीमते! आप खरीद नही सकते, क्योकि जेब से रुपये बाहर निकल कर आप को कगला नही बनाना चाहते। फिर चोरी, छि:, किसी ने देख लिया तो बरसो की रही-सही इज्जत मिट्टी मे मिल जाएगी।
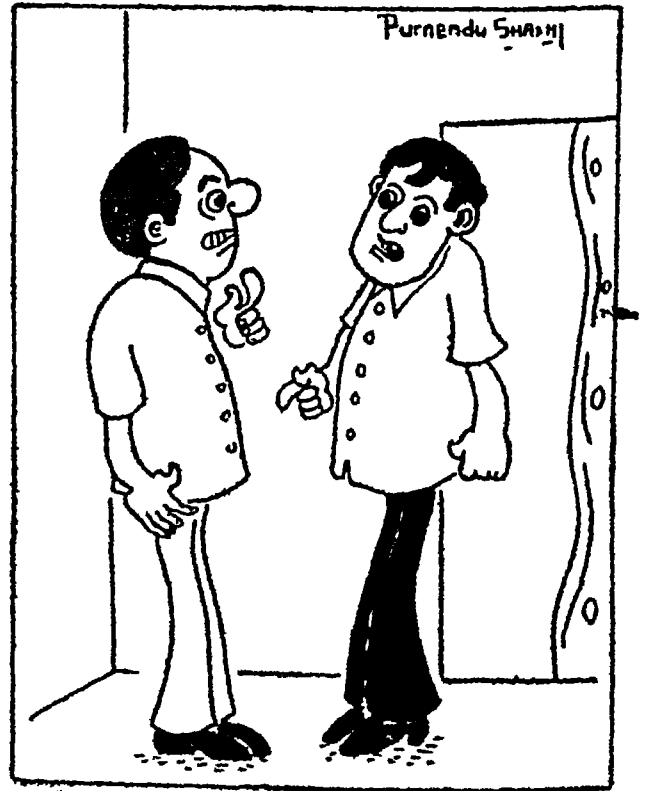
'लाइब्रेरी होकर आ रहा हूँ। आज तो साले चौकीदार ने एक मिनट को भी मेरे पर से नजर नही हटाई!'

नही झूठ क्यो बोलू, मोरेलिटी का चक्कर नही है। किताबो की चोरी बुरी बात नही दर-असल बात यह है कि आपकी देह इतनी पतली है, इतनी पतली कि फर्ज कीजिए आपने एक पतली-सी किताब कमीज के नीचे छिपानी भी चाही तो आपकी सास स्वय आप को धोखा दे जाएगी। आप साम ले ले, यह जरूरी है। लेंगे ही। होगा यह कि आप सास लेगे और वह पतली-सी किताब आपकी कमीज का सहारा भी लेगी, और आप एक्सपोज्ड हो जाएगे। बात यह है कि दुकानदार के सात-आठ सहायक हर समय इधर-उधर चौकसी पर तैनात रहते हैं और वे काफी एक्सपीरियस्ड-हैन्ड है। उनकी आखे इतनी पैनी और अनुभवी है कि पूछिए ही नही। बरसो मे उनका वास्ता पुस्तक-प्रेमी-चोरो से पडता रहा है, इसलिए इन्ही लोगो से बचना बडा मुश्किल है।

काफी अर्सा पहले की बात है, इसी दुकान पर एक अग्रेजी बोलने वाला छात्र पकडा गया था। उसने एक किताब बहुत सीधे तरीके से काख के नीचे दबाई थी और वहा से तिडी होना चाहता था, तभी कृष्णाराम ने (यह व्यक्ति ऐन्टी किताब-मारू स्क्वाड का चीफ-इन-चीफ है) उसकी गर्दन धर दबाई थी। सयोगवश मैं उस दिन वही था। उस लडके की पतली गर्दन कृष्णाराम के दाहिने मे हाथ मे थी। बाए हाथ से वह उसकी काख के नीचे से पुस्तक खीचने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वह सरस्वती का आराधक भी काफी छटा हुआ था और किताब उसकी काख से बाहर हीं नही निकल रही थी।
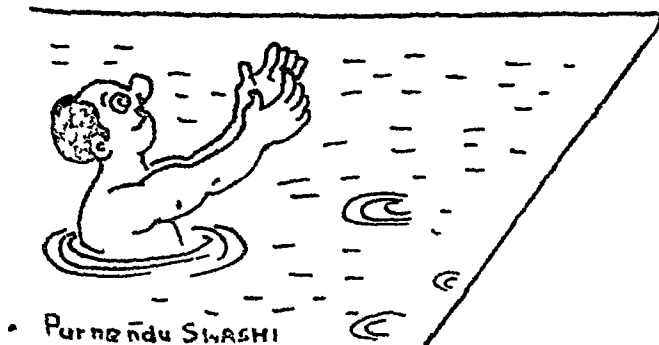
उसने धीरे से कहा—"किताब छोड दो बच्चू क्यो अपनी प्रेस्टीज खराब कर रहे हो?"

अब मेरी समझ मे आया कि किताब-चोर और मुर्गी-चोर मे कितना अन्तर होता है और यह भी कि किताबो के दुकानदार किताब-चोरो को बाइज्जत छोड देना जानते है।

"हैल्लो!" मधुर-सी आवाज आई। पलटा तो हमारी पडोसिन मिस जेहन थी।

'आँप कैसे?"

"आ जाता हू कभी-कभी।'

"मैं तो अक्सर आती हू। इट्स माई फेवरिट शाप।"

तभी वह कृष्णाराम के पास पहुँची और धडा-धड किताबो के नाम बताने लगी। मैं भौदूराम की तरह उनकी ओर देखे जा रहा था। पहली बार अहसास हुआ कि किताबो की दुकान मे भी आप होटल की तरह आर्डर दे सकते है।

कृष्णाराम ने सारी किताबें एकत्र करली थी। "कितना बिल हुआ?" मिस जेहन ने पूछा और

अपना पर्स खोल कर सौ-सौ के कुछ नोट निकाल लिए। "तीन सौ पिच्चानवे रुपए, पचहत्तर पैसे।"

"ओ. के, यह लो बाकी के तुम रख लो।" मिस जेहन ने इस तरह कहा, जैसे वह किसी रेस्तरा के वेटर को टिप दे रही हो। कृष्णाराम मुसकराया।

हम बाहर निकले। "अब आप कहाँ जाएंगे?"

जी मे आ रहा था कि कह दूं—"जहन्नुम' मे, लेकिन तभी मर्यादा का ख्याल आया। (फिर यह शब्द भी बडा घिसपिट चुका है। इस्तेमाल करते समय लगता है कि दुनिया की सारी शब्दावलिया समाप्त हो चुकी है) कह दिया—"जरा काम है।"

मै फिर दुकान मे घुस गया। इधर-उधर नजर दौडाई, सब अपने-अपने काम मे व्यस्त थे। कृष्णाराम वहीखाता देख रहा था। मैं दवे पाव अलमारी के पीछे चला गया। धडकते दिल से एक किताब उठाई और कमीज के नीचे ठूस ली। मन किताब देखी नही थी, फिर भी टटोल कर महसूस किया कि वह काफी पतली थी—तीस-चालीस पन्नो की। मन आनन्दित हो रहा था, आखिर आज चोरी कर ही ली। देखे, कैसे पकडता है, यह कृष्णाराम।

अलमारी के पीछे से निकल कर आया और रैक मे इधर-उधर किताबे देखता हुआ दरवाजे की ओर बढने लगा। कनखियो से मैंने नीचे देखा और मन ही मन हर्षित हुआ। कोई भी माई का लाल मुझे नही पकड़ सकता! अपनी सफलता पर खुश होता हुआ बाहर निकल ही रहा था कि कृष्णाराम ने मुसकराते हुए नई पुस्तको की सूची पकडा दी—"साहब; इसे भी लेते जाइए।"

मैने सूची उसके हाथ से ले ली और तेज कदमो से चलता हुआ काफी दूर तक आ गया। अब मैं आश्वस्त था। सोचा, देखूं क्या माल हाथ आया है!

मैंने कमीज के अन्दर हाथ डाला। चोरी की हुई किताब बाहर निकाली– काटो तो खून नही। पुस्तको की एक पुरानी सूची थी। नई मेरे हाथ मै थी। तभी मुझे ख्याल आया कि कृष्णाराम ने कहा था—'इसे भी लेते जाइए। सीता की तरह प्रार्थना करने लगा कि धरती फट जाए और मैं उसके अन्दर समा जाऊ। लेकिन धरती इतनी उदार नही कि हर ऐरे-गैरे, बेशर्म और असफल पुस्तक-चोर को अपनी कोख मे पनाह दे दे।

शाम खत्म हो गई है और मैं बेहद शर्मिन्दा हूँ। मैं बहुत बडा चोर हूँ जो अपने लिए बोरियत पैदा करता है। मैं इसलिए भी शर्मिन्दा हू कि मै सफल पुस्तक-चोर भी नही बन सकता। फिर मै क्या खाकर मुर्गी-चोर बन सकता हूँ, ईश्वर ही जाने!

एक लतीफा

"सामने बैठा पानवाला कितना धीरे-धीरे पान लगा रहा है? शायद नया-नया धन्धा शुरू किया दीखता है। चलो, इसी से पान खाया जाये," मित्र ने कहा।

'यह पान की दुकान नही है। न यह यह व्यक्ति पान लगा रहा है। न ही वे सामने पान पडे है। यह एक साप्ताहिक पत्र का कार्यालय है। अखबार का कोटा कम होने के बाद, उसके संपादक नये अक को ग्राहको के लिए सजा कर रख रहे है"। विरोधीजी ने समझाया।

—बालकवि बैरागी

छप गई फोटो अखबार में

*** नाडोडी ***

कुछ दिनो से मुझपर एक पागलपन सवार हो गया है। जिसे देखता हूँ, जिससे भी मिलता हूँ, उसका फोटो लेने की धुन मुझ पर सवार हो जाती है। लेकिन आप यह न समझे कि मै इसी पागलपन के बारे मे आपको बता रहा हूँ। फोटो-पागलपन से मेरा मतलब है उस पागलपन से जो किसी अखबार मे अपना फोटो छपवाने के लिए कुछ लोगो पर सवार हो जाता है। ऐसे लोग हर समय इसी फिक्र मे रहते है कि उनका फोटो किसी तरह अखबार मे छप जाए।

फोटो-पागलपन कोई नई चीज नही है। जब से फोटो का आविष्कार हुआ है, तभी से फोटो-पागलपन की प्रथा भी चली आ रही है। यह पागलपन कभी कभी तो एक दिन मे एक फोटो और एक क्षण मे एक पोज की सीमा तक जा पहुँचता है। अगर यही हाल रहा तो पता नही, इस पागलपन का तूफान कहाँ जाकर थमे।

पुराने जमाने मे अखबार मे फोटो छपवाने के लिए कम से कम पाच हजार रुपए खर्च करने पडते थे। कुछ लोग गवर्नर-जैसी किसी बडी हस्ती को दावत देते। चार-पाच हजार रुपया दावत मे बह जाता। तब कही गवर्नर के साथ उनका फोटो खिचता और अखबार मे छपता।

जो लोग गवर्नर की दावत मे इतना रुपया खर्च करना पसन्द न करते, उनका कोई बडा अस्पताल या स्कूल के उद्घाटन-समारोह के समय लिया गया उनका फोटो अखबार मे छप जाता। लेकिन अब इतना रुपया खर्च करने का झझट मोल लेने की कोई जरूरत नही।

मान लीजिए, कोई लडका अखबार मे अपना फोटो छपवाना चाहता है। सीधा सा उपाय है कि वह माँ-बाप से कुछ कहे बिना चन्द रोज किसी मित्र के यहाँ चुपचाप गुजार दे। बस, 'गुमशुदा

की आवश्यकता नही। अखबार मे फोटो छपने के लिए उनका निधन होना ही काफी है। पुराने जमाने मे बडे लोगो के फोटो इस तरह छपते थे कि फोटो देखकर ही पता चल जाता था कि वे जीवित है या मर गए। अगर जीवित होते तो उनका फोटो किसी गवर्नर के साथ या किसी इमारत के साथ छपता, और यदि मर जाते तो अलग थे। इसलिए किसी बडे आदमी का फोटो अलग से छपा देखकर हम आसानी से बता सकते थे कि वे परलोक सिधार गए हैं।

इधर कुछ दिनो से लोगो ने अखबारो मे फोटो छपवाने का एक नया तरीका निकाला है। वे किसी बहाने विदेश जाने का प्रबन्ध कर लेते है और अखबार मे फोटो के साथ यह भी छपवा देते है कि वे अमेरिका या इगलैण्ड जा रहे है और जा रहे है तो क्यो जा रहे है।

पुराने जमाने मे कोई कहता था कि मै अमेरिका जा रहा हूँ तो साफ यही समझा जाता था कि वहाँ के किसी स्कूल मे भर्ती होकर किसी महत्वपूर्ण विषय की खोज करने जा रहे है। यो आज भी विदेश जाने वाले लोग अन्वेषण के लिए ही जाते हैं लेकिन अन्वेषण कैसा? कोई इस खोज के लिए जा रहा है कि विलायत मे दर्जी कपडे किस तरह काटते है, कोई इसलिए कि व्यापारी लोग अपना कारोबार कैसे चलाते है और कोई इसलिए कि वहाँ के अध्यापक स्कूलो मे बच्चो को कैसे पढाते हैं! इस तरह विदेश जाने वालो के फोटो आपको प्रति दिन दो या तीन के हिसाब से अखबारो मे मिल जाएँगे। भले ही लोग सैर-सपाटा या कोई बहुत मामूली-सा काम करने जाएँ, कहेगे यही कि खोज करने जा रहे हैं।

जमाना ऐसा आ गया है कि सब लोग एक दूसरे के बराबर समझे जाते हैं। ऐसी हालत में

श जाने वालो को ही फोटो छपवाने की धा क्यो मिले ? अन्य लोगो को क्यो नही ? ी लोग किसी न किसी अवसर पर एक जगह से री जगह जाते रहते है। उन अवसरो पर लोग तरह अपने फोटो अखबारो मे क्यो नही छपवाते हम स्वतन्त्र भारत के गाँवो की दशा का अध्ययन रने के लिए रामपुर या सीतापुर जा रहे हैं। सी प्रकार कुछ लोगो को इन्टरव्यू के लिए दिल्ली ाना पडता है। वे लोग यह कह कर अपना फोटो यो नही छपवाते कि हम इस बात की खोज करने के लिए दिल्ली जा रहे है कि दिल्ली की सरकार का काम कैसे चल रहा है।

फोटो छपने की खुशी

ससुराल जाने वाले दामाद भी इस अवसर का लाभ उठाकर अपना फोटो अखबारो मे प्रकाशित करने का प्रबन्ध कर सकते है। वे अपने फोटो के साथ यह भी छपवा सकते हैं कि ससुर और दामाद के बीच होने वाले झगडो के कारणो की खोज करने के लिए अमुक गाँव मे जा रहे है। यदि उस अखबार की एक प्रति पहले से ही ससुर महोदय को भेज दें तो यह फायदा भी होगा कि ससुर-दामाद के बीच फिर किसी झगडे की सम्भावना नही रहेगी।
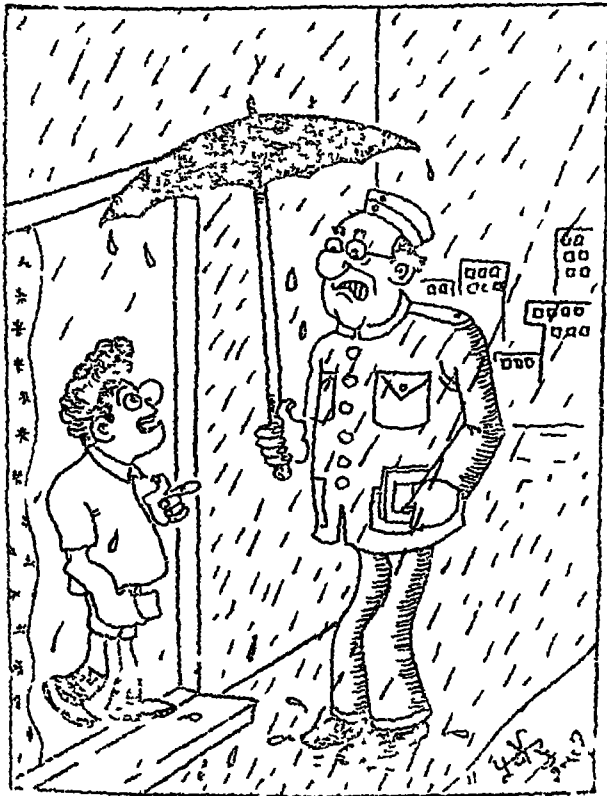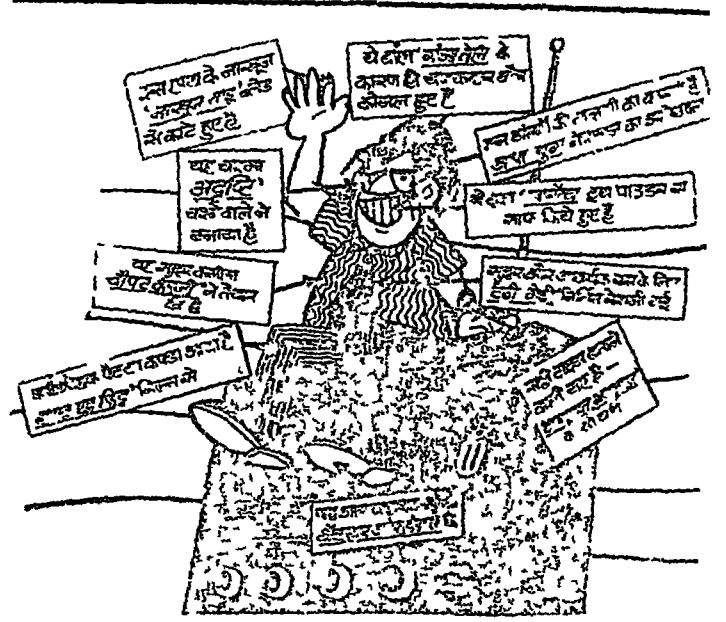
अरे भई पोस्टमैन, इतनी बारिश मे चिट्ठी ले आए ? उसे तो डाक से भिजवा देते।

पर आजकल विदेश जाने वालो के ही फोटो छपते है और विदेश जाने वालो मे प्राय पुरुष ही अधिक होते हैं, इसलिए स्त्रियो को अपना फोटो छपवाने का मौका ही नही मिलता है। मेरे सुझाव के अनुसार यदि स्वदेश-यात्रा सम्बन्धी फोटो छपने की प्रथा शुरू हो जाए तो स्त्रिया भी अखबार मे फोटो छपवा सकेगी। फोटो के साथ वे यह बात छपवा सकती है कि अमुक जी पेडा बनाने की कला की खोज करने विष्णुपुर जा रही है या अमुक जी बेसन के लड्डू बनाने की विधियो की खोज करने लक्ष्मी-पुर जा रही है। बस, बात बन जाएगी।

फिर भी अगर स्वदेश-यात्रा करने की अपेक्षा लोग विदेश-यात्रा मे ही गौरव माने और महज फोटो छपवाने के लिए विदेश-यात्रा पर अन्धाधुन्ध पैसा

जाएं तो उन्हें कौन रोक सकता है! वैसे अगर वे विदेश न भी जाएँ तो किसी को क्या नुकसान होने वाला है! मगर यह बात समझ मे नही आती कि विदेश जाते समय फोटो छपवाने वाले लोग विदेश से लौटने पर अपना फोटो क्यो नही छपवाते कि अमुक जी नियत रोज के बाद विदेश से लौट आए है।

विदेश जाने वाले यदि मेरा सुझाव माने तो मैं कहूंगा कि वे जाते समय भले ही अपना फोटो न छपवाएं, लौटते समय जरूर छपवाएं। अखबार मे उनका फोटो देखकर उनके मित्र लोग श्रद्धापूर्वक उनसे मिलने आएंगे, उनके सम्बन्ध मे पीछे-पीछे चर्चाएं करेंगे। मुझे आशा है, विदेश जाने वाले मेरे सुझाव को स्वीकार करेंगे।

लड़की और खिड़की

—विजय माथुर

मैं तुम्हे देखता हूँ
तुम्हारे कमरे की तुम्हारी खिडकी से
क्योकि यह खिड़की तुम्हारी भी है
और मेरी भी
कॉमन है सिर्फ दीवार
खिडकी एक माध्यम है
तुम्हे देखने का
क्योकि तुम एक लडकी हो
खिडकी तो नही !

समाचारी कौआ

कुछ दोस्त होटल मे बैठे थे। उनमे एक साहब बडी धमाचौकडी मचा रहे थे, "दुनिया मे इन्सान क्या नही कर सकता ? नेपोलियन ने कहा है, 'असम्भव' शब्द शब्द-कोश मे हो नही होना चाहिये।"

"मगर हर कोई नेपोलियन बन सकता है ?" किसी ने कहा।

"फिर वही बात ! जब असम्भव कुछ है ही नही, तो नेपोलियन बनना भी...."

'मगर...." मगर-वगर कुछ नही ! मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि इन्सान सब कुछ कर सकता है।"

"तो होटल का यह बिल भर दो।" एक दोस्त ने बिल उनके सामने रख दिया।

श्री श्री हिप्पी-हिप्पीन होलिका संवाद

के. पी. सक्सेना

वे दोनो पुलिया के नीचे दीवार के सहारे दुबके बैठे थे तथा चरस की चरम सीमा पर पहुँच कर उनका बेतार सचार सीधे परम पिता परमात्मा से कनेक्टेड था। शरीर पर नाम मात्र को चीथडे थे और काफी नजदीक से देखने पर भी पता नही लगता था कि दोनो मे कौन सो रहा है और कौन सो रही है।....वह जो नशे की झोंक मे सो रही थी उसके शरीर से नारी चिह्न भी लगभग नही के बराबर थे। गाजे की माया अपरम्पार है।... पुलिया के ऊपर हुडदगी बच्चो का एक दल फुल स्पीड छूटा हुआ था। रग भरे गुब्बारे और शुद्ध कीचड के पोतडे हवा मे मिजाइलो जैसे उड रहे थे।. चेहरो पर चमकदार कालिख देखकर ऐसा लगता था जैसे चूल्हे से उतरी हुई पतीलिया पुलिया पर होली खेल रही हैं!....तभी एक विशुद्ध गुबरैला पोचाडा न जाने किधर से उडता हुआ पुलिया के नीचे पलायन कर गया और फचाक के स्वर के साथ जोगिन के मुखश्री पर पडा! तपस्या भग हो गई। जोगिन ने गाजा पीडित लाल आखे मुचमुचाई, बालो के झोझे खबर खबर खुजलाए और गर्दन पर रीगता हुआ चीलर चुटकी मे मसल कर बोली—'गुरु डार्लिग।..आज यह क्या गड़बडी मची है? हरे रामा, हरे कृष्णा। हमारे मेडीटेशन पर कीचड उछाली जा रही है। मुझे गॉड दिखाई दे रहे थे। बीच मे ही यह क्या घपला हो रहा है?.... नो पीस आफ माइन्ड।'

परम आदरणीय श्री हिप्पी ने पाजामे के ऊपर ही तन की मैल खुजलाई और कोने मे टिकी चिलम पर नया सूंटा खीच कर चेली को ज्ञान दिया—'सो बात नही, हनी। इन्डिया वाले आज होली मना रहे हैं।'

'व्हाट होली?' चेली चौक उठी, 'आज का दिन होली है, बाकी सब दिन अन-होली है क्या?' उसने एक बार पुन नशे के झोंक मे 'होरे रामा, होरे कृष्णा' कहा और कमर पर रेग रहे किसी कीडे को धर दबोचा।

गुरु ने थोडा निकट खिसक कर चेली के राम-नामी दुपट्टे से उसके होठो से बही राल पोछी और ज्ञानोपदेश दिया—

'मारिया डियर। आज का दिन इनकी खुशी का दिन है। ये लोग गाँजा, भाग, ताडी वगैरह पीते है और कीचड उछालते है। लवली इट इज। हरे रामा, हरे कृष्णा।'

'ओह सच? तब तो एल एस डी. और मरी जुआना भी चलता होगा? इन्डिया इज ग्रेट। यहा कितना सुख है, गुरु डार्लिग। हम लोग अपने कन्ट्री वापस जाकर डेली होली मनायेंगे। मेरी चिलम मे थोडा और गाजा डालो न।.. गॉड से मेरा कनेक्शन टूट रहा है। थैंक यू। अब मेरे

होता है। हरे रामा, हरे कृष्णा... हमारे कन्ट्री मे होली होती तो किग को सेलीब्रेट करते ! फ्री गाजा और एल एस डी बटवाते । .. पुअर इन्डियन्स !'

चेली पर पुन गाजा चढ रहा था। वह गुरु की गोद मे ढेर हो गई। गुरु उसके बालो की सूखी झाडियो मे जुए बीनने लगा . जब चेली गहराई मे पहुँच गई तो पास ही पडी एक लकडी से गुरु ने अपनी पीठ पर जमी मैल की परते खुज-लाई। थोडी देर बाद स्वय गाजे की झोक मे वह चेली की बगल मे ही डाऊन हो गया।

पुलिया के ऊपर पुअर इन्डियन्स अब नहा-धो कर साफ-सुथरे कपडे पहने एक-दूसरे से गले मिल रहे थे। पुलिया के नीचे परम आदरणीय श्री श्री हिप्पी-हिप्पिन कीचड के निकट गॉड से कनेक्शन स्थापित किए हुए औंधे पडे थे और आत्मा विशुद्ध कर रहे थे। भगवान को पाने के लिए एक चिलम गॉंजा काफी है। ●

भ्रष्टाचार

भारत का भारी भ्रष्टाचार
एक वृद्ध वट-वृक्ष के समान है
(हा, यह चुनाव का निशान है)
जिसकी जडे ऊपर से आती है
नीचे समा जाती है
इसका तना (निर्वाचित प्रतिनिधि)
इन जडो का करता है पोषण
आने के बाद ये जडे (नौकरशाही)
इसका करती है शोषण....

— विश्वम्भर मोदी

होली के अवसर पर खिताबों का

फरमान

महामूर्ख अध्यक्ष महोदय ने निम्नलिखित दुर+सज्जनो को खिताब अता फरमाये हैं। अतः पेशे नजर होकर बदौलत नामाकूल गुलाल भेट और मूर्ख मैंडल से अपने आपको कुशोभित समझे। जिनको नही मिला, वे अगले साल अप्लाई करे।

भवदीय
महामूर्खाध्यक्ष
सेक्रेट्री इन चीफ

राजनीतिज्ञ

फकरूद्दीन अली अहमद	जवानी आ रही है
दासप्पा जत्ती	भोले भण्डारी
गौडे मुराहरि	लोहिया ने कब कहा था
इन्दिरा गाधी	एयर कन्डीशन्ड आधी
जगजीवन राम	किस्मत का कलन्दर
यशवन्तराव चव्हाण	चालू खाता
उमाशकर दीक्षित	पानी उतर गया
चन्द्रजीत यादव	तरबतर समाजवादी
इन्द्रकुमार गुजराल	पॉकिट एडीशन
रामनिवास मिर्धा	मान्यता प्राप्त
स. स्वर्णसिह	सदा सुहागिन
राजबहादुर	अंगद का पाव
जगन्नाथ पहाडिया	डायल टोन
मधुलिमये	नायलोनी सोशलिज्म
समरगुह	बाल की भी खाल
शरद यादव	नया चमत्कार
अटलबिहारी वाजपेयी	शिताबी
प्रकाशवीर शास्त्री	कन्वरटेड
लालकृष्ण अडवानी	जिये सिन्ध
सुब्रमण्यम स्वामी	हिन्दू अर्थशास्त्र
एन. जी. गोरे	नीड़ नॉट वरी

भैरोंसिंह शेखावत	कुर्सी चाहिये
राजनारायण	अन्टशन्ट
पीलू मोदी	गोल्ड-इकोनॉमी
जॉर्ज फर्नान्डिस	जनता का जादू
ज्योतिर्मयबसु	पहला सन्तरी
भूपेश गुप्त	बाई ऑर्डर
सरदार जोगिन्दरसिंह	नजाकत का शेर
हरिदेव जोशी	विल पावर
रामकिशोर व्यास	हुब्बे हयात तक
परसराम मदेरणा	दोनो हाथ लड्डू
चन्दनमल वैद	मफरूर मुनीम
गुलाबसिंह शक्तावत	बाबूजी की कृपा
शिवचरण माथुर	मेवाडी एकता
कमला बेनीवाल	सम्पर्क की साधना
शेरसिंह	काबुल मे गधा
हीरालाल देवपुरा	हम भी तो उन्ही के हैं
रामनारायण चौधरी	झुंझुनू का झुनझुना
मोहन छंगाणी	पर्सनल लाइफ
मुन्शीलाल महावर	थोडी सी पी थी
मूलचन्द मीणा	लाला जी
डॉ० शंकरदयाल	टूटा रेकार्ड
बसन्तीलाल अग्रवाल	'स' से समाजवाद
पं० रामकिशन	जाऊँ तो जाऊँ कहाँ
प्रो० केदार	सब के साथ
महारावल लक्ष्मणसिंह	कश्ती भी गई, किनारा भी गया
निरंजननाथ आचार्य	शगूफा
लक्ष्मीकुमारी चूंडावत	अनटोल्ड स्टोरी
राजमाता गायत्रीदेवी	राज खुल गया
सतीशचन्द्र अग्रवाल	चकमक
जगदीशप्रसाद माथुर	गुजर रही है
गुमानमल लोढा	बाई चान्स
गिरधारीलाल भार्गव	झूठ का झमेला
मा० रामचरण मन्दयानुप्रासी	चौराहे पर
सुन्दरसिंह भण्डारी	स्थायी नियुक्ति
श्रीराम गोटेवाला	हाथ मे रेखा थी
जनार्दनसिंह गहलोत	पापा नाराज है
टी. के. चौधरी	मुर्गी, अण्डे नहीं देती

सुरेन्द्र व्यास	"हू आर यू"
का० रामानन्द अग्रवाल	यस सर
मोहन पुनमिया	विडला-बन्धु
का० मोहरसिंह	हवा का झौका
गोकुलभाई भट्ट	टूटी चप्पल
सिद्धराज ढड्ढा	हज्ज कर आये
रिषिकुमार मिश्रा	नया मुल्ला
मोहनलाल सुखाडिया	दुआ सलाम
बनवारीलाल बैरवा	खुदा का करम
फारूक हुसैन	इस्लाम सुरक्षित है
गिरधारीलाल व्यास	माटी के माधो
बी एन. जोशी	अब काई होशी
नत्थीसिंह	समाजवादी पैतरा
पूनमचन्द विश्नोई	वन्स अपॉन ए टाइम
भवरलाल शर्मा	पत्थर फैंको
स० गुरदयालसिंह सिन्धु	भालोद का भाला
एच के व्यास	दिल्ली दरबार मे
का० गफ्फार अली	आगे रास्ता नही है
शोभाराम	सत्य की वेदी
श्रीमती सुमित्रासिह	नारी-नाहर
दिनेशचन्द्र स्वामी	अबकी बार लो
सुरेशचन्द शर्मा	ऋषिपूजा
मदनमोहन देहाती	मुनि महाराज
ताराचन्द चन्देल	हार्मलैस क्रीचर
राजेन्द्र के० शेखर	जनता या जनार्दन
उमेशनारायण जोशी	पानी मे खेती
सुमेरचन्द सोनी	छापे का डर
किरोडीलाल शर्मा	इश्कमिजाजी
शिवराम शर्मा	चमचा नं० वन

पत्रकार

कर्पूरचन्द्र कुलिश	एक्सक्यूज़ मी
विजय भण्डारी	एकेडेमिक न्यूज़
शिवपूजन त्रिपाठी	सिद्धान्त नही, सख्या
हजारीलाल शर्मा	माया मुछन्दर
दुर्गाप्रसाद चौधरी	द + म ×० = मु
सुभाष मोदी	आज यहा, कल वहा
	... मैं पत्रकार हूं ...

सिद्धनाथ तिवाडा	यह तो नौसादर की है
चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय	वैदिक परम्परा
प्रवीणचन्द्र छावड़ा	कलम से खेती
आई. एम बापना	समता सदन मे
टी. एन. कौल	उनकी एक रुबाई
डॉ० भँवर सुराणा	शराब-बन्दी पर शोध-ग्रंथ
राजमल साघी	फुर्सत की पत्रकारिता
नारायणन्	रोज इन डैजर्ट
मोतीचन्द कोचर	फारगेट भी नॉट
श्यामसुन्दर आचार्य	चादी ही चादी है
कैलाश मिश्र	चौडे रास्ते मे
मोहनलाल गुप्ता	पटवारी की तलाश
महेश शर्मा	हमदर्द
ओमप्रकाश शर्मा	अब ठीक हूँ
कालूराम गुप्ता	वनिये की मूँछ
सदाशिव	पूँछ कम हो गई
याज्ञवल्क्य गुरु	मार्क्स से माओ तक
शरद देवडा	चादी की चमक
आदित्य चतुर्वेदी	किससे कहे
विष्णु शर्मा 'अरुणेश'	नॉन-सेन्स
जिनेन्द्रकुमार जैन	हम भी कम नही
के सी. सोघी	जे. पी. ज़िन्दाबाद
आई. एम. ईश्वर	जोशी... ज़िन्दाबाद
ओम सैनी	वामपथी मोर्चा

साहित्यकार

गुरु कमलाकर कमल	मेरे ये आसू
डॉ० ताराप्रकाश जोशी	टूटा तरन्नुम
मेघराज मुकुल	कलम की रोटी
डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	तथाकथित प्रगतिशील
मणि मधुकर	केल्कुलेटेड रचनाकार
हरिराम आचार्य	कठ की करामात
मिलापचन्द राही	दिया और तूफान
हरीश भादानी	गीतो की गर्जन
[illegible] भार्गव	गुद्दी के पीछे बुद्धि
[illegible]	मैन्टल डिरेलमेन्ट
बुद्धिप्रकाश पारीक	बुद्धू प्रमाद
डा० [illegible]	ध्वस्त रंगमहल

छोटूखा निर्मल	किसको सुनाऊँ
नन्द चतुर्वेदी	प्रगतिशील वेटे के वाप
प्रकाश ग्रातुर	कोयला भयी ना राख
प्रकाश जैन	भँवर की लहरे
डॉ० शान्तीलाल भारद्वाज	हाडौती की कमाई
जगदीश चतुर्वेदी	वावा माफ करो
मंगल सक्सेना	तुम्हारी कसम मैं तुम्हारा नही हू
डॉ० जयसिंह नीरज	वणी-ठणी पर नयी कविता
जुगमन्दिर तायल	गिलट की पायल
प्रेमचन्द्र गोस्वामी	धार्मिक-साहित्यकार
रामरतन नीरव	कही की ईट कही का रोडा
चन्द्रकुमार सुकुमार	सुरीला दुकानदार
तारादत्त निर्विरोध	काच का गिलास
डॉ० नरेश कमठान	कविता से इलाज
राजेश रेड्डी	भूमिका
कुमारशिव	गीतो का वकील

सरकारी वर्ग

एस. एल. खुराणा	विश्व बैंक का ग्रनुदान
रामसिह	कोशिश मे हू
डी. ग्रार. मेहता	कामकाजी रुतवा
विजय वर्मा	सितार की धुन मे
मुन्नालाल गोयल	हस्त-कला से उद्योग
के. एल बराया	महन्त महाराज
मगलविहारी	विहारी ग्रानन्द
गणेशसिह ग्राई जी	ना-काविल नौकर
वी. एन. काक	जालिम जादूगर
एम. एल ककक्ड	सम्पर्क सूत्र मे
हरिदत्त गुप्ता	ग्रफीमची
वद्रीनारायण पुरोहित	वुरे फसे
वृजेन्द्रसिह	दम-खम
जसवन्तसिह सिघवी	सवके भले
इन्द्रदत्त भार्गव	ग्रलविदा
ग्रभिताव गुप्ता	सोता सिपाहा
जे. सी. कालरा	देख-भाल
जे. एन शर्मा	पैसे की कुश्ती
भीमसिह	पैसा चाहिये

एल एन गुप्ता	क्लर्की की सजा
हरिदत्त भार्गव	सुराही से
प्रेमस्वरूप राजवंशी	अब मेरी बारी है
हरिसिंह	पानी की कमाई
सन्तोषकुमार चौधरी	बिजली की चोरी
ज्ञानचन्द गुप्ता	चोरो के चाचाजी
सुरेन्द्र शर्मा	दाये-बाये
अमृतलाल भारद्वाज	चौपड की दुकानदारी
बृजमोहन शर्मा	जुए की कमाई
देवीदत्त शर्मा	आत्मा की गवाही
गोवर्धन तिवारी	अब जाने वाले है
गोविन्द नारायण	जयपुर का जॉली
डॉ० के. सी. कोटिया	हथियारो का कारीगर
डॉ० एम. आर. मेहता	सिफारिश की सौगन्ध
एम. बी. जैन	छोडूँगा नही
के एल गोयल	अपने बलबूते
जामिन हुसैन	प्रिया के बैन
आर. सी. गुप्ता	बीकानेरी रसगुल्ले
एस. के. कालडा	ओल्ड स्टॉक
राजमल भण्डारी	अनारी
रमेश गोयल	पानी की मार

व्यवसायी

कान्तीलाल पोद्दार	छापे का डर
शंकर गुप्ता	मीसा क्या ?
मन्नालाल सुराणा	व्यापार मे सब चलता है
उमरावमल चोरड़िया	एवर ग्रीन
आलोक जैन	सरकारी बकाया
हरिशचन्द्र गोलछा	पिताजी नगर सेठ थे
मेहताबचन्द गोलछा	दिवालिया सेठ
के. एल. जैन	सब-कुछ समर्पित
ए. सी. मुकर्जी	कागज की करामात
किशन रूंगटा	हर बार छक्का नही
रघुसिन्हा	बिड़ला का सूबेदार
जगन्नाथ जाजू	मोहन की माया
दीनानाथ निगम	आउट डेटेड

कोमलचन्द पाटनी	चला नही जाता
कुशलचन्द सुराणा	रत्न भण्डार
लाभचन्द लोढा	काम-काजी
चन्दालाल जैन	अनाज की कमाई
सावरमल सर्राफ	आव-ताव
लालभाई पटेल	हम तुम्हारे हैं
मोतीचन्द डागा	अब जिम्मेदार हूँ
अजीमबक्स कोकूमिया	घोडी बिदक गई
भुन्नीलाल जसोरिया	औरो के लिए कमा रहा हू
एम डी बग	होली की चग
बी. बी मित्तल	मुकदमा हार गये
रामदास सौखिया	भोले भण्डारी
कु जलाल	तुरही
रामेश्वरदास अग्रवाल	धोती का कमाल
राधागोविन्द तालूका	पैसे का हलुवा
रामरतन अग्रवाल	अनोखी चाल

सामाजिक व्यक्तित्व

विश्वम्भर मोदी	नि शुल्क सेवा
रामनाथ सिंघल	चमचो का व्यापारी
महावीर साधी	फोटो खिचालू
नरेन्द्र रस्तौगी	पैसे का रोगी
ज्ञानचन्द पाटनी	मैंने भी कहा था
भँवरसिंह बारैठ	साथ तुम्हारे
चाँदमल जैन	प्यादे की शै
चिरंजीत बग्गा	नौटकी
वेदप्रकाश मित्तल	धडकन कहती है
सीताशरण पाण्डेय	नया मुल्ला
नवीन डागी	नया व्यापारी
अमरजीतसिंह सोनी ज्योतिपाल सोनी	व्यापार के सारस
वल्लभ चितलागिया	जर का जाधिया
सम्पतलाल समधानी	पत्थर+पैसा
बंकिमचन्द	सीख रहा हू
रमेश बाजरगान	खाली गुणगान
राजेन्द्रनाथ सिघल	शी इज सिम्पल
बी बी. सक्सेना	लेना - देना
के० जी० गुप्ता	तकाजगीर

विमल शर्मा	छोड गये
कर्णीसिंह रतनू	हॉस्पीटल का जुगनू
डा० टी० पी० शर्मा	आई कॉन्टेक्ट
सरदार उपकारसिंह	जयपुर की गुडिया बम्बई मे
कैलाश पाटनी	इम्पोर्टेड मनी
सत्यकृष्ण शर्मा	चौपड की कमाई
प्रकाशचन्द गोयनका	तेल का खेल
परमात्मा दयाल माथुर	अपनी-अपनी बीबी........
कृष्णमोहन गुप्ता	जब तुम ही ना रहे
प्रभुदयाल माथुर	नारी का = नाका
जी० पी० शर्मा	गपशप
एन० सी० गुप्ता	शैटलकॉक
राधेश्याम शर्मा	एजेन्सी की मौत
डा० एम० एस० शर्मा	बीमार की यारी
शम्भू श्रीमाली	सरकार की गलती
हरिदास डागा	सोया भाग जागा
श्यामसुन्दर गोयल	किराये की कोयल
रामगोपाल फतेहपुरिया	लालो के लाल
सुरेन्द्र अरोडा	एन्टी बाइटिक
रामनारायण	टीका नारायण
कैलाश घीया	दुकान के पिछवाडे
प्रेमनारायण गुप्ता	मुनीम सरकारी
राजेन्द्र रस्तोगी	कागज भोगी
किशोर साघी	चकोर
श्रीवल्लभ सोनी	हीरे की डाई
सतीशचन्द्र नावला	चलते फिरते
[illegible]	चम्पा या चमेली
[illegible]सिंह	सबकी ठेकेदारी
पी० के० [illegible]	सादगी का जहर
मदनलाल डागा	बिजनैस पार्टनर
एस० पी० शर्मा	अपने नही चलेगी
बी० पी० शर्मा	अभी आये है........
रघुवीरसिंह वर्मा	अन्ध बरैठा
मोहनलाल शर्मा	वेतन देना है
ज्योतिचन्द माथुर	क्रास के हस्ताक्षर
[illegible] } [illegible]	छोटे बाबू

अमरसिंह वर्मा	जनरल नालेज
अशोक माथुर	फुटबाल बन गया
रामेश्वरदयाल गुप्ता	अकाल का माल
जे. एन बहल	ब्यूटिफुल हॉस्ट
ओ. एन चड्ढा	जोधपुर की याद
एम. एल. गर्ग	कैश डिस्काउन्ट
देवदत्त गोगिया	जादूगर
जे० नागपाल	इस्तकबाल
मोहन राठी	मोटी लाठी
महेन्द्रसिंह नारग	अपनी दुकान का पियेंगे
विजय मित्तल	भाई की किताब
रामगोपाल अग्रवाल	पीतल की चमक
भँवर लुहाडिया	पीतल के भाव
मोहनलाल अग्रवाल	पराया माल
प्रेमचन्द	जख्मे जिगर
सुरेन्द्रसिंह गुप्ता	बामुलाहिजा
भूपेन्द्रसिंह	सीधा तुक्का
मनोहरलाल जैन	जो सुख चाहे
चिमनलाल	टूटी ढाल
गुरुबख्शसिंह	एकला चालोरे
सोभागमल जैन	तेरे बिना सब सूना
भरतमल गुप्ता	तर माल
कैलाशचन्द अग्रवाल	टेढी लकीर
श्रीनिवास तालूका	खानदानी
ताराचन्द जैन	लोटे का किराया
प्रेमचन्द जैन	आदर्श लेन-देन
हरनामसिंह	सरनाम
राजेन्द्र गोधा	घिस्सेवाज

बैकवर्ग

सत्यदेव	बुरे फँसे
ए सी चटर्जी	यस सर
वी पी मेनन	वेलडन
सोहनलाल चुग	जाने वाले
इ. डी. बैंजामिन	अच्छे कामो की सजा
पी सी जैन	फसा दिये
एल पी सिंह	नया व्यवसाय
[illegible] अग्रवाल	हजरते दाग

जी. एम. चौहान	खूब लडी....
जी. एम नायक	वी विल फाईट
एन. एम. दाधीच	नारदजी
एम. एल. गुप्ता	मुनीमजी
वी. पी. डोगरा	अकड निकल गई
के. जी के. मेनन	न लेने मे न देने मे
ओ. एन. भार्गव	रेगिस्तान मे
के सी डोडा	पॉलसन
एन. एल. गुलाटी	अच्छा जी
रामलाल खण्डेलवाल	बुढापे की लाज
एल. एन. भायल	मुरादाबादी
सुन्दरलाल शर्मा	अखाडची
एस. पी. बनर्जी	डंके की चोट पर
डी. सी. भसाली	शैतानो के बीच रजिया
जी सी. निभानी	नौटकी
महेश मिश्रा	बडो हुकुम
यू एम साघी	पपलू की दोस्ती
आर डी जुनेजा	आग लगा दूंगा
एन एम पाटनी	गलत साथ
बी डी. बोथरा	पान खिलाओ
एम के. खन्ना	दम-खम
भरतसिंह सोलंकी	हिसाब साफ है
आर ए दुसाद	जोड-बाकी
शमसुद्दीन	डेलीगेट हूं
दिलीप भाटिया	मस्तराम
एम आर. नानकानी	अफसोस कर रहा हू
आर पी गुप्ता	देख लूंगा
रामदेव मानसिंह	जीत हमारी है
ओ. पी चाणक्य	नया मुल्ला
प्रेमानन्द चतुर्वेदी	सिद्धान्त की बात
[illegible] भाटिया	मूंछो की ऊचाई
[illegible] [illegible]	पिंगपाग
[illegible] [illegible]	अग्रेजी आ गई
एम. एम पुरोहित	भोले बाबा

रग-कर्मी

एम वासुदेव	चल पडी दुकान
[illegible]	रग निष्ठा का सजायाफ्ता

सरताजनारायण माथुर	ब्लेक मेलर
हमीदुल्ला	शुतुरमुर्गी फारमूला
ज्ञान शिवपुरी	हरफन मौला
श्यामनारायण	म्यूजिक मास्टर
देवेन्द्र मलहोत्रा	ऊलजलूल
रमा पाण्डेय	मृग मरीचिका
नन्दलाल शर्मा	फिल्मी सपना
मदन शर्मा	उधार की ध्वनि
घनश्याम आचार्य	जी हुजूर
डॉ वीरेन्द्र कौशिक	शनीचर महाराज
डॉ. अल्काराव	पुरानी बोतल मे
पृथ्वीनाथ जुत्शी	खेला-खाया
श्रीमती मधु वासुदेव	राम मिलाई जोडी....
मीनाक्षी	सीमोन द बोउवा
द्वारकानाथ शैली	न घर का न घाट का (द्वार का)
बेनीप्रसाद शर्मा	एक्सप्लाइटेड
एच. पी. सक्सेना	एक्सप्लाइटर
प्रमोद भसीन	नया दुकानदार

और अन्त मे

सयोजक शरत मोदी	आपकी मर्जी पर

सावधान!

• क्या आपको ध्यान है कि कुछ असामाजिक तत्व शांतिपूर्ण सभा, जुलूस या प्रदर्शन के स्थान पर लूटपाट, तोड़ फोड़, आगजनी और दंगे फसाद की खोज में हैं?

ऐसी स्थिति में –

एक अच्छे नागरिक के रूप में यह हमारा पवित्र कर्त्तव्य है कि हम सजग रहें। कहीं हमसे, हमारे अपने किशोर बच्चों से, पड़ोसी से, हमारे नगरवासियों से – ऐसा कोई काम न हो जाय जो शान्ति व्यवस्था में बाधक हो, जो देश के हितों के विपरीत हो।

• राजस्थान सरकार द्वारा प्रसारित •